MSS No. २९२ Subject PHILOSOPHY

Name of MSS काविप्रिय टीका चन्द्रिका

Author सहज राम

Period ______ Folios 200

Script DEVANAGIRI Source Prithipal Singh

Missing Folios 1 - २; 198A, 199

12

292

LEAVE 196

8 x 4 1/2

2A

2A

नीको है अवतर आमें सो कवि हेउ ॥ ग्रंथकर्त्ता होउ अरु सुरह एक बांची है
तौ जहां बानी जू के वर्ण को जुगक हा जु गम इह अर्थ करिये ॥ पुनि ॥
॥ प्र ॥ सुवरन सों संबंध है मेरु है द्विपद माहिं अवतर है द्वि संबंध है अ
थ मेरु इह नाहि ॥१॥ उत्तर ॥ उधमां ही कों कहत हे धर्म का विरीत ॥
ने हलता कुं मिलात जैसें कुं मिलन लता प्रतीत ॥२॥ जे सेंवा नी कों क
हौं सुबरन कनक उदिवो अवधि होइ मेरु ही नाम ॥२॥ द्वितिय
भा ॥ कवित्त ॥ सु मुखसमोध न है कहे सितावानी जू के वरन को
जुग सो तुवरन बनाय कें ॥ यां को सुनि फल कन परमान सो उ
कवि होत है सुमेरु के समान तिह पाइ के ॥ केसो है सुमेर तां को क
कहित विसेषै पैकुरु षेत पर यां को अर्थ इह भाइ के कौ जरू मि

सुवरन
सुरह

की

२.

नसिवैग्र्यर्थजदेरा त ॥४॥ मूल ॥ वानीजू के वरनन जुगा सु वरनन कन प्रमा
न ॥ सुकव सुमुष कुरषेत पर होत सुमेर समान ॥५॥ टीका ॥ प्रसह
इहै प्रसन रहहै मकनवद तपरत कुरषेत ॥ तो तहां है कुरुषेत की
अधकाई रहहै ता ॥ सो कुरषेत्र सु...न किय कवि मुष कौ गुन धाम
के सेवानी वर्ण की अधिकाई है ठाम ॥ ऊलर ॥ वानीजू को वरनजु
गतिन कौ सुनै वषान ॥ सुवरनकन तें परकहाऊं जैमजिन कौ
नाम ॥ कनअधीन कुरुषेत ऊहर कष्पलके हहि माहि ॥ वरन
जहां तहां मुषनपर सुकवि सु अतिसरसाहि ॥८॥ वा ॥ सुकविसे
वो धऊनहे ॥ और सुमुषरहांसु जु अवदरहे तां को अर्थ सो अव
र मुषनि परि ऊकें हहु कौ प्राप्ति होत है ॥ कहां कि जाके मुष वा

औरषेकौअरयश्रकासविषेजापरसोकहातपश्रगिनिरसोयहाइकै
चिती ॥ र्थ ॥ वानीजूकेवणकोजुगकहवांनीसोईभयोअंकुरषेततां
वानीरूपीअंकुरषेतमेंसवरनरूपीकविपरिकेंकह्यो वानीजूकोंसु
मिरनकीयासोईतामेंपरिवोभयो ॥ यातेकविपरमानिकविमे
रातुल्यभयो ॥ समुझसंबोधनदैकह्यो ॥ कवित्त ॥ मूल ॥ सत्वसव
गुनकोकिसतपहीकीसत्तासुभसिद्धिकीप्रसिद्धिकैंसुबुधिहहि
मानीयै ॥ ज्ञानहीकीगरिमाकिमहिमाविवेककीकिदरस उरआ नहींकोदर
नियेपुन्यकोप्रकासवेदविद्याकोविलासकिधोंजसकोनिवासवे
सोदासजगजानीये ॥ मदनकदनसुतवदनरवनकिधोंविघनवि
नासनकीविधपहचानियें ॥ १० ॥ टीका ॥ दोहरा ॥ [illegible]

गनपतिजूके कवित्तमें रदन स्तुति है जानि ॥ संसय उपमा है इहां अरु सं
कार हु है मान ॥११॥ किधौं सहस्र संसय विषें अवर सेत रद आहि ॥ कहीं
सेत है उपमा सव तांके लीयें निवाह ॥ वार्ता ॥ सत्वगुन को सत्व है
कहा सार है किधौं सत्पञ्जु है सो चतो ताको सत्ता है विद्यमान ता है ॥ सि
द्धजु है तांकी प्रसिद्धि है प्रयटताई है सु बुद्धि की हद्धि है ॥ कहा बुधि
को पूने रूप है ॥ ज्ञान को गौरव है कि वडाई है विवेक को ॥ कि दरस
नहि तासु स्मृतिन को दरसन है ॥ सब शास्त्र एक रूप धरि के दरसन दे
हैं ॥ पुन्य को उजास है ॥ वेदविद्या को सुवरूप है ॥ किधौं विघन वि
नास की विध है विघन्याही सो हरकरत है ॥ ऐसे जानिये ॥ प्रथम
गनपति वर्णन कहि कसो गानी वर्णन सोर ॥ पुनि गनपति के

किधोंज सकोच है

कवित्तकोअभिप्रायकहहोइ॥१३॥उत्तर॥वानीवनेनहितप्रथमसीये
गणेशमनाय॥पुनमूलंगपआरंभहि तवरनेगनपतिराय॥पुनः
प्रश्न॥तहाप्रश्नजसस्वेतसांजसकोकह्योनिवास॥जसजहा
रहेसुसेतथलइहनिश्चयनप्रकास॥उहनसुनोआधेयकेरंग
हिहोतअधार॥ज्यौंगजसांमनसांमहेंगजसालानिरधार॥१६
तातेजसहीस्वेतहेंजसनिवासनहिस्वेत॥तोउहांकेसैवनेया कै
कोअर्थसचेत॥१७॥उत्तर॥जसकोघरकहिजसहीसोवन्यो
घरजुसोआहि॥ज्योंकंचनग्रहअस्मग्रहकहिनिप्रहिधियय
हचाहि॥१८॥पुनः॥प्रश्न॥फेरिप्रश्नगोहरदनकोंकसोंवरन
ग्रहरूप॥घरतोबिनग्रहपतिनहीहोतउसुकहोससरूप॥उ

नरदोहरा ॥ ताहा अर्थविधि येह जुहे वेदविद्याकही ॥ तिह बिला
सके गेह बन्यो सु जसही वस्तु करि ॥ २ ॰ ॥ मूल प्र चेटि पंचमी को
भयो कविप्रिया अवतार ॥ सोरह सैं अठावन फागुन सुदि बुध
वार ॥ इंद्रजीत वंस वणिन ॥ ब्रह्मादिक के विनय ते हरन सक
ल भुवभार ॥ सूरज वंस कह्यो प्रगट रामचंद्र अवतार ॥ २१
तिन के कुल कलिकाल रिपु कहि के सब रनधीर ॥ गहरवार
उपजात जु प्रगट भयो नृप वीर ॥ २२ ॥ करन नृप तिन के भ
ये धरनी धर्म प्रकास ॥ प्रगट करन तीरथ भये जग में जि
नि को नाम ॥ २३ ॥ जीत सवै जगती कीयो वारानसी निवास ॥
तिन के अरजुनपाल नृप भये महोनी ग्राम ॥ २४ ॥ गढकु

पे

5A

चौ

ठारतिनकेभयेराजासाहनपाल॥ सहजकरनतिनकेभएकहिके
सवरिपुकाल॥२६॥राजानौनिगदेभयेतिनकेपूरनराज॥नौनि
गदेकेसुतभयेप्रथुजैसोप्रथीराज॥२७॥रामसिंहराजाभएतिनके
सूरसमान॥राजचंदतिनकेभयेराजाचंद्रसमान॥२८॥राजामे
दनिमलभयेतिनकेकेसवदास॥अरिमदमर्दनमेदिनीकीनेध
मिप्रनाम॥२९॥राजाअर्जुनहुभएतिनकेअर्जुनरूप॥श्रीनाथ
प नकोसषाकहेसकलभूअभूप॥३०॥माहादानषोडसदयेजीती
जगदिसचार॥चारोवेदअठारहोसुनेपुरानविचार॥३१॥रिपु
षंडनतिनकेभयेराजाश्रीमलषान॥जसहजूरेसनसुरेकहेगो ज
नतसकलजहान॥३२॥नृपप्रतापरुद्रसुभयेतिनकेनुरस्म

क वि
६
6
भारथखंमे

रुद्र ॥ दयादानको कल्पतरु गुननिधसीलसमुद्र ॥ २३ ॥ नगरश्रोड
छै जिनिरच्यो जगमेजा गुत्तकित्ति ॥ हमस्मदत्तमिश्राहि दई जिनपु
रानन की हत्ति ॥ २४ ॥ भरथखंडमंडलमये तिनके भारथचंद ॥ दे
सरसातलजात जिहिं फेरा ज्यों हरिचंद ॥ २५ ॥ सेरसाहश्रसलेमके
उरसालीसमसेर ॥ ऐक चतुर्भुज हीन पोत्तां को तिरति हि वेर ॥ २६
उपजेन पायो पुत्र तिह गयो सुप्रभु परलोक ॥ सोदर मधुकरसाहि
जवस्रूप मयो भुवलोक ॥ २७ ॥ जिनके राजनरसा वसे के सव कुसल ब्रि
सान ॥ सिंधुदिसानेह वारहूं पार बजाय निसान ॥ २८ ॥ जिनपर चढि
आऐजे रिपु केसव गये ते हारि ॥ जिनपर चढि आपुन गये आये ति
नेसिहार ॥ २९ ॥ सवर साहि अकवर अवनि जीति लई दिस चारि ॥

जमीनमे

६

मधुकरसाहिनरेसगढतिनकेलीनेमारि ॥४०॥ बनगनेसुलतानकों
7A राजारावनवार ॥ हांसोंमधुकरसाहिसों आपुनसाहमुराद ॥४१॥
सांधोस्वारथसाथहीपरमारथसोंनेह ॥ गयोसुप्रभुवैकुंठमगआ
समरंधुतजिदेह ॥४२॥ तिनकेहलहुरामसुततलहुरेहोरिलरा
6A ज ॥ रिपुखंडनकुलमंडनेपुरनबहुमिप्रभाव ॥४२॥ रतनसूरोदल
सिंघपुनिरतनसेनसुनिईस ॥ बांधोआपजलालदीवांनोआ
केसीस ॥४४॥ इंद्रजीतरनजीतपुनिसत्रुजीतबलबीर ॥ बीरसि
प्र हभ्यौसिंघपुनिहरिसिंहभ्योरनधीर ॥४५॥ मधुकरसाहन
रेसकेरतनेभयेकुमार ॥ रामसाहिराजाभयेतिनमेंवधिअ
कार ॥४६॥ शेरवीरूरजहांतहांकेसवदेसविदेस ॥ सवको

क वि

छ ६

भारथखंमे

रुद्र ॥ दयादानको कल्पतरु गुननिधसीलसमुद्र ॥ २३ ॥ नगरओड
छैजिनिरच्यो जगमेजागृत्तकित्ति ॥ हमदत्तमिश्रहि दईजिनपु
राननकीहति ॥ २४ ॥ भरथखंडमंडलभयेतिनकेभारथबंद ॥ दे
सरसातलजात्तजिहिंफेरयाज्योंहरिचंद ॥ २५ ॥ सेरसाहअसलेमके
ऊरसालीसमसेर ॥ ऐकचतुर्भुजहीनपात्ताकोतिरतिहिवेर ॥ २६ ॥
उपजनपायोपुत्रतिहगयोप्रभुपरलोक ॥ सोदरमधुकुरसाहि
तवभूपमयोभुवलोक ॥ २७ ॥ जिनकेरानेरसावसेके सवकुसलद्वि
सान ॥ सिंधुदिमानेहवारहंपारबजायनिसान ॥ २८ ॥ जिनपरचढि
आएजे रिपुकेसवगयेत्तेहारि ॥ जिनपरचढिआपुनगयेआयेति
नेसिंहार ॥ २९ ॥ सवरसाहिअकवरअवनेजीतिलईदिसचारि ॥

जमीनमे

६

मधुकरसाहिनरेसगढतिनकेलीनेमारि ॥४०॥ वैनगनेसुलतानको
7A राजारावनवार ॥ हास्योमधुकरसाहिसोंआपुनसाहमुराद ॥४१॥
सांध्योस्वारथसाथहीपरमारथसोंनेह ॥ गयोसुप्रभुवैकुंठमगब्र
ह्मरंध्रतजिदेह ॥४२॥ तिनकेहलहुरामसुतलहुरेहोरिलरा
6A ऊ ॥ रिपुखंडनकुलमंडनेपूरनपुहुमिप्रभाव ॥४२॥ वैनसूरोदल
सिंघपुनिरतनसेनसुनिईस ॥ वांध्योआपजलालदीवांनोजा
केसीस ॥४४॥ इंद्रजीतरनजीतपुनिसत्रुजीतवलवीर ॥ विरसि
प्र हम्वौसिंघपुनिहरिसिंहम्पोंरनधीर ॥४५॥ मधुकरसाहन
रेसकेइतनेभयेकुमार ॥ रामसाहिराजाभयेतिनमेवधिअ
कार ॥४६॥ येरवारहरजहांतहांकेसवदेसविदेस ॥ सवको

क वि
प्रि ८

7

उडहहीकहे जीत्योरामनरेस॥४७॥रामसाहसोसूरता धरमन
पूजेंग्रान॥जाहिसराहतसविदाअकवरसोसुलतांन॥४८॥क
बरा बर रजोरेठढेजहांग्राठादिसकेईस॥ताहितहांवेठकदईअकव
रसेअवनीस॥४९॥जोकेदरमनकोगयेंउचेरदेवकिवार॥अप
पजीदीपतीदीपकीदेषतइकहींवार॥५०॥तारजाकेराजउह
राजतजगतीमांहि॥राजारानांराउसवसेवतजोकीछाह॥
॥५१॥तिनकेसुतग्यारहभयेजेठेसाहसंग्राम॥दत्तेनदसने चारू
राजसेंजिनजीत्योसंग्राम॥५२॥मरदषांषंडमंडनभयेतिनके
२ भारथसमांहि॥भपमभगीरषपारषहिउनमांनतसवताहि॥
५३॥सुततावरनृपरांमकेयच्चपसवपरवार॥तदपसिरइन्द्र

जीतकेराजलैजकोभार ॥५४॥ कल्पवृक्षसोदानदिनसागरसे
गंभीर ॥ केसवसूरोसूरमेअर्जुनसेरनधीर ॥५५॥ ताहिकछोवा
कमलसोगदकीनोंनृपराम ॥ विधिज्योंसाधतवेठलोंहांकेसवका
मअरुवांम ॥ करोअखारेराजकोसासनसवसंगीत ॥ ताकोदेषत
इंद्रज्योंइंद्रजीतरनजीत ॥५६॥ टीका ॥ रनजीतसहूरहवा
तीमेकैसेतांहारसकोप्रसूताहे ॥ किकोउरीयुपारसकोंवाधन
सकेअैसोहैप्रवल ॥ वालवहिक्रमवालसवरूपसीलगुनह
षि ॥ जदपिभस्योअवरोधषटपात्तुरपरमप्रविहि ॥५७॥ टीका
अवरोधमहलमैअंतर ॥ दोहरा ॥ राइप्रवीन ॥१॥ प्रवीनअ
लिनवरंगमराय ॥२॥ सुवेस ॥ अतवचित्रनेना ॥३॥ मिपुनलोचन

क. वि.
प्रि ८

रागकीतांनेजो
है ताको सागर
है तांनतरंग

8

ललितसुदेस ॥ ८९ ॥ सोहतसागर रागकी तांनेजो नतरंग ॥ ४ ॥ रंग
राय ॥ ५ ॥ रंगवलितगतिरंगमरतिअंगअंग ॥ ९० ॥ सुगम ॥ तं
त्रीतुंबरसारिकासमसुरनसोलीन ॥ देवसभासोदेखियेराइप्रवी
नप्रवीन ॥ टी ॥ कादोहरा ॥ तांनतंतुविकोगोट स्वरइनमेंजिहचि
तलीन ॥ नारदतुंबरअपसरासुरसुरसभाप्रवीन ॥ ९२ ॥ सु
तत्यारायप्रवीनजुतसुरतनरससुरतनरंगगेह ॥ इंद्रजीततासोंवंधे
केसवदाससनेह ॥ ९३ ॥ टी ॥ तत्याकेसीहैसुनौरायप्रवीनजु
स्याम ॥ तेजिहिसुधिसोजुतसदाअरुसुरतनरु जिहिधाम ॥ वा
तत्याकेसीहैरायप्रवीनजुस्यामतेजुतहैसुरतजांकी ॥ सोसुर
तिसुधिकोंअर्थरकहियेअरुकल्पहच्छहैगेहमेंजाके ॥ दो हा

8A

औरइंद्रकोंजीततहरिवंधरहतजिहिनेहहै ॥ रायप्रवीनसोंपच्छ
अवश्यंयुसुनोविधिएह ॥ ६५ ॥ सत्यभाखिंनीहेअवरइनकरि
जुतिजिहिंगेह ॥ सुरतऔरसुरतरुविवुधइंद्रजीततनपनेह
॥ ६६ ॥ वा ॥ सत्याकहांसत्यभाखनीजुतहेइनवात ॥ निसोगे
हजाकोसुरतसंभोगकोहियेअरु गायवेकेस्वरतेंहूकहनि
करिमहमेवागहे ॥ सरद्धो ॥ नरीकिंनरीआसुरीसुरी
रहतसिरनाय ॥ नवरसनवधाभक्तिसोंजोजतिनवरंगराय
॥ ६७ ॥ सुगम ॥ प्रैनवरंजहांकह्योतहांभांतिरसहुआया फेर
नवधाभक्तिकेसेवने ॥ ... ॥ नवधाभक्तिकेसोकरेहैजामेन
वीनरसउपजें रच्छुनतोकिंनरीकेसिरनायेवड्मेंआए ॥

श्री

गतिनवीनहैरंग
ना चवेकी जामे
१

मूल दोहरा॥ हाव भाव संभाव नादी लौंस मसुखदाय॥ पियमनदेत
ऊ साय गतिनवरंगनवरंगराय॥६८॥ मेरौंजुतमोभीसजु तसुरतवं
गिनीलखि॥ चंद्रकलासीदेखियेनेनवचित्रदेखि॥६९॥ टीका मेरी
सिवगौरीसिवायंगकलाविधुपूत॥ रागसहितनंदिसुरनिकीन
यनविचित्रसुदत॥७०॥ मूल॥ नार रिनांगरेरंग कीसागर तांनत
रंग॥ पतिपूरनससिदरसदिनवाहततांनततरंग॥७१॥ टीका वा या
कीजानवावाकीतरंगयाकेपतिकौंदेषकेवहेंवाकेसुतकोंदेखि
केंवहे॥ प्रश्न॥ तियपतिलषिस्रौरसागरीमसिसुतलखिहर
षात॥ पतिसुतकेहरतंतसोंऊपमाविषमदिषात॥७२॥ उत्तर
उत्तरपतिकोस्रथेइहलखतिप्रतिबिंबस्रापु॥ तववयांकीतांनेव

निमार प्रारि

चाडुरजो
हे तांनारंग
सारागकीसा
गेर है

हैवहलविसहितिपरतापु ॥ ७३ ॥ नैनवैंरतिहैंनसमुनैंनवचित्रा
म ॥ जौनहीलपतिमेंनमनसदाकरतविश्राम ॥ ७४ ॥ सुगम ॥ नो
नैतानतरंगकीतनुतनुवेधतप्रान ॥ केलाकुसमसरसरन
मरत सें जो मा
कीश्रुतिश्रयानतननैनोंन ॥ ७५ टीका ॥ तनुतनुतनकतनकों
प्रानननकोंवेधत ॥ दोहरा ॥ रंगराधकरश्रृंगरु हीसकलगुननि
कीमुर ॥ लागतमुहमदंगमुखसवदरहतभरिपूरि ॥ ७६ ॥ ध सग
मा ॥ रंगरायकरमुरजमुखरंगमरुरतिपदचारु ॥ मलौपछ्योहि
साथहीसवसंगीतविचारु ॥ ७७ ॥ र श्रृंगजितेसंगीतकेगामेगु
नीश्रुनंत ॥ रंगमुरतिश्रृंगमुश्रृंगप्रतिराजतमुरतवंत ॥ ७८ ॥ सु
गम ॥ बा वतगावतपढत सवसवेवजावतवीन ॥ तिनमेंक
ना

गीतनबा
हैहैसील
है भाव
पतिजो
हैकाम
हैवसा
निरावकमन
मे

वाजरी

परजोसरहैवीन
केसमरनवारे ति
नकेमनकोडरेहे

10

रायप्रवीनप्रवीनसोंपरवीनन

रतकवित्तइकरायप्रवीनप्रवीन ॥ कोसुख ॥ अपरवीनकेसोकहापरबी
ननमनडरे ॥ ८० ॥ सुगम ॥ रत्नाकरलालितसदापरमानंदहिलीन ॥ अमलकमलकमनीयकररमाकिराइप्रवीन ॥ अर्थ ॥ दोहरा ॥ स
मुदरलडैंतीलीनहरिकरहिकंजश्रीयअर्थ ॥ सुंदरग्रंथसंगीत
सोंरायप्रवीनसमर्थ ॥ ८२ ॥ वा ॥ रत्नकैसंगीतमंथहैताकवि
सुंदरलगतिहै ॥ प्रदो ॥ इहाप्रथमकोऊकरेंअनुचितवर्नन
मानि ॥ केरोंउपमादेवीनकीदईपातुरहजानि ॥ ८३ ॥ उतर ॥ ता
हंअर्थरचनांअवरकहतअदोषवषानि ॥ उपमापातुरके
दईरमाकंजकीआनि ॥ ८४ ॥ अदो ॥ अर्था ॥ दो ॥ अमलकम
लकररमाकेकंजकिरायप्रवीन ॥ सुवहकंजजिहिंलसिंत लिअतिहैं

सोभा

10A

हो सिंधु में सरतें लीन ॥ ८५ ॥ औनितपरं मानिस दिवस आनंद
सों भ्रिलीन ॥ निज करकें नअरप प्रथम कह्यो सु रायप्रवीन ॥ ८६
॥ बा ॥ नंद हि लीन आनंद मों लयों ॥ मूलदोहा ॥ रायप्रवीनकि — हे अंग मित्र
सारदा सु चिरु चिरंजीतं अंग ॥ बीना पुस्तक धरिनी राजहंस
सुतसंग ॥ ८७ ॥ अर्थ ॥ सुचि सिंगार रस अंग तिहि बीन ग्रंथ व
है ज्ञान ॥ राजहंस जुत इंद्र जीत सारद सुगम बखान ॥ अदे
अर्थ ॥ बानी रायप्रवीन की सुचि सिंगार मय सोय ॥ अरु
जिह की है धारनी बीनापुस्तक जोय ॥ ८८ ॥ अर्थ कि जो कवि
ता कहे वहे सुवीनां मांहि ॥ वहे कहे पुनग्रंथ में संप्रदाय वि
नाहि ॥ ८९ ॥ वा ॥ ऐसी रायप्रवीन की सारदा उहं अर्थ ॥ स — बानी

॥

प

दो० हबभकाहिनीश्रृंगऊरवासुकलसतप्रवीन ॥ सिवसंगमोहेम
र्वदासिवाकिरायप्रवीन ॥ ८० ऊर मेवासुकेश्रृंगगऊकलसतसिवा
विधिस्वत ॥ धर्मश्रृंगदाइनिऊरहिपुष्पहारतियपत ॥ ८१ ॥ अर्थ दो
य ॥ अर्थ ईस धर्मश्रृंगकोंवहतिजिहिऊरतेंहारलसात ॥ ऐसेंसंगुनजु
तसिवाकिंरायप्रवीनविख्यात ॥ ८२ ॥ वा ॥ सिवाकिंकानेकनी ॥ म्ह
दो० सवताजूकविताद‌ईताकोपरमप्रकास ॥ ताकेकाजकवि
प्रियाकीनीकेसवदास ८४ ॥ टीका ॥ सविताजूनेंकविताशि
नीप्रवीनरायकोंताकोपरमप्रकासहे ॥ वहकवितामेंवहुतप्रवी
नहीं ॥ जानेंकाव्यकेभेदनकोंआनंदपायो ॥ इति श्रीनाजर सहू
रामविरचितायां कविप्रियायां टीकायां हजरामचंद्रकायां जंब

11A

वर्णि नाम प्रथम का॰ स॰:॥१ अथ कविवंस वर्ननं ॥ दो॰
रा॰ ब्रह्माजू के चित्त तें प्रघट भए सनकादि ॥ उपजे तिनके
चित्त तें प्रगट सनाढ्य जाति ॥५॥ परसराम सम्म गुनें दत्त व तिनके
पाय पखारि ॥ द ऐव हत रग्गा मतत कजति मधि प्रविचारि ॥२॥ जग
पावन वैकुंठपति रामचंद्र इह नाम ॥ मथुरा मंडल मे दऐति
नेसा तासे ग्राम ॥३॥ सोम वंस जदकुल ॥ कलश्री मै स्त्रुनर्पलन
रेस ॥ फेरि दऐक लिका लपुरु तें ही तिन हि स्देस ॥४॥ कुंभैवार जात
उ देस कुल प्रगटे तिनके वंस ॥ तिनके देवानंद सुत प्रघटे कुल
अवतंस ॥५॥ तिनके सुत जगदेव जगग्या पै पृथ्वीराज ॥ तिनके
दिनकर सुकुल सुत प्रगटे पंडित राज ॥६॥ दिल्लीपति अलं ला

कि वि
पि १२

12

वदीकीमीहरूपाअपार ॥ तीरथगयासमेतजिनेअकरकोरेवहूवार
॥ ७ ॥ गयागदाधरसुतभएतिनकेआनंदकंदजयानंदतिनकेभ
ऐविद्याजुतजगवंद ॥ ८ ॥ भएत्रिविक्रममिश्रतवतिनकेपंडित
राय ॥ गोपांचलगढदुर्गपतिजिनकेपूजेपाय ॥ ९ ॥ भावसुम
तजिनकेभएतिनकेबुद्धिअपार ॥ भएसिरोतमिमिश्रतव[illegible]
टदरसनअवतार ॥ १० ॥ मानसिंहसोंरोसकरिजिनजीतीदि
सचारि ॥ ग्रामबीसतिनकोदएरानापाइपषारि ॥ ११ ॥ तिनके
पुत्रप्रसिधजगकीनेहरिहरिनाथ ॥ तोंवरप[illegible]तिनजिओम
सोमसलिनओडोहाथ ॥ १२ ॥ पुत्रभएहरिनाथकेकमलदनसुभ
वेष ॥ समासाहिसंग्रामकीजीतीगहीअसेष ॥ १३ ॥ जिनके

शिवदे

12A हतिपुरानकीदीनीराजारुद्र॥ तिनकेकोंसीनाथसुतसोभे
वुद्धिसमुद्र॥१३॥जिकोंमधुकरिसाहिनृपवहुतकरेसोसनमा
१३त
न॥तिनकेसुतवलभद्रवुधप्रघटेवुधनिधान॥१४॥वालकतें
मधुसाहनृपजिनपेंनुन्योपुरान॥तिनकेसोदरद्वैभयेकेस
वदासकल्यान॥१६॥भाषाबोलिनजानहीजिनकेकुलकोदा
स॥भाषाकविभोमंदमतितिहिकुलकेसवदास॥१७॥इंद्रजी
ततासोंकह्योमागनमधप्रयाग॥मांग्योसवदिनएककेसोंकी
जेकृपासमाग॥१८॥योहीकह्योकिवीरवरमांगजुमनमेंहो
इ॥मांग्योतुवदरवारमेंमोहिनरोकेकोइ॥१९॥गुरुकरमा
न्योइंद्रजीततन्नमनकृपाविचार॥ग्रामदएइकईसतवताकों

वि॰
१३
13

पायपधारि ॥ २० ॥ इंद्रजीतकेहेतपुनिराजारामसुजान ॥ मानै
मंत्रीमित्रकेंकेसवदासप्रमान ॥ २१ ॥ कविवर्ननसुगमहे ॥ इ
नाम सहजरा विर तोया विप्र टीका सह
स इका कवि सव नेना द्विती प्रकास ॥ २ ॥ दो
समझैवालावालकनिवरनैपंथअगाध ॥ कविप्रियाकेकेसवे
सोछमियोकविअपराध ॥ १ ॥ टी प्र दो रा ॥ इहाप्रस्न
विकहयोछमियहकविअपराध सुवहकोनअपरधजि
मावहतविधसाध ऊ र जानेन्नियमिसुअग्याजिहियहै
पनसुअगाध ऐतेपैकहिवेलग्याघसुतुरहअपराध
स दो अलंकारकवितनकेसुनिसुनिविवधविचारि

न

वि [illegible] हवकरीकविताकोसिंगार ॥ सु ॥ मा ॥ सगुनपदारथअर्थ
जु [illegible] नमयसुभसाज ॥ कंठमालज्योंकविप्रियाकंठकरोक
वि [illegible] कंठ ॥ मा ॥ लपद अर्थ ॥ सहितसूत्रमनिअर्थजुताकहध
[illegible] अमोल ॥ सु [illegible] ई सुभलरगनेतकंठमालसुअतोल
[illegible] ॥ कवि [illegible] हितकाव्यगुनपदअर्थपुनिलतविं
[illegible] अर्थ ॥ सु [illegible] भगपानगनकविप्रियाजुसमर्थ
[illegible] माधुर्य [illegible] कअरुअर्थहेअर्थजुतकाहावाच्य
[illegible] विंग [illegible] ॥ चरणधरतचिंताकरतनीदनभ
[illegible] सुवर [illegible] तफिरैकविविभचारीचोर ॥ दो ॥ रा
[illegible] नदे [illegible] कविताबनिताभित्र ॥ बुंदकहालाभ

या

वायपधारि ॥२०॥ इंद्रजीतकेहेतप्रविराजारामस्जान ॥ मानैमों
मेत्रीमित्रकेंकेसवदासप्रमान ॥२१॥ कविवर्ननस्गमहे ॥ इति
नाका सहजरा विर तोंयो विप्रि टीका सह रा
म इका कवि सव नेना द्वितीः प्रकाम ॥२॥ दोहरा ॥
समसैवालावालकनिवरनैपर्पैअगाध ॥ कविप्रियाकेसवक
हीछमियोकविअपराध ॥१॥ टीका प्रकहदोहरा ॥ इहाप्रसंइहक
विकह्योछमियहकहैअपराध सुवहकोंनअपर्रधजिहिछ
मावहतविघसाध ॥ ऊ॥ र॥ जानेत्रियमिसुअग्यजिहियहकिक
घनसुअगाध ॥ ऐतेपेकहिवेंलग्यावेप्रतुइहअपराध ॥२॥
स॥ दो॥ अलंकारकवितोंकेसुनिसुनिविवधविचारि ॥ के

13A

विप्रियाकेसबकरीकविताकोसिंगार ॥ सुगम ॥ सगुनपदारथअर्थ
जुतसुमरनमयसुभसाज ॥ कंठमालज्यौंकविप्रियाकंठकरोक
विराज ॥ कंठमाल पद अर्थ ॥ सहितसूत्रमनिअर्थजुतकहधु
नजुतजुअमोल ॥ सरगमईसुभलरगनैतकंठमालसुअतोल
॥ द अर्थ ॥ कवि प्रिय पत्र ॥ सहितकाव्यगुनपदअर्थपुनिललितबि
गजुतअर्थ ॥ सुस्वरसुभग्यानगनकेवप्रियाजुसम ध्व
॥ ७ ॥ गुनमाधुर्यओजादिकेअरुअर्थहेंअर्थजुतकाहावाच्य
र्थकहेंकेरिव्यंग्यार्थकहे ॥ चरणधरतचिंताकरतनींदनभ
वतसोर ॥ सुवरनकोढूंढतफिरैंकविविभचारीचोर ॥ दो० ॥ रा
जाजतरंचनदोषजुतकवितावनितामित्र ॥ बुंदकहालाम

या

क वि
प्रि २८
14

कोमलताकम
लकीउपमा
कुचाकोकिसी
कवनेनहीक
कुचाकोता
कठोरवरनन
है कोमलनही

रतनहीनगनाहटअपवित्र ॥८॥ विप्रननेगीकीजईमूढनकीजैमि
त्र ॥ प्रभुनकृतघ्नीसेइयेदूषनसहितकवित्त ॥९॥ कवितदोषव
र्नन ॥ अंधबधिरअरुपंगुतजिनगनमृतकमतिशुद्ध ॥ अंधवि
रोधीपंथकोबधिरसुसब्दविरुद्ध ॥१०॥ छंदविरोधीपंगुगनिनग
नजुभूषनहीनमृतककहावैअर्थबिनकेसवसुनहुप्र
बीन ॥११॥ पंथविरोधीअंधवर्नन ॥ कोमलकंजसेफूलरहेकुच
देषतहीपतिचंदविमोहै ॥ बानरसेचलचारुविलोचनकोरे
रचेरुचरोचनकोहै माषनसोमनघुरोअधरामृतन केस
वकोउपमाकविटोहै ॥ ठाढीहैकामिनिदामिनिसीम्रगभा
मिनिसीगजगामनिसोहै ॥१२॥ सब्दविरोधीबधिरवर्नन ॥

प्रथमसिद्धसिरोमनिकाकहिकैफेरसाधकनारहकीअसुप्रसिंगारजनैरोनकथितहै
अरुश्रीमोमध्नतएत्रकोनामअप्रसिधहैकामकोअप्रसिंधहै ॥

14A

सिद्धिसिरोमनिसेकरस्राटिसंचारतसाधसमरुहमरीहै ॥ सुंद
रसरतीश्रत्रममतकीजोविवरीकमेंछारकरीहै ॥ सुमंविरू
पंविलोचनसोंमतिकेसवदासकीध्यानधरीहै ॥ वंदतदेवअ
देवसबमुनैगोतंसुतताअरधंगधरीहै ॥ २३ ॥ सुगम ॥ जोल
ललरहैनज्योकनिकतुलातिलेआध ॥ त्यौंहीछंदोभंगको
सहिनसकतसमतिसाध ॥ २४ ॥ छंद दोधी पगुवर्नन ॥ धीर
जमोचनलोचनलोलविलोकिकेलोकिकीलीकतिछूटी ॥
फूटिगएश्रुतिग्यानकेकेसवआंखिअनेकविवेककीफूटी ॥ छोडि
दिर्दईसरितासरिकोममनोरथकोरथकीगतिलूटी ॥ त्यौंन
करैकरतारइकबारकजैतोचितयोउहिवारबधूटी ॥ २५ ॥

परवतनअ प्रसिद्ध

करावर

ऐविशेषनन काहीये

वि० २५

15

वा ॥ उहां चतुर्थी तुकमें वरन अरथ कहे या तें पंगु है ॥ अन्य र रम
ले का हीन ॥ जोर ज नीट कटोर कपोलनि जोरि रहे कर त्यों न
रहोंगी ॥ पान खवाय सुधार सप्पाय के पायन गहे तें हो न गहोंगी ॥ केस
वचक सवे सहि हों मुख चूमि कलेउ रहहो न महोंगी ॥ के मुख कंबु व
न देफिर मोहि के आपनी धाय सो जाय कहोंगी ॥ १८ ॥ ग्रंथ ही
नम रकव नं ॥ कील कमाल कराल कलाल निसा
लविसालनि चाल चली है ॥ हाल विहाल नेताल न माल प्रवाल
कवालक लाल लली है ॥ लोल विलोल कपोल अमोल कचोल
कगोल कमोल कली है ॥ वोलनि चोल कपोलनि टोलनि गोल
किटोल गलोल गली है ॥ १८ ॥ वा ॥ यह अर्थ हीन है या तें मन

से

15A

कहियत है॥ उदाहरन नहीं याको प्रयोजन है॥ और कछु नाहीं औ
साऊ न करीये॥ अथ दस दोष वरनं॥ अगन॥ १ नकी जे हीनरस
॥ २॥ श्रुरु के सव जतिभंग॥ ३॥ व्यर्थ॥ ४॥ अपारथ॥ ५॥ हीनक्रम॥ ६
उनकों तजे जो प्रसंग॥ ७॥ वर्ण प्रयोग गन कनै कर॥ ८॥ लु नहु मक
लकविराज॥ सो वे अर्थ पुनिरुक्ति के॥ ९॥ छंड हु हसगरे साज
॥ १९॥ हे सविरोध॥ ९॥ नवरणिये कालविहो॥ १०॥ छिनिहारि॥ लो
कन्याय॥ ११॥ आगमनके॥ १२॥ तजे विरोध विचारि॥ २०॥ सुग
॥ गना॥ नव॥ नं॥ के सव गन सुभ सर्वदा असुभ अगन उर आ
नि॥ चारि वा॥ रि विधि चारु मतिगन और अगन वखानि॥
॥ २१॥ मगं नंन गंन और भगन मंनि वगंन सदा सुभ जानि॥

सात

धातिद

वि
१६
16

जगनं रगनं अरु सगनं पुनि तगनं नहि असु भ वषानि ॥ २२ ॥ मगन
अगुरु जु तं अंये लघु कै सवनं गनन प्रमान ॥ भगनं आदि गुरु अं-
दि लघु यगनं न वषानि सु जान ॥ २३ ॥ जगनं मधि गुरु जा
नि ये रगनं मध लघु होय ॥ सगनं अंत गुरु अंत लघु तगन
कहित सवि कोय ॥ २४ ॥ स्रग मगन अथ गन नागन वेव गन वनेन ॥
मही देवता मगन कों नाक नगन कों देषि ॥ जलेजि यजान
ह यगन कों चंद भगन कों लेषि ॥ २५ ॥ सरजं जान हु जगन
कों रगन निसिधी मये जानि ॥ काल समुझि ये सगन कों तगन नभ्र
कों सव षानि ॥ २६ ॥ टी प्र मगन नगन भगन यगन नरह
कम कहेउ सों सोय ॥ ईहा मगन मा छेय नगन कहेउ ही न क्रम

16A होय ॥ २७ ॥ अथ रा ॥ ऐकसब्द के रूप क्रम ऐक भाव क्रम जा
नि ॥ जैसै हृदावन लष्यो मथुरा लषि इहि वांनि ॥ २८ ॥ तो म
थुरा पै छै कही लषी प्रथम इह अर्थ ॥ भाव अर्थ मथुरा दर
स सम जो प्रथम समर्थ ॥ २९ ॥ सोरठा ॥ तो ह्यां इह विधि अ
र्थ चंद्र भगन कौं लेषि कै ॥ नव तुम बुधि समर्थ जलजियजा
नहु यगन कौ ॥ ३० ॥ वार्ता ॥ जो इह्यां भावार्थ मे भगन पहिले में ज्यो ॥ स
जलजियजानहु यगन कौ चंद भगन कौं लेषि ॥ ३१ ॥ अर्थ चंद भ
गन कौं लेषि कै जानहु ॥ गना नजा बबनै मगन नगन कैं
मी नगन यगन भगन भनि दास उदासीन जन जानीयें र सरि
प के सब दास ॥ ३१ ॥ रूग गना ॥ नफ ॥ फल ॥ र्न ने ॥ भूमि भ मगन

यगन रगन जगन

सिसुषदेइ नीरनितआनंदकारी ॥ आगिअंगदिनदहैसुरस
षसोषैभारी ॥ केसवअफलअकासकालकिलदेसउदासै ॥ मं
गलचंदअनेकनावहुबुधप्रगासै ॥ इहविधिकवित्तसवजानि
येकरताअरुजाकोंकरै ॥ जियैप्रबंधसबदेवगनसदासुभा
सुभफलफरें ॥ २२ ॥ टीका प्र ॥ ईहांनक्रमनिजग्रंथकोंओर
क्रमनहिप्रस्तार ॥ फलछपैमधिक्रमसुकोंकीजेसुकविवि
चार ॥ २३ ॥ उत्तर ॥ ईहांवासनासुकविकेवर्णनकीइहिभाय ॥
सोअवसुनियेचित्तदेफलछपैसुबदाय ॥ २४ ॥ मयरसतजभ
नक्रमलीयोकीयौंइकठौंम ॥ सुभगगनिरजतसकरिधरयोत
रसतजि जिइहिठांम ॥ २५ ॥ समुझसमुझिकैटताअतिअनिसूरहिंकाज

तथा

17A रगनसगननहिंधरेंकियवर्जित्तकविराज ॥ ३६ ॥ फेर पुष्म
सगनतगनथलकिनिधरयें धरयोजुजगनस्थान ॥ ऊ ॥ र ॥ र
अरियजनसनिधानज्योंसअरि भजनसनि ऽ धान ॥ ३७ ॥ टीवा
ती ॥ छी ॥ अर्थप्रस्तारकोक्रमलीयोहे ॥ ताहांआगेंमित्रदेहगेह
किसत्रुकेपाससत्रुआनबैठेहें ॥ सोयामेरगनसगनपासहे ॥
तिनकेटारिवेमैंजतायो ॥ किसत्रुकेपाससत्रुकदाचितनराषीयें
यसिलाकेलियेंसगनसरकायराख्यो ॥ अरउहदिषायोस
त्रुकोंउदासकेपासहूंनराषिये ॥ तगनथलसगन ॥ जग
नथलरगननधरियेयोंअर्थ ॥ फलछे ॥ क्रम प्र क्रम

छंदपेक्रम	निजग्रंथक्रम	प्रस्तारक्रम
म ऽऽऽ	म ऽऽऽ	म ऽऽऽ
य ।ऽऽ	न ।।।	य ।ऽऽ
र ऽ।ऽ	भ ऽ।।	र ऽ।ऽ
ज ।ऽ।	य ।ऽऽ	स ।।ऽ
त ऽऽ।	ज ।ऽ।	त ऽऽ।
स ।।ऽ	र ऽ।ऽ	ज ।ऽ।
भ ऽ।।	स ।।ऽ	भ ऽ।।
न ।।।	त ऽऽ।	न ।।।

अथदूगनविचार मू. दोहा जौंकहुआदिकवित्तकीअग
नहोयवडभाग तौंतेहिगनविचारिचित्तकीजोवासकनाग
३८ टी प्रस्न दोहामेंकह्योजोअगनआवे आदिमेंतौ
दूगनविचारकीजे नहोयतौनकीजेयामेंरहबातकहीजोपे
रवेपोकह्यो सुभगनपाछेंअगनहोइतौंउहफलहोय

18A तौ ताहां द्विगनविचार ज्यों कैसें कीयो ॥ सु भगनके आरें तांहां
दोहाको अर्थ याविधि है हेवडि भागि जो आदि भगन परत हो
य जो तहं तौ तें द्विगनविचार न्हि कहीयें द्विजियठौर गनविचा
रि कहां गन धारियामें इह सित्ता भई जो आदि भगन होय तौ
हू जी ठौर न धरियें कीनो वासु कीना गइह कहां कह्यो ॥ वासु
कीना गयें सो चाहीये ॥ तांहां कहियें ताहां कहि ॥ येउ नेनेहु क
रि के जनायो है ॥ यथा पिंगलमें मित्र मित्र हु इरि हि यापदमें दे
खिले हु रगनके पास न गनि धर दिषायो या ॥ जें कीनो वासुकि
नागइह पर धरयो ॥ अवरो कप्रस्न और हैं सो कहित हैं दो रा
प्रथम कह्यो सु भगन धरो गन सु भसदासु जानि ॥ फिर उहि

दिगनविचारमेंहोतअसुभमताआनि ३९ बचनकोनकोसंमतहैक
हियेकरिनिरधार गनइकसुभधरिवोसहौंकिदिगनविचारि
४० उत्तर वार्त्ता ताहांएककोसुद्दहउत्तरदेतहै कहूकिछं
दअक्षरमैदिगनविचारहैं जोपांचिअक्षरतिकेछंदमेंएकगनवि
चारिये छंदअक्षरकेछंदतोंदिगनविचाकोजेतहांइहउत्तरसो
सिथलहै पांचअक्षरकौंजमककवित्तकोऊकरैनहीं औरपिंगलमें
सोकह्योहै जत्रकयेगाहादोहासुनहूं जहांकाव्यगाहादोहा
एछंदबनावैतहांदिगनविचारिलीजो यातेंइहउत्तरनबनै
अबएकओरउत्तरकहतहै दो तहांएकमतिइहकहैंगन
सदावधिजानि चहौंधरेइकगनदिगनधरोगणकहूंस

सही

19A

नि ४१ सोउहउजरदेतहेइकगनइकफलहोय द्विगुनघ
रेफलद्विगनकोजोनहिफलनहिकोइ ४२ वा ताकोरूप
दिषावतहैंयाहीग्रंथकेदोहामे केसवगनसुभसर्वदाअगन
असुभउरआनि चारिचारिविधिचारुमतिगनअरुअगन
वषानि केसवइहपदभगनहैंगनपदद्विलगैंनाहि तोह्या
केसवभगनफलद्विगनफलनइहिठांहि १ अगनअसुभउ
रआनिमेंहैपदनगनसरूप तोह्योद्विगनविचारीयेचारिपद
नगनसरूप २ गुरुलघुतेंह्यांतालगनितिनफलमेषननो
हि तातेंइकगनकविनहेंहोतद्विगनहेंमाहि ४५ तहँय
क
हमतजैंजिकालिपलछंदमेंपजुविरुद्ध ताकोसुनोनिषेद

ता

अवसायसहितमतिसुद्ध ४६ गनसह्यावधिनियमनहिंऔर
कलाहूंमांहि ज्योंगाहूषटपलजगनसह्यावधिसोनाहि
४७ वा सत्तगनदीहंतोओनलहहु छटहूतेहजोविषमें अ
सानगनआवे गनचतुःकलगनहीकोसंज्ञाहैऔर छठेस्थानजो
नलहूजोकहिये जगनअथवानलनगनऔरलघुआवेतोस
मझाहै औरजहांजगनविषमस्थानमेंनआवे इहअर्थ
हे तोजगनकोदेषैंसह्यावधिकहांहै औरगनहूमेंसह्यावधि
नाहीसातसहूनाहीऐसेजानीयेऔरकहतहै दो अरु इकछं
दमेंकहेसातभगनगुरुदोइ तहंकाहूकोछंदपढोसह्यावधि
नहिहोइ ५ मंगलहीन्जुकरीरजंनीविधियाहीतेमंगलीकं

मेंधर्‍योहै जोइहांविचारदेषोसात्तभगनसद्भावपैनाही
येंसेंहीसर्वजानिलीजे अरुयाहीठोरउदाहरनगनकोंकहेंहैं
गैंगनकोनाममलेकेजाहांसद्भावधनाही राधाराधारमकेंमनप
ठयोहैसाय इहांराधाराधासद्भूमेगनकह्यो जोराधांगसद्भूनाही
मनपयहनगनदिषायो यहनवनेयातेसद्भावोंधकोंकहिवो
मिथ्याहै म. ऐसोंजोअवचनसत्यहैं एकुगनहिगनविचार स
मंगानिधरिवोसमजेकेआंतिकवनिरधार ४८ हिगनविचा
रजुहिगनकेजोगहितेंफलजोय होगनकह्योसोउअवरउका
नफलबिनहोय ४९ ज्योंजोगनकमनफललिष्योकेवलगह
कोऔर संजोगहिकोऔरफलतोइहांफलकीठोर ५० ज्यों

सुंठीवातत्रुवचगुडजुतस्रामनसाय इहैवचसृतगुडुजुतली
येवातहंश्रामविलाय ५१ त्योंकेवलगगनकोजुफलकस्यौंजुफ
लहोय संजोगहिसोफलजुहैवहंहोयफलकोउ ५२ याही
तेंकविवरकस्योश्रगगनजुश्रादिदिखाय तोजिहपरसुभग
नधरेउकतोसुभताभाय ५३ सुभगगनपाछेहेहुतोहो
हुश्रगगनयेमानि उकतेंतोसुफलमहांहितियहोहुदछदानि
५४ याहीतेंश्रसुभनधरेंश्रादिजुपरहेंहोय श्रसुभमहोतो
दुहूफलइहसित्तावकसोउ ५५ हिग बुन क न मित्रेतें
जुहोयमित्रवाहैवहुरिहितिघमित्रतेंजुदासश्रासजुघतेंनजानी
ये मित्रतेंजेदोसंगनहोतगातदुखदोतमित्रतेंजुसत्रुहोयमित्रवे

धहानियें दासतैंजु मित्रगनकाजसिधाकेसोदासदासतैंजुदास
वसजीवसवमानीयें दासतैंजैंदासहोतधनुनासआसपासदा
सतैंजुसत्रुमित्रअसत्रुसोवखानीयें ५६ जानीएजैंदासतैंजुमित्रग
नजुतपसप्रगटजैंदासतैंजुदासप्रभुताईये होयजोजैंदासतैं
जैंदासतोनुफलापफलजोजैंदासहोतेसत्रुतोनसवपाईये सं
भोजैमित्रगुननताहीतोअफलगनसत्रुतेंजुदासआसवनिग
नसाईये संत्रुतेंजैंदासंकलनासहोतकेसोदाससत्रुतैंजुसत्रु
नासनायककोंगाईये ५७ लग गन जदा रन राधाराधा
रमनकैमनैनपैठयोहेसाय जधोंह्योंतुमैकोनसौंकहोंजौंनके
गाय ५८ अगन जदा रन कहोंकहांतुमपाहुनेंआनैनाय

क वि
प्रि २२
22

केमित्त फिरपीछेपछ्ताऊगेऊंधोमनकोचित्त ५९ दोहाइहूंऊदाह
रन आठेआठहुंपाइ केसवगननअरुअगनकेसमझौमनुबुधिम
हाय ६० लघु म गुरु ग्रु द संजोगीकीआदिजुत्तविंदुसुदीर
घहोइ सोईगुरलघुओरसवकहतसिआनेलोइ ६१ प्रश्न
विंदुसुदीरघहेसहीकहनप्रयोजनकौन उत्तरहै विधिविंदुहेअ
धरणकहितौन ६२ वा इहांपूर्णविंदुसहूकहतेजानिये इहां
तौंकह्योहेविंदुसदीर्घहोइ विंदुसबहीहै ऐकविंदुलघ्वात्मकहे
अर्धविंदुजुहेओरऐकविंदुदीर्घात्मकहे पूर्णविंदुसोसबहीमें
जतायोहे विंदुदीरघहेसोगुरहे जोविंदुलघुहेसोलघुहीहे
म दो ग दीरगलघुकरिकेपहेसुबहीमुवतिहठौर जेऊंस

22A

युकरि लेषीयेकेसवकविसिरमोर ६३ मूग यथा पहिलेंसु
षदेसवहीकोंसषीहरिहीहितुकेजुहरीमतिमीठी ह्वजेलेजी
वनमूरअक्रूरगयोअंगअंगलगायअंगीठी अवधोंकिहिकार
ऊद्धव नेरोऊठधारोहैलेकरिकूठीवसीठी माथुरलोगनकेसंगकीइह
वेठकतोहिअजोंनऊवीठी ६४ टी का श्रीकृष्णअक्रूरऊद्धव
रीतीनेमाथुरलोगहैंकोऊसषीसोकहितहें ऊद्धवसोंकहाबातो
करतिहें जोकोंमाथुरनकीवेठकअवलोंईऊवीनोंही अजेंकि
छूटीनाहीऊद्धवपदमेतोसंयोगीकीआदिकोंलघुदिषायेऊसु
रसोदीर्घभयो अंगअंगमेलघुविंदुदीर्घविंदुजताए यामेदीर्घकें
लघुपढेतेलघुगनियेइहदिषायो क्योंकिहजलअसेंभगनकरिय

नीयेंऊधवपदसवकेंनीचेंहेंयातेक्रमप्रतिलोमहें ॥ संजोगी
कीआदिकोंकवहूंकवर्णविचारि केसवदासप्रकासकरिलघु
करिताहिनिहारि ६५ य अमलज्जुन्हाईचंदमुषठाहीभई
अन्हाई जोतिनकेमुषकमलसेदेषेरहेमुरझाई ६६ टी जु
न्हाई शब्दमेअन्हाईसरमेंसंजोगीकीआदिलघुहे तेदीर्घन
भयेउहालघुहीरहे हीन २ सव २ नं २ दो २ वरनताकेसवदास
रसजहांविरसहेजाय ताकविजसों हीनरसकहततसवेकविरा
उ ६७ रस प्रियां देदधिदीनोऊधारहोकेसवदानकह्योअ
हमोललेषेहे दीनेविनाजोगईजुगईहोगईनआगईघरहीपिरि
जेहै गोहितवैरकियाहितहोकवैरकियेवरनीकेहोरहैं

23A

वैरकैमोरसवेचहुगीअहोवेच्योनवेच्योजोडारिनदेहै ६८ टी
के यहि कवित्तप्रतिउत्तरहै तहिंनाइकतियवचनजानो ˇ क
हामोललेषैहैयो चहियेत्तवनीकेहैइजोकरिये योपाठजावे स
वकवित्तभंगहुतकहोइँनीकोहू रहिहैयहिवचनहूवनेननाय
ककोहै यांतेइहअसमंजससोहै वडोप्रश्नइहकोहै अर्थ पि
देदधिइहनायकवच जानोदियउधारतियभाष्यो पीयकहीदा
नकहीतियकहअरुभितहतजेअभिलाष्यो पुनिपियकहीमोल
लेषैहैदीनेविनतियभाषी नायककहीगईजुगईअबवचनप्रतिष्ठ
कहिराषी तियप्रतिकूलकहीफिरिजेहैदेहेनहीधनयामे तव
पियकहिवैरकियमोहितातियकहीहितुकवकामैं वैरकियेकहु

कहामोललेषैहै
तियवचअरुप्रतिसों

क वि
प्र २४
24

वरनमहै इहवचनसुनायकजानौ नीकेहेरहें तियवचयोंम्हां
लगिरसताममानो जवपीयकहीवैरुकैगोरलविचहेंविरसकऊवा
स्या रसमेविरस भयोयातेंइहकवित्तहीनरसधार्‍यो ७० ज
ति गवर नंदो ओरचरनकेवरनजहां ओरचरनसोंलीन
सोजतिभंगकवित्तकहिकेसवपरमप्रवीन ७१ य हरिह
रिकेसवमदनमोहनयेनसोंमसजान योंहजवासीहारक
नाथरटतदिनमान ७२ अर्थ ए लिने ऐककवित्तप्रवंधमे
अर्थविरोधसुहेइ परवपरअनमिलसदा व्यर्थ केहेसवकोइ
७२ मर ठा द सवसत्रसिंहारहजीजिनेकरहसजिजोधा
जमरास वहवसुधालीजेमैममतिकीजेदीजेअपनोदाऊ को
जैसे

पैले छै मात्रा
चाहीए फेरचा
रमात्राचाहीए
फेरतीनमात्राचा
हीए ।। अपादो
हामे चौवीस मा
त्रा है ।। मदनमो
हन ई ही चौथी मा
त्रा पांचवी मात्रा
सामिली है ।।
आगे तीन मात्रा
कीठौर दो मात्रा
है ज्यों है जक

सीरटतहै जैसे तैसे द्वारकामेनाथ यह नामको लोगरटतहै यह मानो

24A

नरिपुतेरोसवजगहेरोतुमकहियतसवसाधकरुद्रदेहमेंगावहु
म्रथमंगावहहोपुनिधनीश्रगाध ७४ श्रपाह्नुव ने दो श्रर्थन
जाकोसमझैये ताहिश्रपार्थहिजानि मतवारेजनमतसिसुकेसे
वचनवषानि यथा पियेलीनिरसिंधुकोंहेश्रतिसज्वरदेह
ऐरावतहरभावतोदेख्योगर्जतमेह ७५ क्रम नव ने क्र
महीगुननिवषानकेगुनीगनेक्रमहीन सोकहीयेक्रमहीन
जगकेसवसुनहप्रवीन ७६ य जगकीरचनाकहिकोनेक
री किहराषनकौजियपेजुधरी श्रतिकोपकेकोनसिंहारकरे
हरिजूहरिजूविधिबुधिररे ७७ सुग करी कटु ने कह
ननीकेलागहीसोकहीयेकटुकर्न केसवदासकवित्तमैंमें लि

नगाकोवर्णा ७९ य वारूनवन्योवनावर्तनस्वरनवसौविमा
ल चहीयेराजमगायकेमानोराजनकाल टीका वार्ता को
लसवकरणाकरहेयाकोवर्णअवतरम सिंहनवर्ण पुन
त्ति न एकवारकहीयेकछुवहरज्जुकहीयेसोय अर्थहोइ
केसवदपुनिसुनिपुनेरुक्तिसहैाय ८१ सोर यथ मत्तेवा
वनर्श्रुरूहरंइश्राजश्रातिसोहीये वजपरकोप्यामस्हमेचन्दमा
दिसदेखीये ८२ दो दोषनहीपुनरुक्तिकोएककहतकविरा
ज छाडिअर्थपुनरुक्तिकोसदकहोइहसाज ८३ य लोच
नधेनेसमनतेहैकछुतोकहसुहि तनवेधोमनवेधियेवेधी २
मनकीवुहि स मदसविरोध यथा मलयानेलमनहरतह १ पौर्त
ठिसुअरनवदाकुल सवनसयनसेनसारमयहरवरतर

25A

लसफूल ८५ मरुनदेसमोहनमहां देषहुसकलसभाग अमल
कमलकुलकलितजहंपरवनसलिलतडाग अ मलयानिल
दछनविषेंनहीनर्वदाकूल कोउहदेसविरोधहेसवेकूलनहि
फूले ८७ वा काहाकिसवकूलएकसेनहीहोतनदीनकेविषै
काहंकूलसरसहोतहें काहंनहीहोततोनर्वदाकेकूलविनत
रुवरहोहि इहनिश्चै. नहीतोदेसविरोधकैसेवनेनर्वदाके
कूल हो ओर अगरमरुगहदेसकोसवैकथनरहमार
जेहांनर्वदाकूलअरुमलयानिलसुवदाउ ८८ ऐसोमोहन
देसवहसुवनसहितवनमार अरुतडागनहिहैजहांकेउ
निकलितअपार २ कालविरोध नैनं प्रफुलितनवनीर २
जोरजुनिवासरकुमदरसाल कोकिलमदनमयरमधुवरा २

८६ धु
धु फू

मुदतमराल कालविरोधलौयथा स्थाईवीरसिंगारकेकरुणाहू
नाप्रमान ताराअरुमंदोदरीकहनसतीनसमान ही रहोमस
रहहेकस्योलोकविरोधवषानि माहतारामंदोदरीउदाहरनव
रजान ८९ केवललोकविरोधकह्योन्याइविरोधवचारु अरु
जेवेसिंगारकेस्थाईकहेगनाइ ९० करुणाहूणामनतोइहै
सवकेमतेविरुध केसेकेवललोककोविरुद्धहोयमनिसुधे
९१ औरुप्रसहैवीररसकरुणारसजानि रसकोरमस्थाई
नहीइहअसमंजिसमानि ९२ यातेविरोधनलोककोस
वकेमतेविरुद्ध केसेलोकुविरुधकोउदाहरनइहसुद्ध
९३ कह्योजुलोकविरुधकोधरोसकविनामाह स्थाईआग ह

26A

मनविरुधकीकरोजुकवितानाहि जुइहग्रंथकीजेईहांइकइकनजहु
विरुद्ध जोविरोधद्वैहोहिजुहैसोकीजेइहसध जोतेदोऊविरुधजह
सुतौदोषबडलीन यातेंपहिलेंतासुकोंउदाहरनकहिदीन ९९ का ल
आधोदोहांमध्यकह्योविंबविरोधकोभाव उत्तराद्धमेंलोककोदियावि
रोधजताय अरुजुकह्योरसवीरकोस्थाईकारुनवषानि सुविरुद्धको र
अतिताकहीहटअसमंजसआनि ९८ म्र न्यायआगमविरोधवव
नें पजियेतीन्यवर्णजुगकरिविप्रनसोंभेद पुनिलीवोउपवीतहसप
हिलीजिसववेद टी पुनऔरगंधविरोधहैलोकवर्त्तवेमांहि द्विज
तजिदंभिनिप्रणितसिसुपाठनभयनाहि १०० म्र इहविधिऔ
रहुजानियहुकविकुलसकलविरोध केसवकहेकछूकअव म्रइनको
अविरोध १०१ केसवनीरसविरसऔरहुसंधानविधान पात्र

क वि
प्रि २७

27

इत्यादिकनकोरसिकप्रियातेंजानि १०२ इति स्रुक नाज सह
रांम रचि याक प्रिया कायां ति स्रुक नाज सहज
मचं कायां वित्त षन नंनं मत्रि यप्र स २ ग्रथ
विव नं दो रा केसवतीनहूलोकमेत्रिविधिकविन
केराय मतिपुनितीनप्रकारकीवरननतसवसुषधाउ १ आ
ममधिमअ्रधमकविउतिमहरिरसलीन मध्यममानततमान
सनदोष नअ्रधमप्रवीन २ प्र सो ठा त्रिविधकविनकेराय
कहेजुतीनहूंलोकमें ताहांप्रथमइहभाइजोत्रयत्रयविधिलोकप्र
ति ३ दो रा तोजेमाननतमोनिमनितेंकहैं सुरअहिलोक
जैकमसोंउकरकेहौंतिमकहिसुरअोक ४ तऊवनेनहींकाति
इहकहउत्तमहिनांहि जहांवालमीकादिकविअरुअहिपतिअहिठां
हि ५ तांतेहरवोनविधवनेउत्तरकहोविचारि कोंनकोनसेलो

27A

कमें कौंनकौं निरधारे ६ मध्यममानितमानसनिमानसमनकौं
अर्थ जेसें मैंतेसोकहें वरनप्रसंगसमर्थ ७ उत्तमहरिजसहीकहें
अधमदोषहीवानि ज्यौं देषेतेसें कहें सो मध्यम पहिचानि ८ व
रनेवस्तुगजादि कें जो तिहमें कहिजउमाहि उत्तिसुनाइहिआ
वंहीजिहं तिहं कहे मनमाहि ९ परमारथप्रभुधरमगुणउक्ति
कविजहिलीन साधुनकौंदातानिकौंवर्णनमध्यमप्रवीन १०
यो परमारथस्वारथरूभयोमधिमकाविमाहि केवलस्वारथमें
अधमदोषकहतसरसाह ११ उत्त मध अध वर नं स
या हेंअतिउत्तमतेंपुरषारथजेपरमारथकेपथसोहें केसवत
स अनुत्तमतेंनरसेततस्वारथसंजुतजेहें स्वारथहूंपरमारथ
भोगतमधिमलोगनकेमनमोहे भारथपारथमितकहेंपर

पुरषजो हेनारायनतिनके अरुपन मित

स्यो

ऊ

माय स्वारथहीन तिको है १२ टी० प्र० उत्तिम के पाछे कहे मध्य
म रहे क्रम हीन के सें क्रम रहे थल रहे सो ऊ कहे प्रवीन १३ उत्ति
म मध्यम अधम ऐक हो जु प्रथम गनाय वाहि दोहा मधिक ह्यो
ता को क्रम मैंहि भाय १४ सो ठा ऊ र रहे क्रम औरें जानि परमा
रथ प्रथम में वहै स्वारथ पुनि दरहे मोन परमारथ स्वारथ मिश्रि
त १५ म० कवि नव ने सोची बात नव शिंहीकृ ठौ वरने वा
नि ऐक नव नेने मु के कवि मति त्रिविध बखानि १६ सुगम
म नव ने के सब दास प्रकास तब मधुचंदन के फल फूल क्र
ल पत्र की ज्यों हे ज्यों सुकल पत्र तम तूल टी० [illegible] दे बन
मैं वर्णन विषे जुन नहीं अरु है बात सो ई कहे चंदन सुमन बिना न
फल विष्यात १८ जदपि जो न्हें तम पत्र को कही न परिव है

देखत में नहीं बरन
विषे है चंदन के फल
सो पक्ष है बरन विषे
है देखन में न है
जु नहीं बरन में
अरु है वे बात है गी सो दे
खन में सुकल पत में जो
नू सुकल पत में तम मे है
देखन में बरन में नही आवे
ऐसे तम्य बातें है

28A

होति ऐसे सतंहीं वरनके घरे सात्यताजोति १९ म॰ मिष्या एतं जहां २
जहां वरनतासिंधसवत हांत हां रतनन देषि सुछिमसर वहूं कहें के
सवहूं सविसेषि २० लेनकहे भरिमहितमसें जनिसीयर्वेनाउ अं
जुलिभरिपीवनकहें चंद्र चंद्रकाथाय २१ सबकेकहाऊडाइ रनवा
हे मंथअपारि २२ कहूं कहूं तातेकहूं क विकुलचतुरविचारि २२ ह
म नम ऊदा रने केटकनेअटकैन फाटतावरन चपिवाततें
नजातऊडिअंगनउ चारियैं नेकहूनभीजतामुसलधारवरषाके
च नरचतरं चचित्तमें विचारीये केसोदासंसवकासंपरमप्रकासंन
उसारीयेंपसारीयेनषियपेंविसारीये चलिऐजेअोडिपटतमही
कोगाहोतनपातरोपि छेदारासेतपटकोंउतारीये २३ टी प्रस
तमपटके कहिवेकहा अभिप्रायपटहीन ऊपरऊपरको वस्त्र

उ॰ चोकरो
नाहीवरत
तांचोकर
नोनहींपरत
अरुपीयप
हडुतेरको
नहींपरेत

यापटको कोई
कनवारो नहीं पे
वडाप्रकासु जाको
लरहोहै

सपिछोराकहिदीन २४ वा द्वितीयभावार्थहूं हूतीकेवचननाय
कासोऊनीसीचांदनीहैं इहजवउत रेकहातम अंधियारीजवग्रा
वेतक्वलिये मू॰ चंद्रमाकोऊ ह न भूषनसकलयनसारहीकेयनस्यामकुसमैलिनकेसरहीछवखाईसो २ मोतनकोसरिसरिकंठ
कंठमालहारअंगेरूरूपजातिजोतिहैं ति ह राईसो चेदनवहारोवार
सुंदरसरीरसवराबीजिसु भैसोभावसनवसाईसो सारदासीदेखियतदेषोजायकेकेसोदासठाड़ीवेकुमारित्रनुईमेअन्हाईसो २५ टीका
अ दो तमकोपटजुकहेंयाकोमिथ्यावेनेनमाहि मोजिनकीसरैहारिऐमिथ्याकोंकहिजाहि २६ ऊ २ त्ती भूषनसवेचनसारहीकेनहीहा

२

[illegible]

29A

नइ हीमिथ्या अरु चंदन जु वहाो है जामें राषी है वसन की सोभा
कहां चंदन नही के वसन पहरे हैं इह मिथ्या अरु जु न्हाई में अन्हा
यवो मिथ्या है म. कवि यम गिने वरनत चंदन मलय हीहि
मगिरि भुजपाति वरनतें देवनि चरननतें सिरतें मानि सगात २७
अति लज्या जुत कुलवधू गनिका गनि निरलज्ज कुलटन सो
कोविद कहत अंग अलज्ज सलज्ज २८ वरनत नारि न नरन
तें लाज चो गुनी चित्त म. षट्गन्न साह मछ गुन काम अठ गुन
मित्त २९ कोकिल को कल बोलि बौ वरनत है मधु मास वरषा
ही हरषत कहे केकी के सब दास ३० स म स. दनु जनि
सो दित सुतन सो असुरै कहत वषानि ईससी ससि सह छिकी

भोजपत्र

बरननवालिकवाति ३१ टीका अ॰ ते ईसकेसीसपेहहि
कईसेईसिकीजोहहिकहीवहतोएकवालकलाहीमदाराजेहै
ऊ र ताहांकहीयेकिसतिजोहैहहियांभातहैं कोटिउगन
तेहैंसोसपरयातेंद्रहहहितहें किउगादीहैंताहांतांकीकल
हैदिनकीहैजकीसोवरनीपेदहनियमहै अ॰ दो सहजसिं
गारनसुंदरीजदियसिंगारअपार तदिपबखानतसकलक
विसोरहजुसिंगार ॰ तदपबखानत ३२ सुगम रहजसिं
गार ऐान प्रथमससकलसबमंजनअमलवासजावक सु
देसकेसपासकौसम्हारिबौ अंगरागंभूषनविविधसुखवा
संरंग कंजुलकेलिनलोललोचननिहारिबौ बोलनिह

30A

सनेचिक्नवातुशीलनचारुपलपलप्रितिपतिरतिपरपारिवो
केसोदासमसवलासकरहुकुमरिराधेइहविधमोरहसिंगारनि
सिंगारिवौ २२ टी क न्न प्रथमसकलसुचिअंगगजपटनअ
दिमंजनअमुलपटजावककुबमानिये वेनीपुनिअंगराग पंच
विधिमांगमोरतिलअरुकेसरिसुमेहदीप्रमानीये भंवनहि
विधिसुमनसुबवासरागरोलादिअधररंगराग चयमानिये
कजलसु इहविधिषोडसिंगारकहेऐइसविलासकरिनीके
वरमानीये २४ म. दो कुलटाकेपतिमेंसबसुबारबधूनके
जानि जाईदईपितुमातनसोकुलजाकोपतिमानि माहापुरष
कोप्रकटहीबरनतत्रबमसमानि दीपथंभगिरगजकलस

सागरसींहसमांनि २६ य गुनमनिवैरागर धीरजकौ सागरज
सागरधवलधरधमैधुरधारीएजू बलतरुनेरिवेकौ रजैगजरा
जसमअरि गजराजनिकौसिंह समगारीएजू वांमनि कौवांमदेवका
मनिकौकांमदेव रनजयथ्यभवामदेवमुनमाएजू कासीसकुलकल
सजंबुदीपदीपके सोदासकौकलपतरुरांमचंद्रआएजू २७ दोहा
धमकेधमुरमे वसमभुजाधुजा अहिपरमांन उरसमसिलाकपाट
अंगअभूवरत्रियनसमानि २८ य मेचज्योंगवीरवांनीमनता
सयासबीनसुथऊरअरिनिजवासज्योंजरतहै जाकेभुजदंडभु
वलोककौंअभयभुजदेषिदेषिदुर्जनभुजंगज्योंडरतहैं तेरि
वेकौंगहुतरहोतहैंसिलासरूपराधिवेकौंहारनिकिवारज्योंअ

इंद्रजीतआयेजू

वामनके
टेनरजे
नके...
धर्म...
चलत...
केमारवे
सिवहै

भुजंगली
भुजाकीदे
केदुर्जनड

करतहे म.लेतेकोंइन्हेंजीतराजोजुगजुगकेसोहामततोकेराजरा
जसोंकरतहे ३५ सुग ग्रथ इति नाज सह राम रचि
यांक प्रिया कोयो हज मचे कोयो विवि .स्याप्रो लि
ने मच थं:प्रस ४ ग्रथ विता कार लिने दो पद
पिसुजातिसुलछनीसुवरनसरससुहहै म.षनाविननविराज
हीकविताबनितामित्र १ टीका पिसुकविताजातिहेजनकोधार
निग्रर्थ सुनि लछनसुभअछरनिसरससुछंदसमर्थ २ वा
जातिकीधारनवारीकहाजन्हीननाहीसुभलछनकहा लछन
काव्यकेग्रंथनमेंकहेहें सोहोंहिनिदोषालछनवतीयहवनेहें
ग्रंथनमेंजोलछनरहहवहुतवरनंआवे वर्णनवहुतकहेयहर

सुलछनी

कलैतिनकोंलछनहैंसरसरससहित ॥ हजकोअ वा छंदहैंअ
छोहैरतह्मजपपकविताअैसीहुहोइतोऊ म षनजुहैंअलेकार
तिनेविनाराजैनही ॥ वन ॥ पछ ॥ जविपसजातिहोइगपातभ
लीहैजाकौ लछनसामुद्रककेभलेहोहि सुवरनरूपवतीहोइ
सरसप्रीतसहितहोइ सुहृतिहोइ सुहृतकहिदेसदुसुछहोइतो
ऊमषनविगरकहागहिनेविनुनराजे ॥ मि ॥ पछ ॥ जदपिसुमि
त्रकेसोहोइ जातिसुलछनी जाकीजातिहीसुलछनीहोइ अर्थ
किकुलीनहोइ अरुसुवरनसरसहोइ कहासुवरनजाकेअधि
कहोइ धनाछ्यहैहोइ सैहैसभलोहैं ॥ हजकहीयेआचरनजाके
परिमषनजुहैसहृदतातविननराजै ऐसैंजानियें ॥ म ॥ दो

32 A

कविनकहेकविनानकेअलंकारद्वैरूप ऐककेहैंसाधारनेऐकवि
सेषसरूप ३ सु म लंका या सामान्यालंकारकेचारिप्रका
स वर्ण १ वर्ण्य २ भू ३ राजश्री ४ भूषनकेसवदास ४ व
र्ण कार स्वेतपीतकारेअरुनधूम्रनीलेवर्ण मिश्रितकेसव
दासकहिसातभातिसुभवर्ण सु म सेत र्णने दो कीरतिह
रिहयंसरदघनजोन्हजरामंदार हरिहरहरगिरिसुरसरिसु
धासोधघनसार टी हरियहकोअर्थइंद्रमंदारकल्पवृक्षह
रिसिंधुहरसिवहरगिरिकैलाससुरसरिमासोधचूनेकेमंदरि
र दो बलबकहीराकेवरोकोडीकरकाकास कुंदकोचुरीक
मलहिमंमिझाभस्मकपास ७ टी गा बलवदेवजरकरको

33

कमलकीजर

लैसिंक्री वारू म. दे थांडहांइं निझर्रं चमरं चंदनं हैं समुदार

क्षीरसमुद्र

छत्रे सात्प जुगं हय वुधं सेव सो हैं उडमार ८ पू.थे सु हत्तं सुचि सत्व

गुनं संज्जनके मनं हास सोपचूनों मोइरं फटिकं वटिको फेनप्रका

स ९ श्रूक्कंसुंदरसनं सुर सरितं वारुनं गजं संस मेते नारदं पार

दं श्रमल जलेरद सारदादि सेत्र १० पु. कीनों छत्र छितिपति

प्रथवी

के सो दास गनपति वसन वसन वसु मुतीक सो चारु हे विधि की

नें श्रासनं सेरासनं अ समसरं श्रासनें कों कीनो पाक सासनं तु

यां रहें हरि करी सेज हरि प्रिया करे ताना कमोती हरक रे शोत्ति

लक हारा हं कसो हार हे राजा दसरथ सुत सु नो राजा रामचे

दरावरी सुजस सब जग को सिंगार हे ११ पुनि दे हडतिह

पवित्र करतु

बाटकी स्वेत वरनीरो

33A

किरन

लधरकीनेनिसकरकेरजगकरवानीवरविमलविहारहेंसु

मान

निगनमनेंदुजननिजनेजुजानिसेषसंषयानयानिसुषदअपार

हें केसोदासमसविलासविलसेंविलासनीनसुषसुषमदुहासउद

यउदारहे राजादसरथसुतसुनोराजारामचंदरावरोसुजास

ने

सवजगकोसिंगारहें १२ पु नारायनकीनेमनकेअवदागनि

गरु

कमलाकीवीनमनिसोभासुरसारहें केसवसुरभिकेसमारङा

अरु

सुदेसवेसंनारदकेउपदेसंसविमोदविचारहें सोनकरिछिविसि

शीरयंशिशानिलेषिगंगाकीतरंगदेषिविमलविहारहें राजाद

सरथसुनोराजारामचंद्ररावरोसुजससवजगकोसिंगारहें १३

सुहा ग्याव ने विलोकिसिरोमरुहंसेतसमेततनरुहकेसवयो

अरु छवाती ताको अवदात मोर वरन तानीरे

सिरकेकेस तनकेकेस

जसगायो उठेकिधोंआपुकीऔधुकेअंकुरसरंरकिसउयुसम्हलनम
यो लिष्योकिधोंरूपकेपानीपराजयरूपकोमरूपकुरूपलिषायो
जरासरपंजरजीवजरयोकिजराजरकंवरसोपहिरायो १४ पु
लकेंसित्तलोम सरीरसवेकिजराजसरूपकेपानीलिषायोस्वरू
पकोदेसउदासकेकीलनिकीलतिकेकिकुरूपवसायो जरेंकिधों
केसवव्याधिनकीकिधोंऔधिकेअंकुरआइनपायो जरासर
पंजरजीवजरयोकिजराजरकेवरसोयहरायो १५ अभिराम
सचिक्कनस्यामसुगंधकेधाममहातेजुसुभाइकरके प्रतिकूलभये
द्रमसूलसबेकिधोंसोलेमिंगारकेयाइकरके निजहंतन्यअभजज
राकेकिधोंअवनीजराजनलाइकरके सितकेसहियेरहवे

रूपकोदेसतेउ
दासकरकेजुरा
नेकीलहेओ
हेजोनसेरोम
हेसेतसोईकील
हे किलेहे से
षोहे तासोकील
सेओरूपको
छुधानेकिफेर
नाओव

जड

बूडेहैप्रेतोकों
देतीहौ

34A

सलसेजनुमांयुकअंतकनायकेके १६ स्रुम वित केसो
दासभावकामतनारिकानसोप्रकासतारिनमेचंद्रसोप्रकासहिको
तुहे वसुधाअरुआसपासमागरखुजा गरसोसागरमेंगंगाकोसोज
लपरसतुहै ब्रह्मलोकसारदासोपरमविसांदुहैनागलोकसों
जकेवेषनिधरतुहे इंद्रजीतजकोजसलोकलोकगाइयतना
रदसोनारदश्रौरामसोरस्तुहे १७ दो वा नागनकोएसोरू
पनाहीहोतजेसेसज्जको अद्भुतवेषहेतोवेषहुकीप्रसंसाभारी
भई स्र छीरपरिश्रेसेपयपूरिसोहेहि घनमेसवधवलधराक
परोसोधूलिके सातदीपखंडनवमंडलमंडलमनुहसेहरिसाप
रीमराल पांतिमूलिके दिगजनजूपरविराजेहं तहतिलाजेउ जिल
इकुलश्रेसेसोफूलिके कितइंद्रजीतजकोदेसदेसगाइयतनगर

रा

वि ३५

35

नगरए हीमलतामीसांफुरिम के १८ ही जलकेप्रवाहजे हेमगिनमि
पूनेमें या भांतिहे औरएरि हगधकेप्रवाहमेहेजो सोभित मर का
लिजरकुमदसीकए वसीकनोजमेंकामभीरकासेमीरजोतिन
सोजगको जाहीएमीफूलेरहीजोधपुरजोन्हपुरंजननगहजो
ईयतुजोन्हकीकेमगको हिमगीहिमरकोटहीरामीहेसंगा
वादहंसनीसीहांसीपुरमानसरसंगको कितंइंद्रजीतजेंकील
धनकेमुधमुनीलधनोरलाहोरलहरजेंमेंगंगको १९ सु म
चंद्रमनिचंद्रचूडचारुताविचार चित्तचामरचारुनीचेटकारिडामे
है कैलासकुमदकुंदकेवुकेठोरवकायाकामनीकटाछकमनी
यताइलारेहें पारदनारदमुनिसारदसरदछनंदनमारजी
तिमटलयजमानमारेहैं ऐसोजसजूजेराजगगजइंद्रजीतजू

35A

को विसद प्रभाव वाइ आसोल सहारे हैं २० टी चंद्रमनि जुहैं वे
द्र चूड कहा के लाल भये की चंद्रमा को देषि द्रवीभूत होत हैं ते चंद्रकां
कहावे है चंद्रचूड उन को भूषण तिनमें कीये ते स्रवशो है यां ते वे
द्रमनि हि को विसेषमि है मू सरवर सरवर फुलन जे पुंडरीक मा
न सरवर राज हंस जे वषाने हैं सुरसरी ईस सीस ससि धाल मालमे
षजू जोरे जे स्रो रह हरि अंग लपटाने हें सरद के घन वन मार हार मोत
न के माहा दानी इंद्र ता सिम लजे माने हैं तेई तेई कासी के तिलकति
ह लोक मांहि ते रेज स जो तिही के जलथ लपाने हैं स म भूष पी पार्वती
जव नने हरि वाहन विधं हरि ज टां हरी हर दहंडु नाल चंपक दीप
वसंततरि रु क वीर स संसुरगुर मे धुसुरपाल २२ टी सुरदेवनापाल स्याव
.की जाति सुरगिरि में गोरोचना गंध के गोत चक्रवाके नसिलं

सुमेरपर्वत मकहू दीप ममहे गोरा धनंमा
अंकु र पीत निकले है

डोरेरक्षाव

हाटकबरनरएत्तकमलकोसकेशवदसनकेशरकनककेसमाग
सोरोंमुखचपलाहैसेपीतरंपीतेपराग स म स या मंगलही
जुकरीरजनीविधयाहीतेमंगलीनामधस्योहै हू सरेदामिन
देहसवारिउडायदईवनजायवस्योहै रोचनकोरचिकेतुकोचं
पकफूलनमैंअंगवासभरयोहै गोरीगुराईकोमेलमिलेकर
हाटकलेकरहोंकस्योहै २४ टी गोरीजूनेश्रापनेअंगको
मेललैकेऐजीवस्तुवनाईमंगलस्वभाव लिऐजुवनाईश्रा
लसेंसोहरदीकेगई याकोनाउमंगलीयाहीतेहैं हूसरीवार
दामिनीवनाईअपनेरोचनकोतनकीचंपककवनायो अरुहा
टकलेनायो लेकरहाटकलेकेकेसरिमिलायकेईहचंडान्ययहे
हाटककस्योहै लेकरेहरैयाविधजानीये स. छप्प नैं

८

गोरीजूकीगुराईकोमेलमिलायकर
हाटकसोनाश्रोरकेरहैकमलेकेसो
मैंहोनाहेजाकोंमैजनेहै लिखकेवनायो

पर्वत सर्प स्याही १

व्यासदेव जी 36A

जोविस्राम देकरदेगा करे

मंत्रादिसे मरनकेली ऐक रेसो क्रिया ४

जेरेवैरनके कमलमुषा नमषहैं ता सोवोहतन रालोकालमा स्याहीलागा जातहै

विंध्यहदंगाकासग्रसिअर्जुनवंजनमाय नीलकंठकोकेठमुनि
व्यासेविसामीपाये २५ रातसअरुलगहरमुषेत्राहछांहमदंतिल
मैंमेनसरसिजचीर भीलंकरीवनंनरकूमसिमृगमदकजल
नीर २७ मधुपनिसासिंगाररसकालीहत्याकोल २८ सारंग
अगनिकिमाननरलोमछोभदुषमोह विरहजेसोदागोपिका
कोकिलमाहिकीलोह काचकीचकचकामसलकेकीकाकुकु
रूप कलहछद्मछलआददैकारैहमसरूप ३० क वेरिन
केवहुभांतिदेषतहीलागजातिकालिमाकमलमुषेसवजगजा
नीहें जतनअनेककरिजद्यपजनमसरघोवतहुछूटतिन
केसववषानीहें निजदलजेगेजोतिपरदलहनीहोतअच

द्रविड़ रोरे रामचंद्र यन द्रोपदी सिंधु अग्न राम चोर जंबूजमना तेल

लोचललितरहत्र अकहकहानीहै परनप्रतापदीपअंजनकीरोजेरेष
राजतश्रीपानकपानीहै ३२ अथ तह व ने क न्ने हंसन
केअवतंसरचेरंचकीचकरसुधासोसुधारेमठकाचकेकलससो
गंगाजूकेअंगसंगजमुनातरंगवलदेवकोवदनरस्यावारुनीकेर
ससो केसवकपालीकंठकूलंकालकूटजेसेंअमलकमलअलि
सोहेससिसंससो राजारामचंद्रजूकीआसवसभारेभूप छो
डेभागेफिरैरोसैअपजससो ३२ सु महे अथअ = त्को व ते
इंद्रगोपअश्लोकजेकेसरीकुसमविसेष मदरागजमुषविंदुरविंतवो
तलकेलेषि ३३ रसनाअधरअंगतपलंककेंटसिघासमानि मान
कसारससिस सुकवानरवदनप्रमान ३४ कोकिलचारुचकोर प

सहेलो

जानवर

37A

गंधारीबन्ननषंजन चंचुचरनकलहंसकेपकीकहरीमैमे २५ वा ऐनंग
रूकेचनलालहोतेहें म० जेपाकुममंदाडिमकुसमकिंसुकिंकंजंश्र
सोकं पावकंपल्लवंबीटिकारगरुचिरसवलोक २६ रा तो वेदनैरोद्र
रसछवीछधमैंमजीठ अरुनमहावररुधिरंनवगेरु संध्याईठ
लग स या फूलेपलासंबिलासयत्तीवहुकेसवदासहु हंसेनघो
रें सेषअसेषमुषानलकीजेनुज्वालविसालचूलीवहुओरें किंसु
केश्रीसुकतुंडनकीरुचिरावेंरसातलमैंवितचोरें चंचुचनचापिव
हुदिसडोलतिचारुचकोरअगारनभोरें २८ टी पलासकोंवलि
जेहलहेंजेतोमानोसेषजूकोमुषानलज्वालाहें अरुरसातलमें
परेहेंतिनकीउपमासुकतुंडनकीअरुअंगारहें ईहांजदपिमं

पानकीबीरी

हेवहुहेवध

जेतनस्त्रधीमेपरे

को

मालंकार है तहां पिआरन की विसेषता को अंग ह्वै गयो॰ अंगी
वर्णालंकार ही है अथ माधव वर्ने दोहा काकं कंठ बर मध्य
कमहं गोधा भनें मारि करभं कपोत नें आदि दे धूमं मध्य मरी
धरि ३९ करभकंठ श्रीरामचंद्र कायो स या राघव
की चतुरंग चमू बस धरिजै जीज लहूं थल छाई मांनो प्रताप
हुतासन धूम सुके सब दास प्रकास नमाई मेदिके पंच प्रभ
तकि धों विधि रेनु मई नें चलाई दुवनवेदन को भवमार कों भ
मि कि धों सुर लोक सिधाई ४० टी॰ ब्रह्मा नें रेनु मई सि सृ
रची है मांनों तऊ आश्रे ताहे ताहां वर्णालंकार ही प्रबल है म
नील र्णीने दोहा ह्वै वंवसें कुवलय नहीं नं अनिलं व्योमं तरए

38A

ऊभा यमा नकी रके

बाल मरकत्तिमनहे यमुरके नीलबर्णीमेबाल ४१ य कें

ठडुकूलमुश्रोरडुहेंऊरमेंगांऊरमेबलकेंबलेदाई केसवसुर

जमुंसुनमेंडमनोजमुनाजलधारधसाई संकरमेलांमिला

नलमधपाकिधोंमुकुकीपिरस्रावलीश्राई नारदबुधिविम

दहीयकिधोंतुलसीदलमालसुहाई ४२ प्रस कारेनीले

बर्णीमेकहतभेदकछुनाहि नीलकंठकोकंठज्योंधरेसोस्याम

रंगमांहि ४३ नीलप्रगटहेसदमेंदुवोरोकइहेभाइ तैसानं

नामैभिन्नकोंधरेसोनीलरंगलाइ ४४ ३ २ तहांनीलइहीमें

नहेंहेस्रभासजुतसोय स्यामनीलइकभासहेहेहरितनीलइकमे

सेहेहरितनीलइकहोय ४५ जेसेंहरीहरि कंठनभस्यामनीलज

वरदाई वरके रेनका रेहै

होसुहरीराति स्याम होवे तेवी क्र स्याम पक्षु कहावे
है स्वेत वाम नेवी
स्वेति क्र स्याम स द

रुन्यादि रन्हे स्याम हैं नील हैं कहत सु कलकवि आदि ४६
गाह असित तें नील ता भिन्न होत रह भाई ओर हरित तिहि को क
हत नील मुंध मत पाई ४६ अथ स्वेत तक वर्न दो
ह सिंह कस हरि सवद गति चंद्र विसद धर देखि अथ क धात
अकास पुनि कलस स्याम सित लेखि ४८ येन कपूर येन मे अं
ननाग राज गज सेष पय पारा निकहि सिंधु सो सुरजि तजी
रहि लेखि ४९ सइ सिहासि चीज मनि हरि वल भद्र अनोत
असजुन कही येसे तसो सुक पारद वल वत ५० हरगौं जो सव
गज समुझी ये हरि हरि गज गज जानि कोकिल सो कलक
ठकहि अरु कलहंस वखानि ५१ टी हरि गज सिंगार सद

आकास को हम स्याम है
39
सरदे वृता हरइ इति सको गरावातें है स्वा
पृथ्वी पर जेपरा या हे रिन्पा घ सो स्वेत है

मेंऐरावतकोनाम ध्रुवहअैनपुनिहंससविधिअर्थहनोगुक
धाम ५२ हरितोकहीयेहंसअरजगगजहीहेंजानि देऊनं
मनिहितेलषेहंसवर्णचितुआनि ५२ म हंसनहीवरसव
रहेंगगमांहिंधुवषांन नीरदंनिकहैवंतहेंअरजुंनीरकोइ
न ५४ अथुस्वेतनीतसद या सिवविरंचसेंसंभुभनिरजोंगं
रजोनअरहेमें तोस्फटस्फेकचिरपीनीरकहिक्रिनेम ५५ स्वे
तअ हंस यथा स्वितवलसंचिअंग्रिसचिनरसोंमहरिहेउ
पुष्करतीरुपैसोकहेंपंकजसेंसवलोर ५६ हंसहंसेंविवर्णिये
अकेंफटिकेंरविमानि अंसषसरसिजुडुवोकमलेंजलेंजानि
५७ ह समाप्तं इति नाज सह राम रचि पोक ग्रि

चांदीस्वे

स्वेतवरन कोमीना मलवर्न सद

अरजो नीरजल कोदानर सानीरद मयसो स्वामहे

वेजा

कमलस

या कायो हुज बचे कायो होलु रव नेना, पंच प्रकास
५ अथ एपिसखन नैन हू रा संगलीआ [illegible] वृत्तिकहिकुटि
लत्रेकोनसुहजु जीछंनगुरैकोमलकठनानिस्वलचंचलचित्र १
[illegible] सुषदे
हषदंश्रोसुमंदगतिहुंसीतलतुम्बसरूपै कूरस्वरसुरवंमेंचुरश्रेवलिव
लिहंश्रसरूपं २ सेतपकंठमेंडलवरनेश्रेगोतिमदागोतिदोने अर्षवि
सविघमेंकहेमवएपअनेकवषान ३ अथ सूर्ण लीनं होहा ऐ
सेएरनसदावरनहुकेसवदास अंबुजआननेआरसीसंत तप्रे
मप्रकास ४ यथा वित हरिकरमंडनसकलदुषषंडनमु
करमहमंडलकोकहतअखंडमति परमसुवासपुनिपियूष

40A

कं॰ उदर श्रेष्ट नं॰ उदर मैं सुंदर है सोभा

सुग

निवासपरिहरनप्रकासकेसोदासम्रूअप्रकासगति मदनवदनकेसो
श्रीजकेहृदनुयदिंसोदरसुभोदरदिनेसजूकोमित्रअति सीताजू
केसुषमुषमाकीउपमाकोकोमलकमलनअमलरजनीपति ५
टी दो कमलऔररजनीसरोदोउजदिइहरूप तदिपिनसीता
मुषसदृसयहवषानकविभूप ६ क त केसोहेकमलवहविसु
करमंडनहेदुषकोविनासीजाकेचिन्हताकोसुषदान मुकरअ
षंडमानीजितेमहिमंडलकेकहतहेंऐसोजांकोवर्णनसवेवषानि
पियूषजोमधुताकोमेहवर्णपूरनमेंमरु तेंनभगतिनीरकितोउ
वैहे –सुआनि रमाकेसदनपुनिजलजन्मसोदरतासिपरमा
रूपतेउजसमिताकनताहिमानि ७ चंद्र छं हरिजुहेंभानु

ताकी किरनतें मंडन हैं सहित मुकलाहुयवंडे तपहानिये मुकरहें म
हिके जु छाया जामें परी आइ परम जो सिवताहां वास परमानियें
[illegible] स्रन
प्रकास भूमें सोभिये अकास गति सोभा के सदन अरु सोदर हूं जानीयें
ऐते गुन लीयें मित्र ता हूर विहिये परिसम तानसियके वदन की सु
आनीयें।८ अथ वैत ऐन ऐस्रावत वषानियेके सवदास सुजो
न चकरी चक्र अलात अरु आतपत्र वैषरमान ९ टी अलात
अह जो लकरी कों जलायके फेरीयें अरु गोलचक्र आकार होय आ
तपत्र छत्र सों कहीयें य हहूं रूपमुषमानो पलटन जानी ज्यों तिहे
षिकें अलात जो तिजात होत मंदिला जि केसोदास कौंलकुं लोल

नष्ठ्रस्तो दरर

41A

लातकी जोतमंद [illegible]

वक्रचक्रमनंचातुरीचितेंचारुआतुरीचलतेभाजि चंदजूकेचहुंओ

रवेषपरवेषकेमोदेषितहींरहीयेनकहीयेवचनसाजिधायछाडिआ

पनिधिजानिदिसदिसरघुनाथजूकेछत्रतरभ्रमतभ्रमीनिवाजि १०

री जाकोंदेषिकैआँ [illegible] जातिहैलाजिकें चक्रम

निफिरनवाचक्रकीचोकीगानकेजुबाजहैतेदिसदिसहमुद्रनिकों

एकधापजानतहैं याहीतेंछत्रतरभ्रमवोकरतयहलीलोकरतहै

अथ टिल एीन अलकंअलिकंभ्रूकंचिवोकोकिसकंमुखले

षि अहिकटाछंघनंबीजुरीकंकनंभगनविसेषि ११ टी

अलिकमस्तकताकोभाऊटेहोहीहेसोरिकीमांतिवालचंद्रकाक

लंगीय सोरजगीहृषभानसुताअलसीविलसीनिसकुंजविहारी

सूधोचसनो छा डिके

कुंजी=

मुक

फुराहोया

वालचंद्रकावालससिदूरनपसकरदंत॥कुड़ालादिकवरनीयेकपटी

[illegible]

केसवपोंछतअंचलओरतिंपीकसलीकगईमिटकारी वेकलगेपा
कुचवीचनषछतदेषिभईद्दिगहनीलज्यारी मांनोवियोगवराह
हन्योजुगसैलकीसिंधमिंड्गवेफारी १२ टी प्र हनीलज्जाकोअ
भिप्रायकह्यो उ र ऐकतोनेत्रनकीपीकपोंछतिंहीतहांकरीहें
कज्जलकीहूलीकमिटिगई तहांलाजस्हभईहीकिकरजकीमि
टेयासषीदेषिलेहें ह्जेनषछतातेंहनीभई अथ कोन गिने
दो रा संकटसिंहारेवज्रहलहरिकेंनैननेहारि केसवदासवि
कोनमयपावककुंठविचारि १२ क रे लोचनत्रिलोचनकेकेस
वविलोकविधिपावककेकुंडसीत्रिकोणाकीनीधरनी सोधीहेस
धारिप्रद्युमरमपुनीतन्वपकरिकरिसूरनरसहूंदिसकरनी ज्वाल

42A

ज्वालासोजगतजगमसुभगमसुमेरुतांमेंजाकीजोतिहोतिलोकलोक
कमनहरंनी थिरचरजीवहवहोमीयतजुगजुगहोताहोतकालन
जुगतजायवरनी १४ सु म ग्रथ हतु एिने दो सुहेत्रि
वेलभनिगछुंग्ररकुकुदंसाधकेग्रंग कुंभंकुंभकुचंग्रंडंमनिकु
दकैकलससुरंग १५ कुकधहसकोकंध य क त्र परमप्र
वीनग्रतिकोमलरूपालतेरेउरतेंअदितनितवितहिंतकुरीहें
केसोरायकीसोंग्रतिसुदरंअदारंसुभंमलजुंसुहीलंविधेसुरत
सुधारीहें काहू सोनजानेंहसिवोलिनविलोकिजानेंकेवकीमहि
नसाधसूधीवेसवारीहे ऐसेंहोकुचनिसकुचनिनसकानरूसहरि
हियहरनिप्रकृतकोंनेपारीहे १६ सु म ग्रथ छन वर्णने

गोलमोलकों
हाथीकोमस्थव

क वि
प्रि ४३

...मीषलवचनके
...निपछसने
...र छेरछाम
...ीकरत

चौपैओ षरल
ाऊनवाला

43

नषकटाक्षसरड्डुरवचनसेलादिकषरसोन्ह कुचौनातेवंगुननेश्या
जेमतिरतिश्रीतिगुरुकरमोन्ह य क त्र सहथीहष्यारऐनेम्र
न्मोरेअनेककामसरहतेंषरेवलवचनविसेथीये चो न्नवचन
श्रोटकीनेहकपाटकोहभोनमोरेमयअवरेथीये केसोद्दा
मेंत्रोंदेयअजनप्रतिपछरछेलछेलछेवच्चरत्तकनिलेथीये
मेदियनमनेवमेंऊपरकसेईरहेपीरयनोछायलनिछायपेनदे
थीए १८ टी सहथीवरछी गदजेत्रेरोगनिकेजेत्रोऊछनन
छीनहैसकेरत्नजोकरेलाघलाषवज्रनोऊन्हेरत्तकनिजानी
येइहूनकेवचन छायकरेईकरे गुरलाजवणीनेरसकप्रयायां
पहलैतजआरसआरसीदेषेयरीकुचस्याचनसार हिसे पु

निपेछिगुलावनिलेछुफुलेलग्रमोछेमैग्राछेग्रगोछुनके कहि
केसवमैजदवादातेमाजिइजेपरग्राजेमैअंजनदे वहस्याइरिदेषौ
तौदेषिंसषीइहलाजतेलोचनलागीहै टी नायकाहहितहे
मैनायकतौदेषिाइस्केंपकहांदेषालाजतेनेननिलागिय हैमे
ऊपाइलाजछुडामनकेवहूकीयेलाजनछूटी इहतोग्रषंजवा
दिकसूरीकोंकहतहें ३ प्रश्न ऐजुउपाइकीयेयनसारग्रादि
लाजछुडामनके सेकहाइनतेंलाजजातीहैंइहप्रश्नइहाउत्तर
नायकनेइहसुनीहे किउद्दीपनतैंलाजजातिरहतीहे सोइहआ
निकेइनसवउदीपनतैं नेत्रनिसोंलगाऐ ऐतोईमोगपहावऐतीनजा
नीकिउद्दीपनकेदेषैतेंलाजजातिहे कछुग्रोरवनमेडारिवकुल

क वि
प्रि ४४

44

हीं इहमैगधहुवकीअधकाईभासी म कोम वनै पल्लवकुलमंदया
लमनंमाषनंखडुलखाणाल पीटपामरीजीभपर्दप्रेमसुपुन्यंविचार
२० रस प्रिया क त्र मेनरोसेमनकोहमरहु लम्रणालिका
केसूतकी सोसुरधुनिमनिनहहरतिहैं दासोकेसेबीजदात्र
मातुसेअकनहोठकेमोदासदेषिहगआनंदभरतिहैं ऐसीमे ऐ
तेरीमोहिभावतिभलाईजातेरूजतिहोंतोहि औरवरुजतिडरतिहैं
माषनसीजीभमुषकेजसोकोमलकहिकाठसीकठेठीबातेंकैसे
निकरतिहै २१ हरकोकहतहै औरनेत्रनहूकोनामहै कठो
र लोने दो कुचकठौभुजमस्लमनिवरनिवज्रकोमित्र धात
हुहीरहिरहीजनकेचित्त २२ सुरनकेतनसुम मनकाठक

रावि

44A

मठकीपीठ केसबसूखेचर्मअरुहठसहितइजैनदीठ २३ य के
सादासरीरखेजसामनिकोंसदागतिआउकोंअकासहेंप्रकासपाप
भोगीको देहजातिजातरूप रूपकोकुरूपविधुवासरसंजोगीको
बुद्धिनकीवीजुरीहेनेननकोधाराधरछौतीकोवसारखेनखाइन
प्रयोगीको उदरकोवडवाअगिनगेहमांनततहोजानतिहौहीयोंर
काहूंपुत्रसोगीको २४ टी उदाहरनपुत्रसोगीकोहीयेकोंहोयहही
रानाही पुत्रसोगीकोहियराहे औरवाकेअंगतेअसीजाय त्रताम
ईहे वाकेउसासनसोंसदागतिजुहेपवनउपज्योहे आवतेंअका
सहेंसून्यरूपदेहतेजोतरूपपीततालई औरहाडनकेरूपजुहे
सोतेरूपकोंरूपकहीरंगअरुकठोरतादोउहे विधवासर

हाडनकोरूप
हो

क वि
प्रि ४५
45

संजोगीकेविसेषनहै त्रस्नाकोमोहहेदिनजोको वाकेउदरकोवाड
वाग्निगेहहेकहासमुद्रसोंउपज्योहै दुषकोतनमकहेहै मर ग्र
ष स्वल रोतें सतीसमरमटसेतनमनंधमेंग्रधर्मेमित्र जहां
तहांऐवरनीयेकेसवनिस्चलचित्त २५ य क कायमनोवचकामन
लोभमनंमोहनंमोहमहाभयजेता केसववालवहिक्रमहद्दविपत्ति
नहअतिधीरजचेता हैकलमेकरनावरनालयकोंनाहिनेहागेह
परचेता ऐहैसूजमंडलवेधतसूरसतीओरसूरधरेता २६ पं
वल वनितनं तरलतुरंगगतिवानरचलदलपान लोभि
नकेमनंस्यारजनबालककोलविधान १७ कुलटाकुटिकटा
छमनंसपनोंजोवनमीन पंजविद्यालिगजम्भवनवीयामि

के नमोहनहीमोहत कतो
विपतकीव्रध मेंजाकोकाम प्रादनहीमो
कुरंग
हैप्रेसेसमेंमेवीधीरजको चेतेहेकरना केवलुनलेस मुद्रहअ्रैरपै वीकपाकराते सूरसतीअरु परताजोमी

मागनिश्चल है
पिपलके

नंषबनप्रबीन २८ य मोरज्यौंमनलोललललनालजानिप्रति
बंजनसेचलमीनमानौंजहाजलहें सुपनेनहोतकहूंअपनेरोंअ
पनेईमलीरोनअनवेनआककोसोफलहे गहियेधोंकोनगुन
देषतहीरहीरोरीकहियेनकाहूरूपमोहकोमहलहें चपलासी
चमकनिमोहेचारचहूंदिसकान्हकोसनेहचेलैंदलकेसोदलहे
२९ अथ बद रीने दो पंडितप्रजपतिहताविद्यावपुनोमे
सहजहीफलअभिलाष ... कोप्रा
ग स्वहीफलअभिलाषकोसपतिमिश्रजोग ३० दोनमांने
धनंजोगंजयौरागवागंग्रहरूप मुक्तोमामसर्वज्ञतारोहुस्ववदानि
अनूप ३१ य क त पंडितपुत्रसुधीपतिनीजुपतिव्रतपेंम
परायनिभारी जोनेबसेगुनमांनेसबेजगदांनविधानदयाउ

अपनेईजे अपनेकरी है सुपनेमेअपनेनहीहोत मलीरोना होनकेवचनाप

45A

आककोफलरूप होतहे मीत तोनकमाहोतहे

सरीरनिरोग

स

रधारी केसबरोगनिहीसोंविबोगँयोगमहभोगनमेंसुँकारी सोंवि
कहेंजगमांहिलहेजसमुद्रयहेचहवेदविचारी ३२ इब बर न
ने दो पापपराजयरूठहठमठितामरबमित्र वांभनिनेगींरूप
विनुंअसहनसीलचरित्र ३३ आधिव्याधअपमानेरिनपरच्छेर
भोजनवास कन्यासंतजहाहितोवरषाकालप्रवास ३४ कुजने
कुस्वामीकुगतियहकुपुरनवासुंकुनारिं परवसदारिदआद
देरोडुषदानविचारि ३५ वाहनकुचालचोरचाकरचपलचित्त
मित्रमतिहीनसूमस्वामीजरआनीरोंपरघरभोजननिवासवास
कुपुरनिकेसोरसवरषाप्रवासदुषदानियेंपापिनकोसंगअंग
अंगनाअनंगवसअपजसीसतजुजचितहितहानियेमरह

46A

ताकुठाईव्याधिदारिदवुढाईऊँहहीनरकनुलोकहिवखानिये ३६
मेद तिव ने दो कुलतियंहासविलासवुधकौंओधमदमानि
सनिगुरंसारसहंसगजतियगतिमंदवखान ३७ रस प्रिया क
न कोमलविमलमनविमलासीसखीसाथकमलाज्यौंलीनेसाथ
कमलसनालके नूपरकीधुनसुनमोरेकलहंसनकेचौंकचौं
कपरैंचारुचोंजुआमरालके कचनकेभारकुचभारनिमसकुचभा
रलचकुलचलेजातकटतटवालके हरेंहरेंवोलतविलोकतह
तरवज सतहरेंहरेंचलतहरतमनलालके सुगम सुग मीत वने
मलयजदाषकलिंदसुधंओरेमिश्रीमीति पियसंगमयनसारसहि
जलजलरुहहिमसीत ३८ रस प्रिया यो था सीतलसम

क. प्रि
वि ४७
47

मोर रुपरि चंद्र चंद्रकानिवारिकेसोरासरोसेंहींतोहरषिहिरानुहैं फू
लनफलायडारिरुरिडारच्यनसार चंदनकेडरेचितचोगुनोंघिरात
हैं नीरहीनमीनमुरझायजीवेनीरहीतेंछीकेछिरकेकहाधीर
जधरानुहैं पाईहैंजेपीरकिधोंघोहीउपचारकरेंआगकोतोराखोआगग आग
हीसिरानुहैं ४१ अवरार्थतोसुगमहीहैं यामे २ अ ऐकतोचं
द्र चंद्रकामेंचंद्रसब्दअधिकहैं चंद्रकाइतनोंईचाहीयें हूजोप्रश्नह
रषहिरानुहैं हरषविहैनोकेंकहाजोहिराय तोजोप्रश्नचोगुने
कोभाउकहा हूनोदसगुनोकोनकह्यो चोथोप्रश्नसषीअनज
नेहे विरहनीजांनतउसतोकेउपायकरेहैं तोविरहअन्नहीर
ह्योरहांतोप्रकासकोनकवितुहै ऊ २ पहलेचंद्रसब्दकोउत्तर

47A

यानायकाकोउसुताजानसषीसीतलउपचारकरतिहें सोएकसषी
तोंवहतउसुताजानिआगनेमेलावतिहेंचंदकोंदिषावतिहे एकक
हतिहेंनिपटसीतलतातेंकछूऔरनहोवजायसेंहरतेंचांदनोदिषा
वतिहें तवनायकाइहकहतीहेजिनचंददिषायोजिनचंद्रकादि
षायोचंदअरुचंद्रकातातेंदोउजेनिवारो न्यारीकरोइहअर्थ हर
षकाहाहेइहहूजोअर्थप्रश्न याकोउत्तरविरहमेंदसदसाहोतिहें
तोंहांयाकोआतिदसाहतीध्यानमेपियकोंमिलतिहोसोहरषहुमो
सषिनकेहलाएचलाएध्यानछूट्यो कवहूंचांदनीमेलामे क
वहूंचंदनलगामेंयातेध्यानछूटिगियो तीजोप्रश्न चोथुनेभा
वकोउत्तरकोईकहतहेवकारकीअदरमेंत्रीहें तोचकारतोचो

क प्रि वि ४८

48

दहचौवीसओरकूंठौहेंसोईकोंनकहें इहउत्तरनीकोनांही चंदन
काशीतउष्णगनवहुतवडातहैं इहउत्तरदेतहेंसोयहकछुनांही चौ
गनोईअगुवडेहैंकाष्ठतोइहनयमनांही सिद्धांतउत्तरऐकतोवि
रहनायककोहेहीप्रथमपीरतोइहोइ जोपीरध्याननमेंउदीपनउपा
यविरोधहे तीजिसवीकीक्रूरताकोंदुष्ययातचौगुनीपीरकही तांहां
यामेंऐकप्रश्नहें उपायविरोधकरनहीमेंसवीकीक्रूरतानिकसी
तोऐक्रूरताअसविरोधउपायऐकहीहें तांहांकहीएतेसकहीये
कोउ वाहिरकोवैद्य पितउवमेपीपरउसदेयतोउसवडेइहोइदुष्य
होय वावैद्यकीक्रूरताकोदुष्यनहोय क्योंकि चरकोवैद्यविरोध
उपायकरेतोदोउदुष्यहोहिविरोधउपायकोओरक्रूरताको तेसे

48A

सखीआपनीहें यातेंदोऊदुखभये चोथोप्रश्नसखीवहरंगहें वि
रहनहींजान्योतोप्रकासकेसेवने तहांउत्तरकहियेजहविहरंगको
नायकाहीनेजतायदियो नीरहीनमीनयासब्दकरिकेमेनायक
विछुडोहों औररहनोकह्योप्रानकोतोडाह्योअंगहीरामुहेकही
केनायकहींकेनायकहीकेआयेपीरमिटेगीयोप्रकासभयो अथ
सवनेदोरिपुप्रतापंदुरवचनतपतोंविरहसंताप सूरजअंग्र
गनेवयासिंहुसतरसोपापविलाप औरा चेह यो क त
केसोदासनीदंभरुवंध्यासजपहासंत्रासंदुयकेनिवासंविषमुषहेगहे
परे वाउकोवहिनवनदावाकोदहनवडीवडवाअनलज्वालजालमें
रहोपरे जीरननजनमेंजाततजोरजुरकोरपरहरनप्रगटप्रेपकेरा

ज्वरीकीआग

तपन धूप

निंदाकेसहाजहां
किसीकीहाहाहोवे

जीरनजनमन्निद्धअवस्यातामेजातकाजोजवज्याहेजोरकाजोरकेसहतज्वरताप
ह्रोरभयानकताषोपरपरन...

(रूपकोतप)
कह्योपरे महिहोतपनतापपरकेप्रतापुररघुनाथकोविरहवीरमोयेन
(कुवेरकेपुत्र)
सह्योपरे ४२ स्रग अथ स्वरूप ऐने नलेनलकूवरंसुरमि
वजुहरसुतमदननिहारि दमयंतीसीतादितियहेवररूपविचा
रि ४३ राम इका क त्र कोहेदमयंतीइंद्रमतीरतिरंतिदि
नहोयनछबीलीछिनछबिजोसिंगारये केसवलजातजसजात
(अगे)
जगतवेदंआपजातरूपवापुरेविरूपसेनिहारिये मदननिरूप
(कवेवर)
निरूपमेंतनिरूपभयेचंदवहुरूपअनरूपकेविचारीये सीतज
(श्रेष्ठ) (तेत्व)
केरूपपरदेवताकरूपसेहेरूपहीकेरूपकेतोवारवारडारीये
४४ दो निरूपमतिनकोउपमानांहीतेजनिरूपभये अथ
रस्व व ने झिगुरसांपजलूकअजमहिषीकोलंबयाति

प्रद्युमन

रूपजोहैम्ह
नेमानताकोरू
पवारडारीए

अस्वनीकुमार

कामदेवनिरू
पनकरजेहैओनमे
रूपमउपमा
नकोतेनिरूप
भयेअगहीनहे
गये

हकल्यारी इव मे हुंडारव कह तहे

गावमैन हीआवे ऊठ

49A

कालका कहक करंभ षरस्वानक्रूरस्वरजांनि य मिलीतेंरसीलींजी लीरटेहं कीरटि लीलीस्यारतेंसवाई मजभामतीतेंआगरी केसोदा समेसनकीभामीनेंसेभासेभामसवरीतेंसुरीसी घुनजूटजेअजागरी मेडुनकीमोहीमेडअ्रो डन्योरानारिनकीवाकहंतेंबानीकारीकभा नेकोगरी स्करीस कुचसंककूकरीहूंम कभई चुंचुकीचरनीको हेमोहेनागनागरी ४६ सग सस व ने कलिरविंकेकीको किलासकंसारो कलहंस जत्रीकेठनआदिदेसभसुरहूंदमि वंस ४७ केठतोसवसलैरहीहेजत ताहांकोनसेकंठजिनकेसह रहे यथा वित्त केकनिकीकेकासुनिकांकेनमन रणतमनम नेपमनो रणेपंथसोहीये कोकिलाकोकाकिलीनकलित मनमथको जोमनोरथ वाहसोहैरथ ताको पथहोभनतहे याहीमेकामको अभिलाष दोरतहे

याकी वानी राटेहकी रटेहवे मोरटिलि रिवानी लीलीति कोलगई याकी जीलीना नी की

बुरी है

ओडकाम रोरडा सीही न्योरांकीर मासीआंकी

चातक

म

क वि
प्रि प०
50

ललितवागदेखजहीं अनुरागऊरअरोहीये = कोकिनकीकारिकाकह
जसुकमारिकानिकेसोदासनारिकाकुमारिकाहूंमोहीयें
[illegible] केकामोरकीवानीका
कलीकोमलध्वनि अथ धुर एंने मधुरप्रियधरंसोमकरंमा
यनंदाबसमान बालकवातेंजोतरींकविकुलऊतंप्रमान ४४
महस्रांमिश्रींहृधचूतंअतिसिंगाररसमिश्र केसवरूपरूव
गनिकेवलसाचेइवे ५० रस प्रिया स या बारिबबातन
दासोहूंदाबनेमाबनहूंसहमेटीइठाई केसवरूपरूपबहूंहू
बितआईहोतोपहछांडिजिठाई जोरदछंदकोरसरंचकचा
बिगयेकरिकेयाहूंडिठाई जादिनेजेऊनराबीजठाइसमेतिस

हंसमालकीलगतिमानकीजतारमाय
कोतिसंगलगलतेसिंगिवाएकोलिप

50A

धावसुधाकोमिठाई ५१ सवकीमिसृत्ताहोऊदासरोकरदनुछदहीमि
सृत्तामेंमनवसोहे श्रथ वल ऐनं पंगुंगुंगंदेगींवनिकंभीतमखं वानीस्रा
मयंजानि अंधंश्रनाथंश्र(वकरा)जोंदिंसिसुंश्रवलंश्रवलवषानि ५२ य
यातनंश्रयातसवजगतषवावतुहैंद्रोपदीकेसाकपातर्थतहीं येनेहों श्र
केसोदासनृपतिसुताकेसमुभाइभरोवोरतेंचतुरभुजचहूंचक्रजोत
हैं मागनेऊं(वेसरोजा)होरपॉलंदासंहूतेसुजसुनोकाठमाहिकोनपाठवेदन
वषानेहैं श्रोरहैश्रनाथनकोनाथकोजूरयुनाथतुमतोश्रनाथ
नकेहाथहिविकानेहैं ५२ टी वा इहांश्रवलकोउदाहरनद्रोप
दीकोवर्णनभीतनुजतहूंश्रवलाहूंश्रोसेन्नृपतसुताकेसहायभरोच
तुभुजरूपधरिकें राजकंन्याकेविस्नुहीकोनेतुहोंवरिवेको

सेनम गतनकोरु
१५ रकेरानकी
हूजामनकरीवा
कूरस पाउम
हूतकर जा
थनकेपास मेंद
जेहै

ताहाकोऊ पुंछ विस्सकोमसरूपधरिआवतहो। तवराजानेकन्यासोंकही
तहासुत्रसोंविज्ञप्तिकीनोहमारीविजयकरें तवुबापुरुषमेंअरुका
टकेगरुडमेंआयप्रवेसकरि राजाकोसंकटकाटे। इहकथाहै
अरुकाशुदिकीप्रतमामेंकेतैमकतनकेआधीनहोयहुसूचनको
या अथ लिखु ऐौन पवनंपवनकोपतंगिनपमेवसुरस
साल कोमंभीमवालीहलैवलिराजाप्रणुकाल ५४ सिंहवराहं
गयंदगुरंसेषसतीसवनारं गुरुडवेदमातापितावलीअहहवि
चार ५५ य वालिवध्योवलिराऊबंध्योकरमूलीकेसूलकप
लथलीहे कामजसोजगकालपरयोबंदैसैधरयोविषहालाहली
हैं सिंघुमथ्योंकिलैकालीनथ्योंकहिकेसवरेइकुचालचलीहैं

जव सीताजीराव
नकेवंदिमेंगईत
वजगतमेकालप
सो

पि छले
कर्म

डगका डगनन होइग मेवाचलत है सरेडर को अर्जुन रातेनकोई डर स्थान पर जहे अर्थ विके कोई दिवलेन है ठग की कर
चोरी करा को तां होतं डर वैका भयकर के डर निकया कहुके डिग का डग मार्ग जहे को पते हे

रामहें की हरीरामन कामं चहें जुग ऐक अहह वली हिं ६ टी क
पाल बस लसें छूटत नांहीरामनने हैं अह हहरी हरि रामको काम
यहीअहह अथ स्पर वर न केसब वासो वेद कोमनक
म वचन विचार सांचो ऐक अहह हरि सूं ठो सब संसार ५० य
हाथीन साथी न घोरे न चेरे न गाम न ठाऊं को ठज विले हें गात
न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न अंग हैं संग न रेहें के सब काम को
राम विसार तअरि न का मन का महि अहे चेत रे चेत अजों चित अ
तरं अंत को अंत अके लो ई जैहें ५८ गीता क त अनहीं ठि
कां ठग जाने न कुठोरं ताहीं पे ठग बेठे लें जाही को ठगत हें यां
के को डुरं निडरे डग गां निडग गति डर डर कैडर निं डिग डे डी जो डगत

अदिय करि अह
परमेश्वर रोसांच

विनाट कानें को ठग
ठेलध काकर
जोराव रीआवध
ठगत हे

जमलोक
को

भगवानपे
हु ससीवन
यनेमना
से सिवजी
पेआक ध
हे चा

क वि
त्रि ५१
51

जवसीताजीराव
नकेवटिमेगईत
वजआतमेंकालप
सो

नाहाकोऊपुर्वविस्यकोसरूपधरिआवतहो। तवराजानेकंन्यासेंकही
तुहस्जरजसेंविजसिकीनाहमारीविजयकरें तबुबापुरस [illegible] का
टकेगरुडमेंआयप्रवेसकरि राजाकोसंकटकाटा [illegible] ह
अरुकाआदिकीप्रतमामेंकेतेमक [illegible] धीनहै [illegible] नकी
या अथ लिष्ये तीन पवनं [illegible] कोप [illegible] सरस
साल कोमंभीमवालीहलेवलि [illegible] काल [illegible] बराह
गयंदगुरसेषसतीसवनारे गु [illegible] आरुह विश्वे
चार ५५ य वालिवधोव [illegible] कमलसकट
लथलीहे कामजसेजगव [illegible] षहाला
हैं सिंधुमथ्योकिलैकाली [illegible]

डगकाडगनन हाडग गकाचलत हूं रहेडरकौ अर्थ जरहेन रकोई डर आन पर तहे अर्थ कि कोई दिखलेत है ठगी कर
चारी कुराको तांहां डर कै का भय कर केडरनि का हूं कै डिग का डगमगी तहे कांपते है

रामहूंकीहरीरामनकामचहूंजुगएेकअहरवलीहैं ६ टी क
पालत्रसलेसेोच्छूटतनांहीरामननेहूंअहरहरीहारिरामकीकाम
यहीअहरू अथ स्मरू वर न केसवचासोवेदकोंमनक्र
मवचनविचार सांचोएकअद्रष्टहरिसूंठोसवसंसार ५० य
हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगामनठाऊंकोठजविलेहैं गात
नमातनपुत्रनमित्रनवित्तनअंगहूंसंगनरेहैं केसवकामको
रामविसारतअोरनकामनकामहिअैहैं चेतरेचतअजौंचित्तअं
तरअंतकोअंतअकेलोईजैहैं ५८ गीता क त अनहीठि
ककौठगजानेनकुठोरंगाहीपेठगावेठेलंजाहीकोठगतुहैं यां
केगोदुरंनिडरडगांनिडगजिडरडरकैडरनिडगडेडीज्योडगत

जैसे डेंडी छूटी वेहूं डगत है डगमगात हे

अदिष्ठ कर्म अरह परमेश्वर तो हां चे

विनाट कानेको ठग ठेलव कोकर जोरावरी आव धष्ट ठगत है

किंवा मनमय आलवाल में थलज जो जलज स्थलकमल जेसें सोहत हे रवमूर्य जेसें प्रापने मंडल में सोहत हें त्यों ऐसे
सोहत हे सविसेष अंस सबे सजो परवेष तामे जेसें सुवेष सोम सोभत हे सविसेष को अर्थ सदा कोन ही सरद को जो
अंस षरे सपरवेष अंस षसंपूर्न हे र याजामे कोई और खंडत न ही होय अंस जो परवेष मंडल तामे जेसे सु
वेष सब कला परपूर्न सोम चंद्रमा जेसें सोभत हे ते से सोभत मये सुषदानी की श्रीमा श्री हप्य किंवा सर

हे ऐसे विसवासतें ऊ दास होत के सो दास के सेंन मनन मन का हे कों थके गुरु हें
मठो हे रे सूठे जग राम कीड हीरे का हूसं च को व ना यो जा नें सं चो सो
सो लगतु हे ५४ अथ इल गने केसव कुंडिल मंड्र का वले
मनमय आलवाल थल जल जलज रवि मंडल में जेसें मति मोहे कवि
तान की जेसें सविसेष परिवेष बेरे अंस सषसोभित सुवेष सोम सी
मा सुषदानी की जेसें वंक लोचन के लिन कर कंकन निवलित ल
लित दंत प्रगट प्रभान की ६१ टी मनिमय थाल ले में जेसें थलज
कमल और रवि मंडल में जेसें कंवल अगस तेत या अ
गति सिंधु गिर ताल तर वापी कूप वषांनि ६२ रस प्रिया क
त्र पंथ नथ कत तपल मनोरथ रथ पनके के सो दास जग मग जेसें ग

दुको जो परवेष तामें अंस षरे बजो सोम अंस षसंपूर्न हे रेषा कलाज जाको रेषा कला को मी ऊहत न हे
सो जेसें सोभत हे चंद्रमा के सोहे लवे षहे लंदुजाको वे षस्थान हे छीर समुद्र

महा नदी
नदे पप्पज
गप वृतस.
दागति जो
गिर ५२

52

ऐगीतमें पवनविचारचक्रचक्रमनिचित्तचहिमरजलश्रकासभ्रमें
घामजलसीतमें कोलोराषोथिरवपुवापीकूपसरसमहरिवि
नकीनेवहुवासरविसीतमें ग्यानगिरफोरितोरिलाजतरुजायनि
लोआपहीतेंआपकाज्यौंआपनिधिप्रीतमें ६२ टी जूहानायकाआ
पनेमनसोंकहितिहे किमनोरथकेरथरातिदिनचलतिहें इन
केमार्गथाकेतनाही जेसेजगमेमगमीतमेंकहागायानमें सा
खनिमेंकहाकीयकवहूंथकतनाहीसोथेरथकेसेहे पवनकेवि
चारजुहेतेईयाकेचक्रहें पेयाहें पवनकेअधऊर्धस्वासअधव
नासास्वासचक्रमनिसारथीसोचित्तभयो सोभ्रमतुहेसदातोमन
कीतोइहअवध्याहे तोयातनकोंकोलोंथिरराखें वापीकावरी

क वि
प्रि ५३
लि
53

कृस्यासरकेसमतौ अपनौ आपगा नदीके समहैजे जेसेनदीसमुद्र
कोंजाइमिलतिहै मेज्ञानरूपीगिरतांकोफोरिजाइमिलै लाजरूपीन
रुकोंतोरिजाइमिलेंआपनेधिजुहैप्रीतमतांकोमिलें मू. अथ
स्त्री
निव नं गौरिगिरीसगनेसंविधिगिरांसहैनकोईस चिंतामनिस
पृथ्वी लछमी
रहछुगौजगमातांजगदीस ६४ रामचंद्रहरिचंदनलेपरमरामं
दवहनं केसवदासदधीचप्रथुवलिंसुवभीषनंकनं ६५ भोजां
विक्रमाजीतनलपजजदेवंरणधीर दाननिहूंकेदानदिनअमरसिंह
वरवीर ६६ मूग गौरि दान पा पावकफनिविषभस्ममुख
हरपवर्गमयमाति देतजुहैंअपवर्गकोपारवतीपतिजांनि ६७ प्र
श्न रहोमाहादेवजूकोदानसोवरनिनहैं पार्वतीकोदानकेसे

53A

उ र पार्वतीअर्धांगमेंहैं यातेहरकेपवर्गमयहै अरुदेतहैं अप
वर्गकोइहरीतिअरुइतिहैहेपतियोजानीयेकोउ उ स्त्रीपतिसोंकह
तहैं अथ ऐस दान मर्व कायो वालकमनालतिनजैसें
तोरिडारेसवकालकठिनकरालवेअकालदीहडुषको विपति
हरितिहठपद्मिनकेपत्रसमपंकजसोंपतालपैलिपुठवेकलुषको
हरीकैकलंकरंकमभवसीमससिंमेरावतहैकेसोदासकेवपुको सं
वरेकीसोकरनिसनमुषहोतहीतोदसमुषमुषजोवेगमुषमुषको
टी प्रश्न वालकज्यौंतोरतजहांनहिवि[illegible]क्रमअधिकार ज्यों
अतिवलीमनालकोंतोरेजोमनभाइ उ र तोह्यवालकस
मनालकोंलेषोविसेषनचित्र वालमनालकहरहेसह्यमण

रतहेंअस्तगजहं
भाव कोंहरै
54

पतकेहठकोहरतहेंअोर

लसमिति ६८ गजमुषकेवर्णनविषेगजकुयानकोंभासपंकजपं
कजुसाकरेषंडनकलकप्रकास ७० अर्थवि विरेकभावर्णकोंह
रिकैरेहेहसीवंदकहावेअोरवेदासकेवपुकोराषतिहे इहांमहावन
केसरीरकोसोभासोराषतहे सनमुषहोतहोगजमुषमुषकोस
केरकोसोकरभाजेदसमुषकुहादसोदिसानकुंअषदेषेजाइक्यो
कहादसोदिसाकोजाहि ईहां स सोकरनेपदनवनें सोक
रनिकोरहअर्थभासे सोकरेइहपद चाहिये सोकरेकोकहाव
हकीसोकरेदसोदिसाकोजाइदेषेज्योंचाहिए तांहायाभांतिअ
र्थकीजे सोकरेकीसोकरनकोकहकीसोकरनिकोदसदिसाके
मुषरेषे कहाकिएसोकरेकितअोरकोंआवेगोअैसेवेदिसाके

ऐसे हम्मारह देवके ऐकावृक सीस रोवात श्रवत सुनके ऐत नाभ यो एक वस्तजोहै ब्रह्माड सोकाहूकौ देत चा तहै समुद्र को मा
जाकोदेयगो सोहमारे मै तेरतनका हलेयगो गनपत सुधिनजान्यो जहि काहूकोदेयगो सोहमारे मोहैकाज मिर त सोजललनो फेर
चौमासे मे चेही रा दे नो प्रकास करनो हमारी पूजा इत्यादि काहेको रा षेगो जाको ब्रह्माड होयगो सो

वे दीजन मुषदेष रहतहै सोकरनको याभांति
वर्णकीजे अणवारसमुषकहीये ब्रह्मा विसु महेस तेउ कहू
की सोकरनमनमुषहोतहीगजमुषके मुषकी ओर निहारे
मू सिव तान था कोपि उठ्यो आपपति त्रपनेह तापचढी
सीरी गत भई रजनीसको अजहूं न ऊ चो चाहे अनले मतेन
मुषलागिरहीलाजिमनमानों दससीसकी छविसो छवीली
छुछानीमें छिपाइ हुरे छुटि गई तान छवि कोरि हूं तेतीम
की केसोदास मोहीकालकोरोई है गयाकाल सुनत श्रवनके सीस
एकई सको ६४ विध तानि आसीविषराषिसतिरैपाताति
देषतालसुरनेनरनिदियोदिवंभ निकेतुहे पिरचरजीवन

सहीस्त येकरलेयगो
कंवा हमारो काजेगा
पहीकरेगोया फिवर
सोतपनकोमनोदष
कीताप चढीहै ऐसे
रजनीस चन्द्रमा
दिको अपकारहूं
वेको वषजानी
यतुहै ता
पुरानमे वचन
है अमनको नीचे
मुषहै मलनमुष
अधकारजसादिक
छूटवे सो घ्राणोप
सिधहे लहललमी
कालमे रहमेहे ता
कोलिके भगवान छु
नी सो छिपाई जो
सिवजी नेका
दीआ तो जेती सिकोठ
देव ता रन कसलाव

54A

क वि
प्रि· ५५

वलीहोई

लसमिति ६४ गजमुखमे... सुद्वतिमुद्रतरामसुविप्रनवा
कजुसाकरेवर... मानसमुद्रतिमुद्रतरामसुविप्रनवानतिविरु
...ननेजोजीवधनुववानतिविरु
...मावरहैयाकोसुषि राम
...

...वावज वकवजहजानियनि...
...वानीजगरानीकोउद...
...कानकोभई देवताप्रसिद्धरिषि...
...सवकहिनकोहलई भावीम्हजवतिमानजगनव...
...कोहवावके हनवबानिकोहेपरई वेरीपितुचरिमुषपुत्र...
...पाचमुषनातावर्णवरमुषजदिपिनईनई ७१ सुग स्य
दान वधिकविविधिव्याधितिविधिसुधिकसुधिवेदजपवेर
वधुवेधनुविधानुहे जगपारावारपारकरतसुपारनरपछ

...देखहे जीवकोउपरांतसोरदेनोवहाहे हीतवायप्राद्धिकोकालदीग्राहे हीतपोनसीतकाल...

५५

केसोदासरांमरांमरटतुहे पुनरजाकोनहीडरत तोकहा चम

56A

देहिनेफेरनेदरसनकौनहीसमुझनकहाएकरूपताहै जानिहै द्वि
तियभावजाननतनाही प्र त्कारयामेंकहा उ र वेदनेनिने
तिकहतिहे तोवेरहुपुनरजासोनहीडरेया नेतिनेतिकहतुहे
माहीतेकहेजानिरहकेसोदासरहजानकेनहीडरत मू पु न
ग्या जोसतयग्यकरेंकरिइंद्रकोसाप्रियताकपिपुंजकोदीनी ईस
लंकविभीषनप्रेमसेहीदीनी दानकयारह
तेपातहरधरेजनकीसे

भावीजो संसार मे होवे पुरसम्रताजो होचुके है वर्तमान जे है जगत मे
सोवषान तहे परवषानीन का हय मेनेगई
और कहै

क वि
प्रि ५५

सर्पकोअरु ब्रह्मा को
अरु देवनकोईनको तो
पतालदी आअरु
वताको आमानुषा
नको स्वर्ग अरु
भूमि चरदीय अर
थिर चरजीवनको
तेऊपजी कादीनी
हैनेकैओर ओसाको
इकतारेतहे अब व
र्तमानजुगमे तवभ
तेजुगमे जवकवु ज
वकोईकवीउपजेगो
तवदेयगो याभे भवि
ष्यतजुग जाहातु
है किसीठौरमै प्र
सीवि मसो पपताल
भैर हते होइपार
तिकेत र हतजी
वकोदीनीतुमकोदि
नेको और कोईकहे

कोरीनी हत्वकेसोदाससरीवेक हूँको ऊकहाहेतुहे सोतवातजेउ
तेजआवतसमयपायुकाहेयेननाकीजाउओसीसकसेतुहे अ
वतवजवकवजहाँजानियतविधहींकोदीनोसवहीकोदेतुहे ८
गिरा दान वानीजगरानीकोउदारतावषानीजाय ऐसी मतिकेस
वउदारकोनकीभई देवताप्रसिद्ध रिषिराजतपहृदकहिकोहै
रेसवकहिनकोहलई भावीभूतवर्तमानजगतवषानतुहे
केसोदासकैहूनवषानीकाहूपेगई वरणीपितुचारिमुखपुत्रब
र्णेपांचमुखनातीवर्णेषटमुखतजदिपिनईनई ८१ सुत सूर्य
दान वाधकविविधिव्याधिविविधिअधिकआधिवेदउपवेद
वधुवेधतुविधानुहे जगपारावारपारकरतअपारनरम

वेतहे जीवकाअउपरांतसोरदेनोकहाहेसीतवायआदिकोकालदीम्रोहे सीतपोनसीतकाल

५५

55A

कपरमपदप्रावतप्रमानुहे पुरुषपुरानकहेपुरुषपुरानसवएरनपु
रानसुनिनिर्मनदानुहे भोगमानभागमानभगतिनभगवानक
रिवेकोकेसोदासमानभगमानहें ७२ टी वेदमेंअरुअपवेदमे संसारके
वंधनकेवधिकीविधिपर्ईकहेहैं कहज्जगतकेवंधनोकूहरिकर
नुहें पुरषपुरानेलोमर्सआदिकजिनकोपुरानपुरषकहेहै
औरएरनपुरानकहाअठारहपुरानपुरानेोमेंसुनेहै किनिय
मकेकारनहें अरुभगततनिकोंभगमोनहंकरें भेगमानिं भाग
वानहकरें औसेभानुभगर्मनिहे पर राम हान जोधरमो
हरनंवहरीवरजञ्जवराहकिडाइलईजर दानिवमानवदे भा
वनिकेजुतपोवलकेहंहापभईजर जालगिकेसबैरथमो

वलीहोई

भवपारथजीवनहेजुवईजू सातसमुद्रनिमुद्रातरामसुविप्रनवा
रअनेकदेजू ७३ टी पारथअर्जुननेजोजीवधनुषवाननिविद्ध
दियेअमेजेसेंवीजवोईयतहे यांजेंजीवनिसोंवईहैयाकोअर्थ राम
हूको नरा चेद्र एरनपुरानऔरपुरवपुरानपरिएरनव
तामेनवतामेंओरअज्ञकों दरसनदेतजिनेदरसनसमुझेननै
तिनेतिकहेंवेदछडिमेदिअक्तिकों जानइहेकेसोदासअनुदिन
रामरामरटतरहतनडरतपुनिरक्तिकों रूपदेउअनिमाहगुवि
देयगरिमाहमहिमाहिदेयभक्तनामदेयमुक्तिकों ७४ पूरन
पुरानसवपुरानअरुपुरवपुरानलोभसंआदिपरएर नहीक
हिकेचुपव्हैरहे ओरजुकननहीकहत अराहरिजजिहेदरसन

केसोदासरांमरांमरटतुहे पुनरजन्मकोनहीडरत तोकह चम

56A

देहितेफेरतेदरसनकौनहीसुमुजतेकहाऐकरूपताहेजातिहे द्वि
तियभावजानततनाही प्र त्कारयामेंकहा ३ र वेदनेतिने
तिकहतिहे तोवेदहूपुनरजन्मसोनहीडरेया नेतिनेतिकहतुहे
माहीतिकतोजानिरहकेसोदासरहजानकेनहीडरत म्म पु न
स या जोमतयग्यकरेंकरिइंद्रकोसोप्रियताकपिएजकोदीनी ईस
दईजुदरऐदसहीसस्सेलंकविभीषनश्रेसेहीदीनी दानकयारहु
वीरकीकेसवकोवरनेंरसश्रद्धतुभीनी जोगतजरूरधरेतनकोसो
नोश्रोधकेसूकरकूकरलीनी ७५ सुग विल्लि दान के
ह मसोनरकासुरसोपलमेंमधुकैटभसोजिनमारयो लोकच
तुर्दससरदुकेसवपूरनवेदपुरानविचारयो श्रीकमलाकु

क वि
प्रे ४७
57

करताकेकरता
व्रह्माकेकरता

चकुंकम मेडितपंडगिरेवग्गरेवनिहारेग्या सोकरमांगनकोंवलिपें
करतारहूंकैंकरतारपसारेग्या ७६ टीका स करकीजेहावील
हगावरनीवहविधहोय तहांकुचकुंकमकीकहनश्रभिप्रायकहू
होय अ र जाचनकेमयेविषेंइहञ्रतिपुहसुत्रर्थ जिनकेके
मलासीतहनितेजाचतजुसमर्थ २ इंद्र तेको न कारेकोंर
तमकेसप्रीतमसधारेविधिवारिवारिङारेगिरकेसोदासभाखेहैं
घोरेघोरेवदनकपोलयसेपलेडेलेजलयलचलथांनसुतोंना
खेहै हंटाठननातच्छननातच्छनेहुंहुरनिभोरमनेनातमवप
तिश्रभिलाखैहैं इजेनदरिद्रुदीहदसनिविदारेरेकोंइंद्रजोत
हाथीजोहप्पारकरिराखेहै ७६ वल रको नव नं

पापकेपुंजपखावजकेसवसोषकेसँसनेसुवमामे रूठकेजालरझांझि
ग्रलोककेंग्रावजरूपनजातजमामे भेरकेभेरवडेडरकेडफकोतु
कभोकलिकेकुरमामे रूजतहींवरबीरवजेवहुदमरिदकेदरबारद
मामें ७७ सुग हैं इति नान सह राम रचि यांक
प्रियां कायां हत मंच कायां एमले रव नेना बढ़
प्र स ६ अथ मिम्र न लीनं देसनगरवनबागगिरिग्रा
श्रमंसरितांसं रविंससिसागरमभमिकेमखतेरितुसवकाल १ अथ
सव नवं रत्नखानिपसुपंछिंवसुवसनसुगंधसुदेस नदीन
गरंग हंवरनीयेंभाषांमखेनवेस २ य आछेआछेग्रसनवसनवस
वासुपसुदानसनमानजानेवाहनवखानीये लोगभोगजोगभागवा

जानपालकीआदिवाहनहाथीघोड़ेआदि

गोरांगरूपज्युतभूपनतिमधितेसभायामुपजानीये सातोपुरीतीरथ
सरितसबगंगादिककेसोदासपूरनपुरानगुनगानीयें गोपाचल
ऐसेंगढराजरामसिंहजूकोदेसनिकीमनिमध्यदेस — हीकोमानी
ये २ नग वर ने मू दो रा षाईकोटंअटाधुजावापीकूप
तडाग वारिनारिअसतीसतीवरनहूनगरसभाग य वहंभ
गवागवनमानहूंसद्यनद्यनसोभाकोसीसालाहंसमालासोसरि
तवरि जूवीजूचीमूटनिपताकाअतिजूचीमानोकोसिककीकीनी
गगयेलेवेतरलतरं आपनेसुबनिआगेंनीदतनरिदओरद्य
रवरदेषितदेवतासेनारीनर केसोदासत्रासजहांकेवलअवि
श्रहंकोवारीऐनगरसवओरछेनगरपर ५ कोसिकविस्वामि

सुरभीवनगजऋष्याजिनकेचोरहोतेहें
इभहाथी जल

58A त्र अथ नव ने सुरभीइंदवनजीववहंम तंप्रेतभयभीरं भिल्ल
भवनवल्लीविटपेरवंधवंनेहधीर ६ य केसोदासअोइछेकेआ
सपासतीसकोसतुंगारन्यनामवनबेरीकोअतीतहे विधिकोसेवं
धवरवारनवलितवाद्यवानरवराहवहुभिल्लकोअभीतहे जम
कीजमातुसीकिर्जववंतकेसोदलमाहधमुषदसछरीछनिकोमी
तहें अचलअनलवंतसिंधुसोसरितज्जतसंभुकोसोजराजरटपुर
मधुनीतहें ० टी विधकोहंसरोवंधुहे क्योंकि विधिकेअश्वहे
सोयाहमेंबाति सादि अश्वहैं जमकीजिमातसी किजामवंतकोद
लकमसोकहीयें महिषनकोसुषदहै वनजमकीजमातमाति हे
महिषनकोसुषदहेक्योंकिजमकेवाहनहै अरुवनकेसोसोहेस्वाद

59

रिछनिकोमीतहै जहांरिछस्वेछाचारीवहतहै मानोजामवंत
कोदलहै जामवंतकेदलमेंरिछवहतहै फेरवनकेसोहै अच
लपहारहैजामें अनलअनिलसिधुहैमानो सिंधुहूमेंअचलअन
लहै फेरवनपरमपुनीतहैं संमकोजटाजूटहैं किधोंजटाजूट
हूपरमपुनीतहैं सिंहाविलोकनिहैं अर्थकीविधजानोये गिर
वर्णन स. दो रा तुंगशृंगदीरघदरीसिद्धसुंदरीधात सु
रंनरंजतिगिरवरनीयेओषधानिर्झरपात श्रीरा चंद्र या क
रैचंद्रकीनेतेरेअरिकुलअकेलाईमेरकेसमानिआनिअचलें
चरीनमें सारोसुकहंसपिककोकिलकपोतमृगकेसोदासकहूंये
हैंकलमकरीनमें कहूहारहूटेराजेपीरेपट छूटेफूटेहेसेंग

अरनेकापात
चलना

शिवको सदन कैसो है मृगराज गाम हे मसे गजको वि... बन है और पसको
नाम भी है गजपस जोगनी को म नहे घछुनी जोगनी ...
सुरभ ... महादेवको वाहन सोवो ... परसपर वालक ...

धर्यौं अवतौरीनमें देखियत सिषर सिषर पर देवता से सुंदर कुमर
अरु सुंदरि देवरीनिमें ९ आश्रम ऐते दो होम धूम छुतंव
ऐंये ब्रह्म घोष मुनिवास सिंह्यादिकं मृग मोर खहिर मंसुभ वैर
विनास १० और चंद्रका क त केसोदास मृग जव छौरू चूषे वा
घनीन्हु चाटत सुरभि वाघ्र बालक वदन हें सिंघन की सटा ऐंचे कलभ
करन कर सिंहन को आसन गइंद के वदन हें फनी के फनन पर ना
चत मुदित मोर क्रोध न विरोध जहां मदन मर्दन हें वानर फिरत डोरे
डोरे अंध तापसनि रिषि को निवास किधें सिव को सदन हें ११ सुगम
हे अपदी व नं जलचर जलज जल जात य यज्ञकुंड मन वा
त स्नान दान पावन दी: वर्णत केसव दास १२ विग्पा गीता

दांत मोर के है और सो वालक वते कारन के वाहन मोर रसिक के भ घन ... नाचत है सो ...

सोभायमान है

क त ओडछैतीरतरंगनिवेंतवेताहितरेनरकेसवकोहै अ
र्जुनवाहप्रवाहप्रवोधितरेवाज्यों राजनकीरजसोहैं जोतजगे
जमुनासीलगेंजगलोचनलालितपापवियोहैं सूरसुतासम
संगमतुंगतरंगतरंगितगंगसीसोहैं १२ ईहांओडछैमेंवेंत
वेमेंअर्जुनद्योनामानप्रवाहकरफेरतहै तिनकीवाहकर
जान्योजातहै किअैसोप्रवाहहेरेवाज्योंहैं रेवाकेसीहै अर्जु
नसहस्राअर्जुनताकीवाहुनिकरिजान्योहै अर्जुनद्योअर
सहस्रार्जुनदोऊ राजानकीरजसोंसोहतहैं कहाअनेकन
पसंगहैजाके फिरवेंतवेकेसीहैजोतिजगेहै जाकीजगके
लोचननिमेंहैं सूरसुताजाकीपापिनिकोहरकरेहै जमुना

60A

सीलगेहै जमुनाकेसीहैजगलोचनसूयेतिनकरिललितहै क
हिलइाइहैं सूरजोतजगेहै पापनासेहै फेरवेतवेकैसीहै सू
रजसुताकोसंगमभयोहै। जासेंगंगाहेमानोगंगाकेसीहे सूर
जसुताकोसंगमहेजहा स्रुव गव नें ललितलतांतरव
रंकुसमकोकिलकलितरवमोर वारनिवागमूनरागमयभ्र
मतभ्रमरचहंओर १४ य सहितसुदरसनकरनाकलित
कमलंसनविलासंमधुवनमीतिमानीयें सोहियेऋपलीरूप
मंजरीघनीलकंठकेतारासमूगटंभ्रसोकेउरस्रानीये रंसेंस
दंमवालेमंजुजोवाजेरवलीहेसफूलेसुवनेसव सुषदानीयें
देवकोविमानसोप्रवीनराइजूकोवागइंद्रकेसमानिजहाइंद्र

क वि
पि ६१
61

वसंतरितकी

जीतजानीयें टी दो वरदरसनजुतकरनजुतहैं विधिहरिजेहि
मानि शिवारूपमंजरिसुपें शिवअसोकअरआनि १६ रविप्रसू
नअरदेवसवरमसुरसभाप्रमानि कमलासनसरमधुवन
सुमधुजलत्रिपहजानि १७ विनपत्रनहूंमंजरीसोहततापरमो
र कदलीजुतपिकसमदरव अर्थवागकीओर १८ ओकेने
कसर्वसुगमहीहें ताल एीने ललितलहिरेषगपुसपन्
मंसुरभिसमीरतमाल करतकेलपंथीप्रगटिजलचरवरने
हताल १९ यथा वैया आपुधरेप्रमल ओरनकेसव
निर्मिलकायकरेंचहुंओरें पंथिनकेपरतापहरेंरहठिजेतरु
रलतन्तरहतोरें दैषोहूंरोकसुभावबडोवडभागजहागनि

61A

कौन्नियोरे आवतजीवनहारिनकोनिजवंधिनकेजगवंधिन
छोरें २०टी जेतनमेंतनुरुहकेसमहेकहातालकेतरुहे
तेतालकेरोमहे तिनकोजोतोरहतहे वेतिनकेपरतामदुष
कोहरेंहे औरजीमनहारमेंश्रेवयानीकेहरनहारजीवकेंहर
नहारितिनकोरोज्यावतहैं अद्भुतसुभावहे समु व न दे
तेगततरंगगंभीरतौंजैतनकौलेंवहजेत गंगासंगमदेवतियज
नविमानिअनंत २१ गिरवडवानलेहहिवहचेअदयतेअ
अरेव ति [illegible]गदेवैंगहेरोसोसिंधुवखाने य सेवधरेधरनीधर
नीधरकेसवजीवरचेविधिजेते चोदहलोसमेजितितेहरि
केप्रतिरोमनमेविितिचेते सोवतजेरुरुनेरनहीमहआदि

ते

अनंतअगाधहेऐते अद्भुसागरकीगतदेषहु सागरहीमहसागरके
ते २२ लोका छ धरनीधरगिरजीवरोसबमधचोदहलोक
लोकनतेन्यारेकहेइहप्रसकोआक २४ उ २ यहसुविसवन
ससकोमहिगिरधारनहार तिन्हसहितवसलोकएवसत्तरो
मआधारि २५ क त्त मत्तिविमषतपिऊषहे विषईसमसरीर
किपापविपोहे हेकिपोकेसवकस्यवकोचरवेवअदेवनकेमन
मोहे संतहियाकिवसेहरिसंततसोभअनेतकहेइकविकोहे
वेदननीरतरंगतेरंगतिनोभैरिकोऊकिसागरसोहें २६ अ
दो मत्तिइसहेसिंधुपक्षओरसुगमसवअर्थ चारचरन
उपमाईहांसिंहविलोकसमर्थ २७ सर्वेया पा सूरजद

विद्याकीतरंग सोतरंगतहै

यतेऽश्रुतनतापयपावनताहिय सुखवेदमुभेधुनिकरैपथस
गेसवकोय २८ कोककोकनदसोंहतइखकुवलयकुलतानि
ताराअथदिशीपससिकोरतमिहानि २९ य कोकनदमोद
समुद्र
करिमदनवदनाकिधोंहसमुखमुखकुवलयडुखदाईहैं रो
धकअसाधजनसोधकतमोगुनकिउदितप्रबोधवुधिकेसोद
सपाईहैं पावनकरनपयहरिपदपंकजकिजगमगेमनुजगम
गदरसाईहै तारापतितेजहरैतारकाकोतिरककिप्रगटप्रभा
करहीकीप्रभुताईहैं ३० अर्थ दिन कैसेहैप्रभातकरको
कनदमोददानिमदनवदनकैसोकोकसवदमोदजाहिफैरवि
दसोदिसमुखकुवलयरिपुकेसोदासमुखमहिमंडलदुखदअहि

नमके

केसोरविरोधकतेजस्करादिदुष्टनिकेँविनासीवुधियामेंजमदेषिजो
हि केसोहैप्रवोधजोहैरोधकसाधनकोसोधनाम्रज्ञानहीकोम्रोर
वुद्दिवाने चाहि ३१ केसोरविपावनकरनजलहरि पदकेसो जाको
जलगंगापावनकर नहैं फेररविजगमगदरसाई मनु किधो
केसेमनुजगरीतिग्रयनेधरनिहैं फेररवितारापतिचंदताको
तेजहरितारिकानिकरनम्रादिकुयेंपरनहैं तारिकाकेतारवि
श्रीरामचंद्रकेसेतारापतिजुहैंवालिताकेतेजकेहरनहे ३२
चंद्रो यव नं कोककोक नदविरहतम माननिकुलटनि
डुव चंद्रोदयतेंकुवलयनंजलधिंचकोरिनंसुख क ते
पा केसोदासहैउदासकमलाकरसोकरिसोषकप्रदोषता

कुलटाकोप्रकासनहीभावे

63 A

पतमोगुनतारिये अ्रमततअ्रसेषकेविसेषभाववरषतकोकनदमोद
चंद्रुबंद्नविचारीये परमपुरषपदविमुषपुरुषरुषसुमुषँविहृय सषद
निजरधारीये हरिहेरीहियमेंनहरिनहरिनेनेनीचंद्रमानचं
द्रमुषीनारदनिहारीये २४ चंद्र छ अ्रर्थ कमलकोषाति
सोऊदासजिनकोकिरनसंध्यातापसोथेअ्रंधयारेकोहरतहै प
रनअ्रमततागेकेभाववरषतराकाकोकनदमोदिनकोनासिनक
रतहैं सिवविषेपदअ्रोविमुषपुरषनसोजेतिनसोसरोषसुषमं
मुषमरतुहैं सनीहेहरननेंनीचंदहेरीदेषई मित्रताईसोजेहिय
मेनकोहरतहै २५ अ्रवहृजीतियकहतहें चंद्रमानहीहेचंदमु
षीनरिहे ना द छ धनीनरसोऊदासकरऐसेसीसपरेंव

२

डेदोषश्रौअज्ञाननासतिन्हेंकरहीं चारहूंमुकतिकेविसेषऊपदे
सेंभावकोकमंथसब्दनिकेमोदनिनिदरहींप्रभुकेचरनतेंविमु
षतिनपैंसरोषसंमुषॅषदयोप्रवीनऊषधरहीं चंद्रमानहैयष
हचंदमुषीनारडुहेस्यामहेरीहियजेवेमैंनहियहरहीं अथ
षट तुव नं नत्रा व न बरनवसंतसुपुष्पअलिविरहि
विदारनवीरकोकिलकलिरविकलितवनकोमलसुरभिसमी
र ३७ कवि यथा सीतलसमीरसुभगंगाकेतरंगजुतअं
बरविहीनवपुवासुकिलसतुहैं सेवतमधुपगनगजमुषपरिम
लबोलसुनहोतसुषीसंतऔअसेतुहैं अमलअदलरूपमंज
रीसुपदरजरंजितअमोकदुषदेषतसंतुहै जाकेराजदिसदि

64A

सफुलेहेसुमनसवसिवकोसमाजिकिधोंकेसववसंतहे ३८ अर्थ
केदेकसब्दनकोअर्थकहिलेतहैं दो पुष्पहारवासुकिअरयमु
धुपम गगननिजोनि परभतदीनुसुमदुअदलसुमनंदिगी देवता
संवधांनि ३९ प्र सिवसमाजमेंपवनगंगातरंगसमेत केसें
वनेवसंतमेगंगासंगसुचेत ४० रोककहेउत्तरपवनचलातव
संतहिमांहि उत्तरदिसगंगासुयोजुततरंगकहुंनांहि ४१
ताहांकहीयेउत्तरपवनकहातसुतुतकेलोग गंगापारवसंतकहना
हिकहांकहिजोग ४२ उत्तरकेदछनकोकहेउत्तरनयमनहोइ
यांतेप्रउत्तरहोसुअवसुनोअर्थवरजोर ४३ वसंत छ र्थ प
केसोहेवसंतजामेंसीतलसमीरसुभगंगाकेतकहासेतधुजासु

क वि
प्रि ६५

65

जगाईहै औरकेतरंगनिकीताजुतहे अंबचंपनेरविहीनकीयोपुब्यहार
सोभापाईहै अलिअघकाईजामेंरोसौगजमुषसेवेकोकिलकीधुनि
सवहीकोसुषदाईहै विनपत्रुहलसतरूपमंजरीअसोकफूल्योहै
सुहागिनिपरसिपदआईहै ४४ सिव साज छं सिवकोस
माजकेसोगंगापरसतपोंनसमहीदिगंवरलसतसेसधामहै
सेवेसंगीगनतेंपतिकोंओसुषपांवेसुमेवोलनदीनअगुनीकि
गुनग्रामहै अपसराजुरूपमंजरीहैंताकोसुकुमार अमलप
दनिकीजुरजजिहठांमहै सदाईअसोकदुषनासे अरजांके
राजफलेदिसदिसनकेवेदआभिरामहैं ४५ ग्रीष्म रितु ग्री
नें तातेतरलसमीरसुषसकेसरताताल जीवअवलजलष

65A

लविकलभीषमसफलरसाल ४६ यथा विज्ञ चंडकरकलितव
लितवरसदागतिकेदमलफूलफलदलिनकोनासहे कीचवीचव
चेमीनव्यालबिलकोलकुलदुरदरसीनु दिनहूतकोविलासहे थि
रचरजीवनरहेजवनिवनप्रितकेसोदासमगसिरश्रवतानिवासहे
धामनेवलंधनुकसोमानानिपातुसरसमरसमहहाकिधोंग्रीषमप्रका
सहे ४७ टीसवदनकेअर्थ पवनसदागतिकेदसुखदादिनकिति
जुद्दरुभानु धामतेजगेहा धनुकविनयथकहतानिपाति ४८
दो चंडुकररविकीप्रचंडजेकिरनतामहितजेश्रीचक्रताईजहांपौन
हें जामेकेदमलादिकनासमीनादिजीविवचेहे उपायनबिला
समानुभोंनहै थिरचरजलनिकोसोथितवनानिप्रतिश्रवेजामे

क वि
प्रि ६६
66

नषतमें म्रगसिरजोन्तुहे तेजुहेनवलेगेंडेकोच्चलसेंसृकेंसर ग्रीषमयें
जामेंजलुपांतुपावेकोंन्तुहें ४९ सम पत्त स्तूरनकेकरजेप्रवेड
तिनजुतऔरसदांगतिसस्वसुषदाईजुतमानीये मूलफूलफलको
हेदलनकोनासुजहांजलामीनादिकवचेंदुरिजुदुकेलिजानीए
थिरचरजीवजुहेजिनकोसुहतजेतुजिनकोंहरनवनप्रगिअर
ग्यानीये चेरनवधनुषकोसोहतनिपषसररनकेसमूहकोंअरण
जोवषानियें ५० कहुसवरसमूहकोंपाठहोयतोअर्थलागतहे
वर रितु एीनें वरषाहेसंप्रयांनंवकंबादरंदादुरंमोरं केतिकं
केजंकदंवंजलसेंसौदामिनंचनचोरं य मोंहेंसुरचांपचारुप्र
मुदतिपयोधरमूबनेरांवजोगतितहितरैंईंसुं हरकरीसुवमसुयं

नहीमेंनहींअमलनिमल जल फोजकेरल

रेनकाहय नीकीगत कालकापख

जलरि

66A

सुषमाससीकीनेंनअमलकमलदलदलितनिकाईहे कैसोदासप्र
वलेकरेनुकागमनहरिमुकतालहेसकसवदसुषदाईहे अंवरव
लतमतिमोहेनीलकंठजकीकालिकाकिवरषाहरषिहियआईहे
५२ कालि पक्ष मलोहेअमरचापमोदितयननिकरमूबँनेजन
में रावकहेंसवदजोतिजडमेंतरलताओसमसिकीनेंअैसेसोभारहीमन
वदनमे नहीजामेंअमलकमलदलदलतिनकाईवलीजललेरेनु
आवेनगमनमें मुकतासुहेसरविअचरमेंछुईमतिमारनकीमोहे
वरषायोवरनेंमें ५३ कालि पक्ष करनीगतिहरनीसन्यारे
रविविविछुवनसुषद पटजुतमोहतिईसअर्थकालकापदसुगम
५४ सर वर्णने दो अमलअकासप्रकाससमसिमुदितकमल
कुलकांस पेषीपितरप्रियानिन्रपसरदसुकेसवदास ५५ प

जानेंसुभ निसुभमा रेहै

नजहता दिवमुको ष ४

काही

क वि
प्रि ६०

67

ने त्रा की कमल जसति समे रुच है जलको दे घन दे

सोभा को सदन ससि बदन मदन कर बंदै नर देव कुवलै बरदाई है
पावन पद उदार लसत हेम कमार दीपति जलज हार दिसि दिसि घाई है
तिलक चिलक चारु लोचन कमल रुचि चतुर चतुर मुख जग जियमा
ई है अमल अंबर नील लीन पीन पयोधर के सोदामस मार दाकि सर
दसुहाई है ५६ अर्थ छबि को निलय ससि मुख जामें मैन कर बंदे
नृपति बिजै हितु कुमदन सुखदानि पावन सुपानहां न सुंदरस
हे समालि तिलक चिलकता रु लोचि बो सुजलजानि हे चतुर यामें
जो चतुर मुख जग भयो चारु हंदि सानि सुष कर तप यो निठानि
यांते जीय भाई ओर निर्मल अकास नील तामे लीन भये गहे घन
जो सरद मानि ५७ सार पद र्थ सोभा को सदन ओ मदन कर
औ सो ससि मुख नर देवनि को बंदें न हिय यह जानि कुवलय मु

अमल तिमलव
अताम तीलरंग
केजुगत जो पीन
कुचहे सोलीन क
की ऐहै ताम

जलज कमल
तिन के हार हे
न तिन की दीप
ति सोभा दिसा
दिसा में फैलर
ही है रति प छ

मंडलवानीवरदाइकहैं सोभासुखअदृत्तरविनानयहवानिमानि
पावनपदनमेंलाग्युविछुवनपातिछ्विमुकतनाकेहारसोभासुदि
येदिमानि सुनेंहैचातुरमुखविधञादिसबजगमाईरेसीसारदाह
वरिदानि ५८ अथ मंत्र एनं तेलोत्तसंतमालविचंगापंत
पनंरतिवंत दीहेरयनिलखु ह्योसंहनिसोतसहितहेमंत ५९
य अमलकमलदललेललितवलितगतिजारतसमीरसीतभी
तदीहेदुषकी चंद्रकनयायोजायचंदननलायोजायचंदनति
हासोजायप्रकृतिवपुषकी चटकीचटतजातियटैनोथेरीहं
थरीछिनछिनछीनछविरविमुखसुषकी सीकरनुबारें
स्वेदसोहनहिमंजनरतिमांनोकेसोदासविपप्रीतिमवमुषकी ६०

जो चातुर २

चेष्टा

67A

जे

ती कमलकेदलैंवलतललितगतिजारतितिहूंदुषकीहेरितु
यहचंद्रपूरआदिमेंलुदुषदाईहैं चननकीचट नाकुलालन
कैंचटजालिसुषकीजुछविरविमुषछीनतार्ईहैं आसवुंदहिम
जहांहोतस्वेदआगतिजोताकोमान पातेसोभैहेमतिजोगाईहैं
विमुष यप अर्थ कोमलकमलवरजेदलललितजुगति
नकीसुगतिजारेंजारेंसीतपोंनुहैं भीतवेदुषकोहेविमुषम
योहेपतिमतिरचिजायकहं छेड नेजुभोंनुहैं विरहमेंचंद्रक
मलयचंद्रदुषदाईजनकीजुरचनाकीभांतिजाकेगोनुहैं आ
तिसुषकीजुरविमुषउसंभ्रमहिमस्वेदंप्रियविमुषकीप्रियेसुष
कोन्नुहैं ६३ सिस रितु लिने दा सिसरसरसिमनवरन

68A

नीयकेसवराजारंक ना चतगावतारैंनदिनषेलताहसतानसंक
६४ य संरसंग्रसमसरसरसिजलोचनबिलोकलोकलीकला
जलोपवेकोंग्रागरी ललितलतासुवाहजानिजनज्वानवालि चाउरहैवे०
विटपऊरनिलगेजागिजजागरी पलवंग्रघरमधुमधुपनि
की वतंहींरचितरुचिरपिकरतसुषमागरी इहविधसदागतिवा
स विगलितगंतसिसरेकीसोभा किधोंवारिनारिनागरी ६४
टी सहितजुरसमनमयकेजेनरग्ररुकंजनेंनीइनकीसुफागु
लोपैंलाजहें हैसुवाहजांनिलतासंदरंस ज्ञजुज्वानवालुता
कसभहीसेंलपटनिकाजुहें पल्लवजेग्रघरघरपैनाहिडार
लगेंताकोमधुपीवनकोमधुपसमाजुहे चितचकोरचक्रि

२

चैंपिकरवबासुपौनरहविधिसिसिरकीसोभासुभसाजुहै ६५ बारि
रि त सवतेंसंजोगकेमदनसुकंजनेंनीलखबहेलोकलीकलौं
पैंनिजभाइके ललितलतानिसौंबाहुतासोंबहुज्यानवेंलछेललन
उरनिलोंगेहृदयचितावहके पल्लवसेअधररसकजनपीवनाही
रचितहैंपिककबानीकुहिजितहाइके इहिविधसदारीझौवासिसि
स्योरहेगातवारनागरीपत्रअर्णीरहभाइके ६६ इति नाज
सह रोम रिचि याक प्रिया कायां हज्ज मचे या
सो लेका भूमि वन र्णनं मस म काम ७ अथ
ज्यश्री वन र्णनं म दो रा राजारानीराजसुतप्रोहि
तदलपतिहत मंत्रीमंत्रप्रयानगयस्वयसेनामग्रभज १

अदम नबारनगरयनहीगर्जनेहै इत्यादि अर्थ इन मै को नकौन मे फलको लाभ
भयो उत्तर जुनगर्जनविषेतोइह फलहै कि सुभायमान पृथ्वीहै हरि पाईकि
जनके नगरैनकी अतिप्रशस्तनाहै इत्यादि सातहै तिनको भयनही यामे फलयहै सबदे यामु प्रजामेसुषका
लहै

69A

आषेटकजलकेलपुनिविरहस्वयंवरजानैंमृषितसुरतादिकनिकर
राजश्रीहिवषांन २ राजा रीनं प्रजापतत्तापुन्यपनपरम
प्रतापप्रसिद्ध सासननासनसत्तकेवलविवेककीहद्द इंद्रअ
नुगंधीरत्तासत्यसुरतादांनि कोसदेसजुत्तवरनीरोजद्यमन्
मानिधानि ४ क त्त नगरनगरघरघनहीतोगाजेचोरि
हतकीनभीतमीतअधनअधीरकी अरनगरीनप्रतिकरि
तिअगमगौनमावेविमचारीजहांचोरीपरपीरकी सासन
कोनासनकरत्तोकिगंधपासनकेसोदासदुर्गनिहीदगेतिस
रीरकी दिसदिसजीतपैअजीतद्विजदीननसोंऐसीरीतिराजनी
तिराजेरघुवीरकी ६ प्रस दो रा चेनगाजेफलसुभुत्ता

है
सतईहा
है

अर्थ कोरी मे संभ
ताका फल है भई
महापृथ्वी स्त्री की
चोरी है तो यामै प
हि जारी यें भई रा
मके राज मे समता
है क्यापर पीर की ई
चोरी तो न हों हो प
गी यहां समता हो
य हो यगी सो चो
री है गी यों

दि

वि
७०
70

भयमेंदयाविधान श्रगमगोनमेंजीतिफलविमचारीरसमंग्यन ६ दुर्गतिजहंगहनगरजसहुमासुजग्रेसहाहार श्राज्ञाभंगसुकौनफललाभसुकहोविचारि ७ ऊ र श्राज्ञानपघलिमनिसुरभिरहानकरतुहसुलोग कोऊलेऊनविदिहैइहसिद्पासेभजोग ८ सुरभिभवनतेंपवनसोग्रादिनसुरमिलेजातु भावसुप्रज्ञाभंगकोइहविधह्यारसाज ९ सवपुरजीवनद्यानसुषइहफललाभविचार १० ग्रोर समसुरभिहरननंहीकिऊलियोग्रज्ञाभंगग्ररुभाइ दीपरछेनचाहिहेंचलेचलेनंचलेसहार ऊ र जहांसुरहोकविजमेंग्रेनपवनकोनाम गंधासनहोहैधरेपागंधहरनेत्रि

धाम १२ मूलानीव र्णने सुंदर सुषद पतिहू तातसु चिरहि
सीलसमानि रहविधरानीवरनी येसलज सबुधिनि धानि १३
य माताजिमपोषतौं पिंज्यों प्रतिपाल करे प्रभु जिम सा सन
करत हेर रहियसों मेयाज्यों सहाय करे देत हे सषाज्यों सुब
गुर ज्यों सिषावै सिष हेत जोर जियसों द्वामीज्यों टहल करे
देवीज्यों प्रसन्न हू हे सुधारे परलोक लोक नातो नाहीं वियसों
छकेहै श्रया न मद छित के छिन कछु द्र श्रोर सो सने हक
रे छाडि ऐसी तियसो १४ टी प्रस हरा माताजिमपो
तसह हतियसों कहित श्रजोग वडोप्रसरह करत हें सवक
विश्वराजगलोग १५ ऊ र त्नपनसिद्ध प्रसितियनसोहो

क वि
प्रि ७१
71

हनछिणप्रतिकूल राजकाजविस्तासुषदजेमवविधअनकूल १६
हेतजोरसवजियनसोंजेनिजपरजामांह तिनेमातजिमपिताजि
मगुरुजिमविधिसरसाहि १७ जियसोंदेहरोदीपतेदुहेतुकन
कोअर्थ फेरजुदासीजैंरहलैत्रिगुनअर्थसमर्थ १८ मु
पुनि क त्ति कामकेहेआपनेहीकामरतिकोमसाध्यरति
नरतीकोजरीकेसेंऊरआनिये अधकअ र्धइंद्ररंद्रानी
अनेकरंद्र भोगवतकेसोदासवेदनिवषानीये विधहूअविध
कीनसविचीहेंआपदीनिऐसेंसवपुरुषजुवतिऊरआनीऐ
राजाराम चंद्रजुहेराजातनअनकूलसीतासोपसिहतानतारी
ऊरआनीये १९ अर्प हा ईहांपुरुषअरतियनकोंनिंदक

मिसुवषान तहांकर्मरतिमेंकहांकामकर्मिकोज्ञान २० पुनिविध
कोग्रथधेंकहोतियसुग्रविधनप्रकास याकेविस्नमेंप्रसंहैभासत
बुद्धिविलास ज र ताहांकामतोकामरतिग्रर्थकिइताप्रीति ज
हांवाहेताहंभोगर्ईकरप्रवेसइहहरीति २२ विधिविग्रापदियोपतहि
यहीग्रविविकोकाम जेग्रपग्रपनेंकामकेवर्णनकियरहठंम
२३ राजकु रव नें दे रा विद्याविविधिविनोदजुतंसील
सहितग्राचार सुंदरसुरउदारचितवरनहराजकुमार २४
यथा वित दाननिकेसीलंपर दानकेप्रहारीदिनदानेंवारजे
निदानदेखियेसुभाइके दीपहंकेदीपग्रवनीपतिकेग्रवनी
पपुणुसमकेसोदासदासद्विजगाईके ग्रंनंदकेकंदसुर

रिजुकोमलहहैहोवे

पालककेवालकसेपरदारप्रियसाधमनवचकायके देहधर्मधारी
पैविदेहराजजूकेराजराजनकुमारश्रेसेदसरथरायके २५ ज्ञानी
करनादिकोसोसीलजूत्तमसुभावहे दानसीलश्रोरदानहर
अवनीपतिश्रोरदास पालकअरुवालकसुजोअद्भुतिनापर
कास २६ प्रोहि वर्णने दो रा प्रोहजन्मपहितवेदवित
सत्यसीलसुचिअग उपकारीहूहुम्न्यंजूजीतोजगतअनेग
य क त्ति कीनेपुरहुतमीतलोकलोकगोरीगीतपाराजुअम
नपजअरीजरत्रासहैं जीतेजुअजीतभूपदेसदेसवहुरूपंश्रोरनकों
नकेसोदासवलकोंविसालहैं तोस्योहरिकोधनुवंन्नपकुलको
विमुखदेषोजुवधकोमुखसुषमाकोवासहैं ह्वैगयोप्रसन्नौरा

सत्यकासुभा वहोवे

ईद्र

सवराजाकोवि मुख्यकरसौप्रो

परस राम
72A

मेवाह्योधनधर्मधांमकेवलवसिहूकेप्रमादकोप्रकासहैं २८ सेतापं
मयनहो आलसीहोवे
तिवर्णनें स्वामभक्तिश्रमजितासुधीसेनापतिश्रनभीत श्रनालसीप्र
यजनजसीसुषसंग्रामंश्रजीत २९ स याः छंडिदयोग्रतिश्रा
रसपारसकेसवश्चारथसाथसमरेरो साहससिद्धिप्रसिधसदाजल
हंथलहेमहिविक्रमसमरोसोहोएऐकश्रनेकनमांहिश्रनेकनिएकवि
नारणसूरो राजत्वहैंजिहराजाकोराजसुजाकीचमूपतिसूरो ३०
हत एनें दो रा नेजतवहैनिजराजकोंश्ररिंजरजपजेछोभि
रंगतजानेंसमहगुनवरनहहतश्रलोभ ३१ सारथ र हितॅस
हितॅमतिकामक्रोधलोभमोहछोभमदहीनेहैं मीतहंश्रमीतप
हचानिवेकोदेसकालवुधिवलजानवेकोपरमप्रवीनेहैं श्रपनी

संद्रहोवेवुध
चमूमे
कंपनीजपजैं
सुनुश्राकेरसे
विहतं

क वि
प्र ७२
73

उकति श्रुति अपरी है श्रोरनको हरि हरि हरी मतिलेलेवसकी नेंहें के
सोरा सदेस देस श्रीरि दलरंभ देव राजन के देषवे को हतह गही नेहै
२२ सुग मंत्री ऐनै राजनीत रत [illegible] राजरत सुचि सरवशकु
लीन मछी सरजस सील जुत मंत्री मंत्र प्रवीन २३ य केसव
केसें हहवारि धवा धकहा भयो री छनें जो छित तछाई सरवजको
सुत वालिको नंदन को नल नील कही हम ठाई हो हनुमंत कि
किसो कुवली जमहं पहि जोर लई न हुजाई सबैनं मरुषनं हरषन
हरषन लंक वभीषनके मतपाई २४ श्रथ हा हरषरत सगासु
के हरषत प्रभु श्रीराम मूबन जिन ते मरुष ही श्रेसे श्रुति श्रभिराम
२५ म्र पुन विज्ञ जुधजुरेंद्र रजोधन सो कहि कौन करीज

73A

मलोकवसीत्यैं करिहृपाइजद्रोनसोंवेरकेकालवचैवरकीजेप्र
तीत्येंभीमकहावपुरांअरुअर्जुननारिनज्ञांनहीवलरीत्यें केस
वकेवलकेसवकेमतभारथपारथमनलजीत्यें ३६ टी भारथ
रराजीत्येंमुवहपारथअर्जुननाम सोहरिमतकेसोमनमें
रथमधिसंग्राम ३७ मंत्र रीने दो रा पंचअंगगगुनसंगवद
विद्याजुतदसचारि आगमसंगमनिमगममिरेसेमंत्रविचारि
टी पंचांगजोतिषकीविधजलेचेनहीषटगुन अध्यापनस्था
पनादितिनसोजुतचोदहविद्याजुतहोहिआगममंत्र साम्त्रनि
गमजामेकहुकीगम्यनहोइजोजानिलेइ म. केसवमाधवकुसे
धविरोधतजेसवस्वारथसिद्धअनेंसो भेदअभेदअनुमानिग्र

हितिम्रहमंत्रपिकहीविधिजेसी वैरिनकोंरिपुदासप्रभुकोंप्रभुताकरे
मंत्रनकीमतिरोसी राषतराजनदेवनज्योंदिनदिव्यविचारिवि
माननिवेसी ३८ टी क त केसीवहमंत्रिनकीमतजोसु
नेतन्रपमादकनहोयमददोषसोनसावई क्रोधग्रोविरोध
कीनिसिपिहोयज्ञामेंग्ररुमंत्रीहूकीस्वारथकोसिद्धिनजतनो
वई कहहकरेमेकहंरतग्रभेदकहूहकपाकहंरनसंधिजथ्याजो
गपावई सत्रुडषमरेनिजिप्रभुप्रभुताईकरेरोसीमतिस्वरन
ज्योंसुषनवढावई ४० प्रया व णि ने चौरंगपताकाछत्र
रथहंसमिष्ठनंवहूजाति जलथलमैयमकेंपरजरंजनवर्णि
प्रमान ४१ स या राझवकीचतुरंगचमूचयकोगिनेकेत

क

संपूरु

कविराजसमाजनि हूरंनुरंगनिजरके पगातुंगपताकनि केपटसा
जनि हूटपरेजिनकेमुकताधरनीउपमावरनीकविराजनांविंदु
मनोमुखफेननकेकिधौंराज श्रीसवेमंगललाजन ४३ राम
द्रका क त्र नादिपूरैधूरिपूरिगोरिवनचूरिगिरिशोखे
सोखिजलमूरिभूरिथलुगाथको केसोदासआसपासठोरठौ
रिराखिजनतिनको संपतसवआपनेहीसाथको उनतनबारोंन
उन्नतवनारोंभूपसत्रुनकोजोवकामेंमित्रनकेहाथको मुद्रित
समुद्रसातमुद्रानिजमुद्रितकेआईदसदिसजीतसेनारघुनाथ
को ४३ हय एंनं वा रा नरलनताहोंजगजिमुखसुख
लहुदिनदेख देससवेससुलछनेवरनहुवाजिविसेखि ४४

राजश्रीईसलत
मीहोआवेहेका
टारेहैमंगलके
लीएलाजनको
क्याघानोकी
फुलीआंको

वाकनलगान
देमेतेजगतरोहा
लवालहोवेमुख
स्पसुजोरवह

सातसमुद्रांकरवेजोनमीप्रथीसीसरूआंकोतिसकोआपनीमुद्रामोहरतासोमुद्रांतक्या
मिसानीकरवेआपनोहिकावलाके श्रीरामचंद्रजीकीसेनाआई

७४

[illegible]

मंदवालकेणि [illegible]

[illegible] नेजदलके सिंगारपरदलके बिमारकेर [illegible]

[illegible]

हेहगहजोसबनमट [illegible] लिदनेदसेग्रमेदवेदनकी [illegible]

गोरि वि चिकेसंवपवको [illegible] दितश्रातिरोसेगजरमजे

रनकीचारछोरि मरकेऊदोतऊदेगिरसेऊ

७४

79A

वारवारयामेमानिविरेहहै हरेतहरित्ताहारफरनांविरहमेररा सकिप्रयामेलिष्योहै स्वयं रव ँ सचीस्वयंवररत्नयेमंडल मचवनाय रूपपराक्रमवेसगुनैगौयेराजाराज २२ यथा मंडलीमेचंनकोन्पमंडलमंडितदेषीयेद्वेवसभासी देवनिकी द्युतिदेहकीदीपतिभूषनजोतिसमेतप्रभासी फूलनकीछविअंवरकीछव रवनकीछविनासनभासी सोहनहेअतिसीयस्वयंवरआननन

[illegible]

सिंहासनकी

सिंहासनको हाथीकेदंतकौ न

क व
त्रि

७५

नेनीलावन्यतासेदन्न
तानेनइषनकाला
केनेत्रामेसनेहके
यरहै

75

चल

जलकितनाई
ऊंचाहोवे

एकतोवामनताअवतार छोटाहै फेरहेचरनहै रमवडेहैं अरुचारचरनकेहैं हरनाम
ऊनकोवीहै अरुहमारेवीहै सोवामनतानभकोसा छयोहै पावसोसोहमजसनभरको नारपांवसोभ

क त्र वामनंनेहीं इषदजुनावेनभ नाहिकहानावे परव्यारिथिर होतहहैं काइंहै
तहें छेकीछिति छीरनिधिछांडि धाप छत्रनरकुंडु लीकरनचितले सरमिंदगी
लमोललेतहें मनकेसमीतवीरंवाहनसमीकेसेंनेननज्योंनेनीनेनि अवपीहै
नेहकेनिकेतहें गुनगनिवलितललितगतकेसोदससोऐसेवाजिराजदि ईनीकेतजा
नदीननिकोदेतहें ४५ गज ऐनंदो रा मत्तमहावतहाथमें मनकेथिर
मंदचालकरए मुक्तामयउरभंकभसूभसंदरसूरसुवरए ४६ क त रहतहैं
जलकेपगारंनेजदलकेसिंगारपरदलकेविगारकरूंपरघुरपारेरोदि
ठाहेंगढजेसेघनभट ज्योंभिरतरनदेतदेबंअसिकागएसज्जकेमो समूकेपुरमे
रेगोरि विं धिकेसेंवधवंकलिंदनेदसेअमेदवेदनकीसूंडिभरेच सारमचावता
दनकीचारंछोरि सूरकेऊदोतऊदेंगिरसेऊदितअतिऐसेगजराज है

लि
छि
खेके

७५

ऊद्याचलपर्वतसे अमेंसजलथहे

75A

राजेंद्रराजादसरथपोरि ४७ सुग संग्रा व ने दो रा सेनांहसा सह
सजोआ
नसेनांहेरजसांहसंसस्त्रप्रहार अंगभंगांसचहमटअंपकंवंधअपा
र ४८ केसववरनृहजुधमेंजोगिनजलजुतरुद्र समभयाकर न
धिरमयसरवरसरितसमुद्र राम इका यां यथा क त्र सो
णितसलसिनर वानरसलिलचरगिरिहनुमंतविषविभीषनदुगसो
हे चवरपताकावडीवडवाअनलसमसेगरिंजअंबुवंतकेसवविवा प
सोहें वाजिसुरवाजिसुरगजसेअनेकगजभरतसवंधइंद्रप्र
अष्वतनिहासोहें सोहतसहितसेसरामचंद्रकुसलवजीतकेसम
रसिंधुसोचेहोसधासोहें ५० अर्थ श्रोणितवहिवोजलअपम
नरवानरजलजेत अरहतअपमोमिलतिहें रूपसीलगुनवं

वि
प्र ७६

76

सिकरा

प्रस विषस्तविभीषनकिसमुद्रशावडुवाचवरपताकजामेंह धावे
नरसत्तहंसमताकेहिताक ५३ ऊ र रवसविषस्तश्रसित्तरहि
रसोषकपटवडवाग रिछुपरसासिसुरेगगहरइहविधिसमता
लागी ५४ ग्राबे कव ने दो रा जउररावहिरीवाजवहु
वीतांस्वानसिचान सहरवहलीभिखजउत्तनीलनचोलविधा
न ५५ वानरवाघवराहमृगमीनादिकवनजोंतु वधवेध
नवेधनवरनमृगयाषेदश्रनेत ५६ यथा विज्ञ तीतर
कपोतपिककेकीकोकपारावतकुररकुलंगकलहंसगहिलाऐहैं
वेसंवसरमेसिंहसीहगोसरोसहत्तकूकरनिपासंसकेसूकरग
हाऐहैं मकरनिकरवेधवांधिगजराजमृगंसदरदरीनभिस

माह

सिकारि जस
४२

निसंक

७४

76A

सोरे

भामनीनंभाएहैं रीगरीगगुंजनिकेहारपहराएहैं योकामरोसे
रामकेकुमारदेखेग्राएहै ५७ पुनः बलनकेषेलभेलमनम
थमनखेलसेलजाकेसेलगैलगैलप्रतिरोकिहैं सेनानिकेसेट

परचंद्रचित्रचटपटंप्रटपटप्रतिप्रतिग्रंतककेग्रौकेहैं इंद्र
जेकेप्रकपकंसिंभुजकेसकपकधाराजकेंधकपककेसोरामके
कहें जवजवमृगयाकोरामकेकुमारचहेतवतवकोलाहलहोत
लोकलोकहै ५७ मूल दिन म्र दो रा मीनसिंहसिंघ
मृगमहिषवानेरसिंहसिकार वरनीहबनकहेकह्योकेयाचिंता
सिवहार ५८ ज र जहांकहातरहिरीतकविपरीसवेमुरोरि सिं
मजकेकोकहेंनहिमृगयाकीठौर ५९ मू जल केलि य

कोईभाजैहैकोई
छुपैहै
सैलजाकेपार्वती
केपरवतोकेर
सिरसेमेरोक
केरीहैसिंरकोमा
मारे

ससरोजसुभसोभमनिहियसोपियमत्तमेलि गहिवोगतिसष
निनिकोजलचरमेजलकेलि ६० य ऐकदमयंतीऐसीहसें
हरेहंसवसरोवहंसनीमोविसेहारहियपरोहिये सषनगिरैऐक
लेत्तवडिवुडिवीचवीचमोनगतेलीनहीनजपमोनदीहोऐ ऐक
हरिकंठलागिलागिलागिवुडिजातिजलदेवतासोहगदेवताविं
४ मुषीजल ज मोहीये केसोदासअसपासममत्तममरजलकेलिमेजल
जैसोसोहीये ६२ अ दमयंतीहंससहिगहनचलीकयारहमा
न तांतेमेहंसहिगहातिसोदमयंतीसमानि ६२ अथ रह
एंनंदा रा स्वासनिसांचिंतावहे रुदनंपरेषेवातकोरे
पोरेहोतहमसनातेसोरेगगन ६३ सषषपांसुपवुघचटेस

77A

षनिद्राउनतउमंग उद्बदहोतहैंऊधवदसवकेसवबिरहप्रसंग ६
य व न वारमोकवरजीमेंसारसमरमऊधोग्रारसीलदेषि
मुषिपारसमेवोरिहे सोभाकेनिहोरेत्योनिहारितिननेकहूंम्यो
हारीहैनिहोरिसबकाहूंकहाबोरिहैं ऊधकोनिहोरोजुनमा
मान्योसोभलीकरीजहकेसोरायकीसोजोहिजोतुमनमोरहे
नाकोंनिहोरेकिनेमानैहोनिहोरतिहोनेहकेनिहोरेफिरमो
हिऊनिहोरिहे सग रस प्रिया क न हरितहरितहा
रहेरतहियोहरतिहारीहोहरिनेनीहरिनकहलहूं वनमा
मालीब्रजपरवरषतबनमालीवनमालीहरेउद्धवकेसवकेसस
ह ग्रपचनचनेस्यामचनहीसेहोतियचनस्यामनह्योसचनस्यो

क वि
७८
78

म [illegible] विनाकोरहं हृदयकमलनैनदेषके
कमलनैनहोउगौकमलनैनऔरहोकहाकहं ६५ दो
हरेहरेहारबेगमनमालीजोहजवनकीहेमालपातिजहांवरबनव
नमालीमेछऔरुवनमालीश्रीकृस्न हृदयकमलहोउनैन
तिनकरिदेषैकैकमलनैनकोकमलनैनहोहुगी कमंजेहैं
नीरसोहेनैनमेंजाकेऐसेहोहुगी अर्थकिरुदनकरिहैं अश्रु
हेहैंकाहेतेचन चनस्यामनकेधामकहुमे चनिकेदिननमें
चनस्यामबिनुकौरहो मेचनिकेदिनकेसेहेमेचअपजेहैपा
नीजामेंजामेचनेहे फेरचनसचनहे फेरस्यामहैकारेहे औरच
नहींसेहोतमोकोचनसेहोतचनमृगरानाडनेकोमर स या म

लिगयोसवमोरसरो संमिटेमवके भ्रमूरेनमिभाजो कोअनेपर
अंगदुतनाम ९५ याम भ्रम
केपहचानतेजोनतिनाहिनेमीतलजाजो नीकेहीमेंहवभानलली
कोभईसुनिताकीकहीपरेवाजो रोकहिवेरनजानीऐकेसवकाहू
तेछुटिगोसुवसाजो ६६ अर्थ भवंप्पासेंसुधंवुधुहेअंगदुहे
तिनिद्रोसुवसात ऐसवविरहप्रसंगमेंदुषसरूपहेजात ६७ सु
नसुषकोदोहाउत्परकहिआयेहें सोसातोसुषकविन्नमेंकहतहे
चारकविन्नसुधरेहेंविरहके सोचारोविरहवर्नेहे तोहोयाकवि
न्नमेपूर्वानुरागविरहहे सातोसुष यथा भ. त्योरसरेसयामें
सुधकोनसोहें सुषमिटेभवकाजयामेंवुधिसुषभासुहे रेनप्रात
स्पानतनिद्रानासकाहूनहिपहिचानेमेंदहइअंगदुतिनासुहे

यामेंदोसुहे ऐकु
मंदहू छुहेगई है
अंगनेत्रनासहै
दूसरेदुतनासहै
नेत्राकी

मेरी ओर ही सखी के सम
ताकर के आस उ
सासन के साथ वर
सत है

रत वाको वडी म
ई है के लीहे विसा
सन विस्वास यो जा
नी है

79

सीतल श्रीतानी तो ताहि जानि तिं अर्थ र सीतल तो जल ता तो अन्न पर
कास हैं यामें प्यास म स वसु वग एसषीसषीवुच सा तो सुष छूटे क
ह लगन सु जास है म पुनि मैं केहीं सके श्रास संउ सासे नि
साथ निसास विलासन वाही हास गयो उडि हंस निज्यो चपला
जिम नींद नई गति काही चात्रक ज्यो पीउ पीउ रटें चढि ताप त
रंग ने ज्यो तन गाही केसव वाकी दसा सु नियो अवि प्रागि विना
श्रंग श्रंग न डाही ६९ दो प्रस यामें पावस साज सब मे
दिक विधि मांहि निसा वह निरह कौ ष पें साज सु पाव सनाहि
७० ज्यो घटरितु त्यो त्रियसम पता हांन चातु रमास तहाँ लिस
कौं वढिवे सही अरवषीस प्रकास रह प्रकास विरह कौ कवित मे

79A

वारवार यामें मानि विरै तहहै हरि तहरि ताहार करनां विरहमें रस
सकि प्रयामें लिष्यो है स्वयं वर वर्न सची स्वयंवर रत्नये मंडस
मेव वनाय रूपपराक्रम वेसगुनेरगीये राजाराज २२ यथा
मंडसी में वन कीन्ह पमंडल मंडित देषीयहे वसभासी दंतनि की
दुति देहकी दीपति भूषन जोति समेत प्रभासी फूलनकी छवि चित्रवरकी छव
छत्रनकी छवि चित्त्रन भासी सोहत है अति सीय स्वयंवर आननचन
चंद प्रवेस प्रभासी २३ सुग सर ... ने सुरत सात्तुकी भाव
भनि मनि तंरनि तमें जोर हावभाव वहि भांति रति भ्र लज सलज्ज
सरीर २४ क त्र केसोदास प्रथम ही अपजत भयभीर रोम वि
रुचि स्वेद देह वेपति गाहत है प्रान प्रीय वाजी हति वारिं पद्यतिक

सिंहासन की

तिसछिन मे

सहदै

सिंघासन को हाथी के दंतका न

४०

विविधसबदहिंनेनननाैं । वपितेंहीयपनको...
नानवानकरजपुहारनिमाहितहें ॥ अथ वनसुदेसहारहुवनस्थ
लहोनसथिनसुरनसमरकहतहै ७५ अर्थ केसोहैमलरोज
हांप्रथमआरंभविषेंअपजातिलोकमयसाकुकहैतनमें प्रान
प्रियकैहैंजहांवाजीकरीओषदादिपदकेनिवारिनजहांहै स
कथनमें विविधसबदकहि मित्रिरदछुतआरउआकपाकुंज
ओसकजिवहीमनमें रदपासीकरतओलहतनषदाननिकों
अथनपरसअगवाधकवरनमें सम पछु ॥ केसोहैसमर
कैसीहुहेहेरमें भयआदिको धेररमें बतनकेपनगहतहें प्रा
निकोप्रीयहयगजनकेयरफिरेरातप्रतिरदविप्रदाननिल

81A

८ टी जांकोजेमोरु पहेवरीतजातिसु होय जहगुनहासादि

...नरोत्र जहांजातिसुमा

...

दो रा राम जातिसु भावविभावना हेतु विरोध विशेष जाहोत

स्वाक्षेपक्रमसम्भासियप्रीयसश्लेष १ श्रुतिलानिलानुप्रासहि

...

...खोरसग्रक्रमसमानि अन्यग्र

...पावरन्यासहे ... २ श्रुतिपतितातिरेकस्म...

वर छी
विविधि सवद हिज दान न लहत हैं कालत हू पान कर सकत सुना
गन त्रान करज प्रहार निसाहित हैं ॥ भूषन सुदेस हार हू वन सके
लहौ न सखिन सुरत समर कहत हैं ७५ अर्थ के सो है सुरति जे
हां प्रथम अरु भविषे उपजति लोक भय सात्विक है तन में प्रान
प्रिय कै हैं जहां बाजी करि और उदादि पद के निवारि न जहां है सु
कषन में विविध सवद कहि मिति रद छत न अरु जो क्रपा पुज
ओस कति वहां मन में रदपा सी करत औ लहत न षदान निकों
भूषन पर सरंग बाधक वरन में सम पछ ७६ केसो है समर
केसो हूं हे रसि भय आदि को घेर रमे बतन के पन गहत हैं प्रान
निकों प्रीय यह पगजन के पद फिरै शत्रु प्रति सव विप्र दान निलह

तहैं सहित बहु सक्ति जो धनि केके रनी केतन कवचनि ये प्रहार
नि सह तहै ॥२९॥ बनादि दिदोख परमट हेरिं जो निन्दप यातें पद हू बन
गहत है ॥७०॥ इति नाज सह राम रचि थोक प्रिया
कायो इत्ते मचं कायो मान्या कारे ज्यष्टो बन
लिनो मश्र मप्र सः ८ अथ सिष्टा कार लिने
दो रा राम जाति सुभाव विभावना हेतु विरोध बिसेष जो प्रत
आछेप क्रम गनना आसिष प्रीय सलेष ॥१॥ सुभि नो भिन्न उपमा सहि
त अप्रपर घप्रति निय वेत सुदिम लेस निदरस भिमि निस्ख हे कार
रव संत ॥२॥ सु क्रम योंतर न्या सहे खोर स्रुजे क्रम समानि अन्यग्र
सुक्रम युक्ति पुनि युक्रम युक्तो प्रमान ॥३॥ दुविधि पुनि व्यतिरेक अग्र

रु सजीअपन्हुति युक्ति व्याज स्तुति निंदा अमित परियायोक्ति सु योक्ति
४ सहित समाहित जमक कहि वरनि सु सिद्ध समीत केसवदास प्रसि
सिद्धि कविक हो प्रत्यट विपरीति ५ रूपक दीपक रूप प्रहेलिका परिवृत्त उ
पमा चित्र भाषा इतने भूषननि भूषनकौं जे मित्र जाति ऐनं दो
जाकौ जे सो रूप गुन कहीए ऐसे साज तासौं जाति सुभाव सब कहत
वरन कविराज ७ यथा कवित्त पीरी पीरी पाट की पिछौरी कटि
के सो दास पीरी पीरी पाग पग पीरीयें पन्हैहिया बडे बडे मोतिन की मा
ल बडे बडे नैन नान्हा नान्हीं नान्हीं भ्रकुटी कुटिल बचन हिया बोलनि ह
सनि मृदु हसनि चितौनी चारु देषत ही वुनें पे निकाह गवन हिया स
जू के नीर तीर पेले चार सोर जुवीर हाथ है दे तीर राजी रामौहे धन हिया

81A

८ टी जांकोजेहोरूपहैवर्णनजातिसुहोय जहगुनहासादि
कनांहांसुभायोजातिकहिसोय ९ रूपअरुगुनदोउजहांजातिसुभा
वसुजानि यांतेकवित्तनमेंलखोंजातिसुभाववखानि १० स्व
भा वर्णनं गौरेगात पातरीनं लोचनसमातमुखउरऊरजातन
कीबातऐवरीहोये हसितकहतवातफूलसेझरतजातओठअ
वदातारातिरखामतिमोहियेस्यामलिकपूरघूलिकीजहोनोंओ
हेंअडिघरेऐसीलागीकेसोउपमानटोहोयें कांमहीकोहूलहीं
सीकाकेकुलजलंहींहीलहलहीललितलगासोलालसोहीयें
११ टी दो रा वसनअंगओजातिहैबचनादिकसुसुभाव यां
तेजातिसुभावकोकवितलखोकविराव १२ ईहांउपमाकहु

हाथिआवेसोजातिअलंकारकों प्रगटरूपहैजातिहीअनुप्रहे म. अ
थ भावना कारजकोंविनुकारनेंउदोहोतजिहठौर ।तासोंक
हतविभावनांकेसवकविसिरमोर यथा वित्त पूरनकूपूर
कोंनयाएकोसोमुखवासअरनअधररुचिसुसुधासांसुधारेहे चि
त्रतकपोललोललोचनमुकरअेंनअमलझलकझलकनिमोहि
मोरेहैं भगुटीकुटिलजेसीतेसीनकरेहीहोंहिंआजोएसीआवे
केसोदासहेरिहारेंकाहेकोंसिंगारकोंविगारहेमेरीआलीतेरेअंग
सहजसिंगारनिसिंगारेहे १४ अ दो रा विनकपूरअरपान
विनसुगंधअरुनताजानि सुधासुधारेजेअधरसुविसेषनउ
रआनि १५ चिबुंइतिहकपोलअुवविनुवीजेरहअर्थ कैसाकि

त

82A

लोललोचननिकेमुकरसरूपसमर्थ १६ मू दो रा कारनकौ
नहेंआनजेंकाजहोयम्नुसिद्धि जांनेंइहेविभावनाकारनछांडि
प्रसिद्ध १७ य स या नेकहूकाहूंनवानीनबाईनवारोवि
है नाइहवकेभईहें लोचनग्रीविनुकारोविनाविनुकीसीरगेविनुरमा
मई केसवकोंनकीदीनीकहोइहचेरमुखीगतिमेंदेलईहे छेली
नहेंईगईकटिक्षीनमुजावनकीइहरीतिनईहै १८ मू दो रा
प्रथमविभावनकेविषेकारनकोंनहिनाम दूजीमेंकारनकहो
अन्यसुजोवननाम १९ वा इहांप्रसिधकारनजेंहेंतेनहीनवा
ईक्योंविनुकाईवोछेलिवोजोवनरूपकोकारनहें प्रसिद्धहेयाजेंया
हअन्यकोकारनहेहेतुअलंकार अथ तुल न हेतुहेगहेंभां
तिदुइवरननसवकविराव केसवदासप्रकासकरिवरनिसभावअ

भाव २० भाव नु था स केसवचंदनहेंरन्यनैंअरिविंदनीकेमक
रंदसरीरौ मालतीवेलगुलावसुकेतुककेतकीचंपककोवनपौनै
रंभनिकेपरिरंभनसंभ्रमगर्वव्यनैांच्वनसारकोजीरो सीतल
मंदसुगंधसमीरहरस्योइनैहोमिलिधीरजधीरो २१ अ इनिम
वनिकोंपरिरंभनकह्योपवननेंपररंभनिभेटिवैाऔरसंभ्रम
इनमैंबाढ्यम्योतोइनमेंमिलकैंधीरजहरयो धीरजहरनकोहे
तुभयोपवनयांतेहेतुअलंकार दो हा सीतलपरसेमलय
पनवहतकपरसोमंद सुगंधमालतीआदितेंपवनत्रिविधिइमकं
द कंदसुखदाई अभावहेतु स या जान्योनमेमदजोवनके
कारयोकवकामकोकामगयोई छांड्योनचाहतजीवकलेवरजी
वकलेवरछांडि दयोई अवतजाबातजराटिनलीलतारतुपज

83A

रासवलीलिलयोरई केसवरामररोनररोस्त्रनसाधेहींसाधनिसिद्धम
योरई २२ अ काहूंहृपधकेवचनहेइंद्रीयसिपलदेखिकेंकहाउहें
किसाधुभयोसाधुनिकेलछ्छनहेतेंभये प्र दो रा हेअभावहे
तजरईहांतांहांप्रसरहजोइ नहीहेतुगोकेयांनह्योप्रथमविभावना
होय ज र भावअर्थजुप्रभावहेकहअधकाईभाव ज्योंज्ञ दीपक
पवनिमिलमलयादिकअधिकाव २५ ग्योहृपधपनहेंहेतुजोलघु
होनिकेमोहि परिअधकाईविनुकहम्साधुसंगजुतनोहि २६ जो
जेहेतुअभावहेनहिप्रभावतोजानि किहूंहिंडुकेवचनहेंलखिइंद्री
सियलानि २७ तातेहेतुसुभावनेधीरजहरनसकीन हहूतावर
साधनकह्योनहिप्रभावसोलीन २८ मर. समा अभा हेतु

क वि
प्रि ८३
83

भाव २॰ भाव तु था स केसवचंदनहंदरद्यनें अरिविंदनीके मक
रंदसरीरौ मालतीबेलगुलाबसुकेतुककेतकी चंपककोवनपौरै
रंभनिकेपरिरंभनसंभ्रमगर्वद्यनौ च्चनसारकोजीरौ सीतल
मंदसुगंधसमीरहस्योइनै सोमिलिधीरजधीरै २१
वनिकोपरिरंभनकसोप

83A

रामवलीलि

पदसु जान २५ यथा वेया मोकोसवेहजकी

गनिजाने औहीकोजोपीयपालनुमें

भैयेरीअडीठकेईवलोकिर

अथवमरहो
हमारी मर्तिको
अडीठकरकेप्र

केठानिपट

वहेतुहे औरसमझहेप

साराति को चंद्रमा देखि

जोहे पेप्रभावविनाहें विरो भास ऐने वरनतलगेविरोध

सोअर्पमवे अविरोध प्रगट विरोधाभास

२२ य

प्या जा दिन तें वृषभान लली हि अली मिलो मुरलीधर जोंहीं साध
नि साध अगाधि सबै बुधि सोधि जो हुतो अंमजन मैंही ता दिन तें दि
दिन मांनइ हूं हंनकों के सबअवलोकतवनाके हें ही पीछे अकाल प्रका
सें ससी चहि प्रेमसमुद्र रहे पहलें हीं २९ टी दो रा हुतो हेत
मिलापको हुतो तहां बुधि कोंम रह अधिकाई यों भयो हेत स भाव
स नाम ३० अर्थ रह किपा छे ससी न भअवै निसमांहि दिन हीं तें
अकंठ हित मिलन हूं हून सरसोंहि ३१ कुकु छेद तो ह्यांअनके कंठ
को कारन दिवस केयो पे निसमें सो नाही निसके भेरो निपट ऊनके कंठ
सो गति दिवस माहि यह नांही क्यों कि दिवस अधिकाई विनु हें नहीं
वंदन हि अम पल भा से यातें दिवस जु हेतु मिलन को सो अभावजु

तमयोप्रकासे रहांप्रेमउनकेठाहीहैं नहिहितसमयाधिनहूजोंहीं
श्रोमसमुद्र हूजेसेससिके चढेंहैं निसेयोंदिननाही ३२ वा उनके
ठादोउनकेंहैसोअंगसंजोगकोंहेतुहैअवअंगसंगहोइगो परिरेन
परेंउनकेठानिपट आतुरतासहितहेउहांप्रभाजुहेअपिकाईस
हितहोरुगी अवदिनमेंहेंतोसहीरेंकोसोभावयामेंनाही यातेंअभा
वहेतुहे ओरसमुद्रहेपूरणमासीजानिदिननहीमेंवढेहैं परिजे
सोरातिकोचंद्रमादेखिकेवढेतेसोदिनमेंनहिवढतु यांतेदिनहेतु
तोहे पेप्रभावविनाहें विरो भास तिने वरनतलगेविरोध
सोंअर्पसवेअविरोध प्रगटविरोधाभासरसमजानसवेसुवोध
३२ य परमपुरुषकुपुरुषसंगसोमियतदिनदंतनसीलपें

वि॰
या॰

85

कुदानहीसोरतिहै स्रजकुलकलसराहकैरहतासुषसाधकेहैंधाप
रदारप्रियअतिहै अकरकहावतपनुषधरेंदेषियत परमकृपा
लयेंकृपांनिकरपतिहैं विद्यमांनलोचनहैहीनवांमलोचननिके
सोवायराजारांमअदभुतगतिहैं ३४ टी पुरुषपरमकाहेकेजो
कुपुरुषसंगसोहैं रहविरोधअर्थ अवविरोधअर्थहसरोकुकहे
येप्रथीताकेपतिराजातिनकेसंगविराजे कुदानप्रथीदांनरो
हमहमार्गपरदारश्रेष्ठदारअकरजिनपैंकाहूकोकरनही कृपा
लश्रोतकृपानकरिविरोधहै अविरोधपक्षहैकरमैंहीनवाम।
लोचनकरहे वामलोचनापरिकाकचलहैनेत्रजाकें ३५०
दोहरा केसवदासविरोधमयरचीयतवचनविचार तो

85A

सो कहि तविरोध सभक्व कुलसुविध सुधार जहां विरोध मय वच
न होय सो विरोधाभास पुनि आपुसि ताहित रूप चितै चित स्या
म सरीर रंगे रंग राते के सवका नन हीन सुनै सु कहे रस कौ रस नो
विनु वांते नैन किधों के अंतरजामी रीजान तौ प्रियपदु मने त्रांते
हरगे हौरत है विनु पाइ न हरे हरी दरसे मति जांते २५ टी आपु
नौ स्वेत स्याम रूप नैन हैं अरु स्याम सरीर है श्री कृष्ण तिन के चित कों
राते रंग करे है विरोध है कहनु में और अभिप्राय अविरोध है राते रं
ग कहा अनुराग सों रंगे है कान नहीन और सुने रह समझ ते है संत
किये विरोध वाहिर की वस्तु देखें अरु अंतरजामी विरोध मन की पा
वत हो है विरोध विन पाइ न दौरत है अ विरोध और दौरत हो है

क वि
प्रि ८६
86

प्रश्न विनपरन दौरिवो कारन विन कारज विभावना क्यों न होइ
जहां उत्तर ईहां विरुधता प्रबल हैं विना पाइन दौरिवो विरुधता
है क्योंकि जहां अपाई हैं तहां दौरवो नहीं जहां दौरवो है तहां अप
इ नहीं अरु विभावना में इह रीति नाहीं जाहां पान नहीं वायें त
हां अरु न ता नाही अरु न ता ओठ नहीं में होत नहीं है यातें भिन्न
ही है म॰ म॰ सोभत सुवास हास सुधा सौं सुधारस्यो विधु विधुको नि
वास जैसें मोह कारी है कैसौ दास पावन पै रस है सुगति जे रीप रहि
यह रनि प्रहति कों प्यारी है वार कवि लोक बलवीर सें वलीन कहों
करति बरही बस औसी वैस वारी है ऐरी मेरी सखी तेरी कैसें कै प्रती
ति कीजे कृष्णानुरागी है गकरना नु सारी है ३६ टी पावन पर

तैसे

86A

महेसमाधुऐसीगतऔरपरहियहरनरहविरोध ह्व अ हेसम
रालकीगतिवारीवैसवलीकोंवसकरेंरहविरोधअरुवसकरेंहीहें
अवलयहेविरोधकिसनानुरागीकरनानुरागीविरोधजोहैसजे
सोअनुरागरूजोहेंसोकरिसोकरिकेंसोअनुसरहेकनिजोकेरवनिको
पत्नीइहअर्थविरोधभासेहें अविरोधअर्थजेरीहगाढेकेनेकोन
निनोईअनुसरीहेंनैननकीविसालतासू अथ सेषा कोर
उपाय
लीनें साधनेकारनविकलहोहोपसाधकीसिध केसवदासव
खानीएसोविसेषपरसिद्ध २७ टी वहसाधनपेंविकलकेकारन
वेदरसोंहि अरुमनसाधुसहोइसिधिसोविसेषजगमांहि २८
विकलकेकारनकहंजोमुनिंजेमनकोंविकलताहोइकियह

को सजे हो
पगीहे ॥के
सीहे हरिजोप

क वि
प्रि ८७
87
ग्यारहा

असमंजसप्रसें वंधनसाधनकहेहैं मनकोभ्रमसोहेरहेइहकहा
कहीहैं स या सापकोकेकनमालकपालुंजटानकोजूटरहीज
टआतें षलपुरानीपुरानेइवैलसुओरकीओरकहेविषमोजें पा
रवतीपतिसेपतिदेथीकहीइहकेसवसंभ्रमतोजे आपुनमोगताभीष
भिषारीमदेतदईमुखमांगीकहोंजें २९ टी वार्ता मुहमांगेको
जोसाधनसर्वविधकीसंपतिहेसोतोनहीसाधनकेसेंकहे सापकपा
लादिकरहवातअसंबंधसीहैं विकलतामनकोहरेहैं केतोसाधन
साधकर्वनीय केवाधकुवरनीये इहारोकरीनहै जेसेंकहीयेसिद
केसेहै आहिमनकेदातहैं सोसापकेकनसाधकहे हेतुअलंकार
होय केकहीये सिवकेसेहैं अभयकेदातहे तहांसापुकोकेकन

87A

अभयनाकोबाधकहै अरुरहकहीयेमहुं मांग्योदेतहैं सांप
केकंकनकोराखेहैं इहवातअसंबंधकहीहै विकलताकहेहैं
इहअर्थ सुप्रभु कवि तमोगुनओपैनओपनिविरूपनैनलो सुभायमानहैं
कलविलोपकरैंकोपकेनिकेतहैं मुखविखमरेविखधरधरैंमुंड
मालिभूतविभूतभूतप्रेतनिसमेतहैं पातकपिताकेउतपात
कोहीकोतिलकभावेगीतकोमहीकेकमिनकेहेतहैं योगनकोसि
द्धसवजगकोकलसिद्धिकेसोदाससदासुनअपोदासनकोदेतहैं
४० इहांहेअर्थपहसोभातिहै पुनि वेया वाजिनहीगज
राजनहीरथपतिनहीवलगातविहीनो केसवदासकठोरनकी
उनमलिहहाथहथ्यारनलीनो जोमतजांनतमेतनतेत्रनते
मनपाठपढ्योनप्रवीनो रहिकैलोकनिकोमगवारनि

ऐकविलोकनहीवस्कीनों ४१ इहांरछिकलोकनकोयासबमेंईस्वर
कोवसिकरिवोभाखिहें सोनकहीमध्य मेंउलटीवात्तविरोधहोनकहो
साधनकहावतारोवाजिआदिकोआनहोजोइहीविकलत्वकरहे पु म
राजकीकुमारिकावेलीनेसुकसारकापढावेकोकिकारकोनिके
सबसेवेनिवाहि गोरीरोरीभोरीभोरथोरीथोरीवेसेफिरिदेवतासी
दोरीदेरीआईचोरीचोरीचाहि विनुगुनतेरीआनिभ्रकुटीकमा
नतानकुटिलकटाछवानइहअवजेआहि ऐतेमानहीठईठतेरेको
असीठमनपीठदेदेमारतपेनचुकानकोऊमाहि ४२ टी या इहां
वाधनकारनहीविकलहे औरकेओरहीहै विनगुनकमानगन ये
होनिसानाअहहिपीदेमारनेोएईविकलता म. दो वाचिनआवे
लिषकछुदेषतेहाहनचाम अर्थसुरीवेदइकरिजानतपतिराम

88A

अर्थ केकरिवेकोंपढिवोकारनहैं अनपढिवोबाधकहैंए दोऊन
हैं अनवाचिवोकह्योइहविकलत्वसोवरननहै पहलेकवितनकीभां
तिइहांभावजानीये ऊज लाल न केसकछोररहोवस्तुमेंछोरकीजे
ता तके उक्षेतासोकहेहैंजिनकीबुध्दसपर्क ४४ यथा हरकोधनुष जैसे वधे हो ऐग सको पन नैतार तैं
तोरिलंकातोरिरावनकोवंसतोरयोतोरेजैसेहहहवसवातहै सरनके
सेसलफूलनलसहेरामसुनिकेतोरायकीसोहीयेहहहरातहै का
मनीरहतोरीलतारेतरुनीनहूकेलागिलागिपरतअरुचटिअंगनातहै से
मेरेजानजानकीतेंआनतहैजानकीछूतेरैनेनदेषतहीमनसेहै टोना
जातहै ४४ टीका हरा असहहग्यानतुतुमेंनसेनचुवहूषिहैजे
न रहीतकेइहठोररहेतहेजाननतकेछूवान ४५ मूल वित्त अ

क वि
प्रि ८४

जेतुमकहेतेमलकत
हैजोनमातमपान
कीआहे।।सोनहीं
मलकतातादूनम
लकतोनहीजलक
ता
89

कीपंकनसुभ्रंजनमनरंजनरंजनैनिजनारीको
नाहिनमल १

कनसंकनपयोधहूँकेंमलकतिनमपानकीति, छैति छ्वाह छाईछल
नाहीसूँकारीकों केसवकुपानैधानरेमयेविराजमाननमानीयेप्रम
नेरामवेनुवनचारीकों लागतहेजायकंठनागहगपालिनकेमेरे
जानेसोईकुंतकोरनतिहारीकों ४६ अर्थ हरा रहातकेरहबे
दड़तिसोकोरतहैजानि सुवहसभेगेपरकंठतिहहातुमलकतउ
रआनि ४७ प्रश्न जोयामेपरकंठकोपरमदोबड़हआहि की
रतभईमदोबतोलगीसांमतताजाहि ४८ ऊ र यहज्युवेदअर
स्यामतासोहियदाहलयाय तुवकीरतेदिगनागकेमपकंठप
हवातिजाय ४९ सोप्रकासनहीपहचईजातेहियामलीन
सोवहतुसरीकीर्तिकोहातुलखियतुपरवीन ५० और प्र

89A सववातननकोकीयोहैंइहांनिषेदवनाय प्रतिषेदालंकारकीनि
होयइहाइहभाय ५१ ॐ २ प्रतिषेदालंकारमेंइककौंतकनन
षेदै इककोंथापनकरतहैंसोनहिरीतिसुमेद ५२ ॐअप्रेत्ता
होहैसवैयाकवित्तलविहीय सवनर्कनिकोंटाकोरिकेथापीतर्व
निकोंटारिकेथापीतर्कसकीय ५३ इति नाज हज मवि
चिता कवि टीका सह रांम कायां सिष्ट कार व
णी नव प्रका ८ अथ छेपा कार णीनं दो रा
कारजकेआरंमहीजहांकरियतिप्रतिषेध आछेपनतेंसोंकह
तवहुविधबरनसुमेघ १ तीनहुकालववानीयेभावीभयोसुहै
त कविकुलकोंतंकहैंतप्रतिप्रतिषेदऊदोत २ टी प्रतिषे

त्रिपुरदैत्यके मारनवारे

१०

भविष्यकाल

धकारजकेआरंभमेंकरेसोआछेपालंकार भूतभविष्यवर्त
मानकेउदाहरनतीन्योहोहि मूल हेरा बुरज्योहोमहरति
पुरहरिवारिककरिभ्रूभंग सुन्योसवदमोहनेमदननेहुहीग
योअनंग ३ तांतेगोरिनकोजोयेकोनहिविधिभ्रूभंग को
जानेह्वैहेकहांप्रानसाथकेसंग ४ सु म कोविदकपट
नकारसरलगत नजजाउछाह प्रतिपलन्तानप्रेमके
पहिरेंनाहसनाह ५ टी सखीवचनहेंकोविदनायकासें
कहतहें इहनकारजुहेंसरहेकपटनकारकोहें कहारनेका
रकोरूपधरेंहें पेंहेंसर तवनायकाकहतहें किलगतनात
जात उछाहनहीजजात काहेतेंमेहकोसनाहपहिरेंरहतहें

वर्तमानकाल

संजोग

90A

तातेप्रतिषेधकरिवोबाधकनंहीं मूल छेप एनें प्रेमंअंधी
रजंधीरजेननेंम्हायंमरनंप्रकास आलिबंधरमेंउपायंकहिंसिंदा
केसवदास ६ अथ माछेप वर्ण प्रेमवषाननतंहींजहाउप
जतकारजबाध कहतप्रेमआछेपरहतांकोकेसवसाध ०
यथा ज्योंज्योंवहवरजेमेरेप्रानप्राननाथअंगनलगाईरोजआ
गेहुयपाइवो त्योंत्योंहसिहसिअतिसिरपरऊरपरकीबोकेऊप्र
बिनकेऊपरमिलायबो रोकपलइतऊतसाथतेनजांनदीनेंलो
नेंफिरिहायहीकहालोगुनगाइवो तुमतोकहततिनेंछाडिके
चलनअवछाडतरोकेसेंतुम्हेंआगेंउठधावो ८ टीका मू
दे रा छाडतकेसेंप्रानएतुमतेंचलतअगार तेम्हांप्रेमाछे

५१
क विप्र॰
91

किममरनाछेपविचार ९ ऊ र त्रियापितुमहतहँजाइपिय
चलिवोकहोसुजान तहात्रियवचुइमतुमकहतुचनछेडित
ममप्रान १० तुस्नेतुग्रागेधायवोह्यातेजठिप्रीयप्रान ऐछ्य
डनकेसेंतुमेंकहीप्रेमजुतवात ११ धीरजरेंहोंसुखपारोहोइ
त्यादिवातें ग्रथ छेप धेर्ज छनें दो वा प्रेमभंगभय
सनतजहांऊपजतसात्वकभाव कहतग्रधीरजकोंसुकविरह
ग्राछेपसुभाव स या केसवप्रानवडेहीविदाकहग्राऐप्रियाप
हिनेहनहैरी ग्राजमहांवनहेजोकहाहसिवोलहेग्रसेवह्यायक
हेरी कोप्रतिग्रतरदेयसखीसुनलोलविलोचनयोंऊमहेरी सें
हवकेहरिहारिरहेदिनवीसकलोग्रसुप्रानरहेरी १२ ग्र

91A

थ धिआ पत्र न कारजकरकहीएवचनकाजनिवारनअ
र्थ धीरजकोआछेपरइहवरनतबुधिसमर्थ १४ क ज चल
तचलतदिनवहुतवतीतिभएसकुचितकतविजचलतचलाये मो
ही जातहैतेकहेकहानाहिनेंमिलतआनिजानिइहछांडेंहि
वाटतवहाअहीमेरीसौंतुमहिहरिरहियोसुखमोहहेतेहारी हिसुख ५
सोहेंरहेसुखपायेही चलेहीवननितिजोतेचलियेचतुरपियसों
वतहीछाड़िजेयोजामोगीहोंआयेही १५ सुग अप सय
देप एनं ऊपजाएसंदेहकछुऊपजतकाजविरोध इहसंस
यआछेकहिवरनतीजिनहिप्रबोध क ज गुननिवलितकस
सुरनिकलतगाइललता ललितगीतब्रवनरचायहें चित्रतहो

क वि
प्रि ९२

92

चित्रनमेंपरमबचित्रानुमचित्रनिमेंदेषदेषनेंननिवायहे कामके
विरोधीमत्तसोधिमोधिमाघसबिबोधिबोधिश्रौधिनकेवासरथवा
यहें केसोनायकोमोंमोहइहहीकठनवाकीरसमेंरसिकलालपा
नकोषवाइहे १७ टी इहकहिबेवाकोयहइकठनेहे इहसंदे
हासोनायककेमनमें इहमनपानादिकोंटिजोहिपानषानय
हअर्थहे रसनाकेपानकहापीवेओरकोपाकरिषवायहें मर
वेप शोनें हरा मरननिवारनकरतजहांकाजनिवारन
होत जोनेंमरनोछेपकबिजेजिपबुह्लिअदोत १८ क
ते नीकेकेंकिवार देहोंद्वारद्वारदरवारकेसोदासषासपासासर
जोनछावेगो छिनिमेंछुवाइलेहेंऊपरअटानओजुओग

छू ९२

छूतायल्लेऊगी

मोरचे

92A नप टाइ लेहोजेसोमोहिभावेगो न्यारेन्यारेनरदानेमंदैगी
उरोवजालपायहेनपानीपौनआमननपावेगो मोहनतिहारे
वेलेमोपहमर नमरहआमनकहतसुजोकोनमगआवेगो आशीर्वाद
१९ सुग आसि दोप गिने आसिषंषियकेपथ्यकोदीजहि
दयहिदुराय आसिषकोआछेपढहकहतसकुलकविराय रसीआकेगन
२० कवि यथा मत्रीमित्रपुत्रजनकेसवकालिआगनंसोदर
के सजनिजनिभट सुवसाजसो ऐतोसवहोतजातजोपेहेकुस
लगातअवहीचलोंप्राननसगुनसमाजसों कीनोजुप्राकनुवा
धछमियोसअपराधरहीयेनपलआपवेधवधियेनलाजसो
होंनकहोंकहतनिगमसवअवतवराजनिपरमहितअपनेई

वि
क
प्रि
९२

चित्रनमेंपरमवृचित्रानुमचित्रनिप्पोंदेषदेषनेंननिवायहे [illegible]
[illegible]

[illegible]
वपार २५ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] आवै [illegible] कोसोडमहुन
[illegible] रहनो तमीरोमि
बा [illegible] सिवतुमहोस जानिपियातुमहो वसतमोहजेसोक [illegible]
हनो २४ दो रहोऐकहिवेश्राजामीहे श्रय पाय प
न कोनोएकअपायकरिरोकोयेप्रियप्रस्थान तासोकहत [illegible]

[illegible]हआछेपसुजाने २५ यथा वैद्या मोकोसवेहजकी
[illegible]लीहरिगोरिसमानिसुहागानिजाने श्रेसीकोजोपीयुपाल्हतुमें
किनुगोकलमेंबसिवोऊरआने म्हरीमेरीअडीठकेईवलोकिर
हे[illegible]नमाने प्रेमनछेमनआदिरेकेसवकोऊनमोहवो
[illegible] टीका हरा गोरिसमानिजोमानहीमोहिस
[illegible]निंदसवविछुररही किमतीय २२ यातेमे
हम[illegible]रहठेम चलीएयहीऊपावकरिकह्योवचे
री[illegible]नछेमनआदिदेपहचानोनहिकोइ ए
नरा[illegible]विधजोइ २८ जहाआदेछिम्हरतम
जवव[illegible]हिचानुकहीयेसजोम्हरीवदलन

अथवामरहो
हमारीम्हरीको
अडीठकरकेग्र
हिस्सकरकेकोई
ओरनहेवेनम्च
लोफिरहेजोकछु
होऊवातेमेमूनमा
नेतोकरहेरेठ

काजसें चलीऐसगुनसमाजसेंजामेकुसलविचार आसिषकें
आछेपरहुवचनकतवकहार २२ मूल धर्मीत्ते यथा राघ
अपनेंधर्मजहांकारजरहिजाय धर्मीछेपसदाइहेवरनतसवस्
वपाद २३ क त्त जोहोकहेरहीयेतोप्रभुतायेंहोतचलनकहो
तोहितहांननांहीसहनो भावेसुर्केहुतोऊदासभावप्रमाननाथ
सायलेचलनहुकैसेलोकलाजवहोत केसोरायकीसोहमलुन
हछबीलेलालेचलेहीवनतजोपैनांहीरातरहनो तेसीऐसि
बावहोसिषतुमहीसुजांनिपियतुमहीवसतमोहजेसोकछूक
हनो २४ टी रहीऐकहिवेआज्ञासीहे अथ पाय प णी
न कोनेरोकअपायकरिराकीयेप्रियप्रस्थान तासेंकहतअपा

लोकरीतका
कैसेवहनोनिवा
हहोवे

गट

93A

यवविरहआछेपसुजान २५ यथा वेधा मोकोसवेहजकोछे
बतीहरिगोरिसमानिसुहागनिजांने ओसीकोजोपीयपालनु मैं
विनुगोकुलमेंबसिवोऊरआने सरतेमेरीअडीठकेईवलोकिर
होजुकछूमनमांने प्रेमनछेमनआदिरेकेसवकोउनमोहवो
हेपहिचाने २६ टीका हरा गोरिसमांनिजोमानहीमोहिसु
हागनहीय जेहीकरिहेंनिंदसवविछुररही किमतीय २२ याते मे
रीसरतिहिकरिअदिठिदहठोम चलीएयहीऊपावकरिकह्योवच
नइमिवाम २८ प्र प्रेमनछेमनआदिदेपहचानोंनहिकोइ ए
जुवचनतेआर्थसेप्रश्नजुवहविधजोइ २९ जहाआदेहिसरताम
ई तांहांपहिचानुनुनांहि पहिचानुकहीयेसजोसरतिवदलन

अयवासहो
हमारीसर्तिको
अडीठकरकेअ
हिष्टकरकेकोई
ओरनदेखेनुसव
लोफिरतेजोकछु
होऊवातेमेमूनसों
नेसोकर हेरठ

मांह ३० मूरतवदलीहिंविषेछेम [illegible] लषत सवकोय ह्योतोकह्योकि
छेमतालषैनकोऊसोइ प्रेंमनमेंानपछानहीकछुव्यर्थहीवात·
यातेंयामेंप्रलकेभाववहुतसरसात ३१ तिय नर जिवचवकरेग्र
दिष्टविधसेमोमूरतिमांहि प्रेमछेमदोऊदेहमेतेऊपहिचानेन
हि ३२ प्रेमतेमयहहीकहेंहमयातनकेनांहि इहितेतनकछु
औररसौऔरेविधसरमांहि ३३ आदिसब्दतेंजानीऐजोवनांहि
वुधआहि जेऊपहिचानेनहीमोमूरतिअवगाहि ३४ मूल
दोप था सिवहीसिवजहांराबीयेसुवहींसुवदांनि सिदा
तेपकहोवरनिछप्पयवाराहवांनि ३५ अथ उमा यथा
फलीलतिकाललितजरनितनफूलेतरवर फूलीसरितासुभ

९४A गसरसफूलेसवसरवर फूलीकामिनकामरूपकरिकंतहिपूज
हिं सुकसारोकुलकेलिफूलकोकिलकलकुंजहि कहिकेस
वश्रसोफूलमहिसत्तहिंफूलननलाईऐ पीयश्रापचलनकीकाच
लेचित्तनचेतचलाईऐ ३६ सुग सवे घघ केसवदासश्र
कासश्रविनवासतसुबासकरि वहितिपवनगतिमंदगातमक विभाग
रंदविंदुधरि दिसविदिसनिछुविलागिभागपूजतिपरभावरि
हैं॥अंघहीश्रंघवधिरमोंराविदेसनर सुनैसबदसुबदसि
षसीषपतिरतिसिषईसुबसाथमें वरविरहनिवेधतविसेषके वरजौरावरीवि रहनकोवेधतहै विसेषकरकेका मदेवकेविसष वानवैसाषमें
रिसुकामविसिषवैसाषमें ३७ टी होतगंधहीतेंश्रंधश्रौर
वधिर श्रंधतेमोंराहोतहेंगजगंडहूपैवेठतहें वधिरविदेसीहो
तहें सुनतहीनांहिंउपदेसगम्यागम्यविचारसुनिसबदतेंसब

क वि
प्र ८५
95

मरहरहोगिम्रोहेति नका

६

दम्रेहेम्रेहीहीवहे१तिरतिसिबर्ईरतिपूर्वकमेंसिषईहेकेहीसिषेसुष
कीसाष ३८ मूल पजे वर्ण रोकमूजामयहोतिमूजानजपंच
मूजाम्रम अनिलम्रवुम्राकासंप्रवनिहेजानम्रागमासम पंपाय
कितंमदमुकतिमूकितासरसिंधुरजोवनि काकोदरकरकोस
उदरतरकेहरमोवतपियप्रवलजीवइहविषम्रवलसकलविक
लजलयसरहत तजिकेसवदासजदासमतिजेठमासमजेठे
कहत ३८ प्रस्त तो पंचिमूजाऐकमूजामयहोतहे कहा
म्रममय होतहे जोइहांतोचारहीमूजाकहे अनिलम्रादि
आगितो आगिहेही तोपंचसब्द हृषाहे उ र रोकमूजाम
यकहेम्रगनिहीमयहेगरोहे मूजाकहीएप्रानीतोतेहेंपियपान
हीनामेंपंचमूजाकोम्रमताजो मूल साह रीने छपे वच

काकोदर सर्पकरहा थीकेसंड तिनकोका रापजानीता

95A

नचक्रपरचंडचलतचहं ओरचपलगात ममनूभामनीतजातम
गतमोनंतिनकीमति सन्यासीरहमासहोगतरंग्रे ॥ सनिवासीसु
रूषनकीकोकहेंभयेपंछीओनिवासी रहेंसमयसेजसोवनलयो
क्रियहिसाथश्रीनाथहं कहिकेसवदासअसाठ चलिमेंनसुन्यो
श्रुतिगाथहं ३८ आव वर्णनं केसवसरितासकलमिलतिस
ागरमननमोहें ललिततलतालपटातनतरुनितनतरवरमोहें नि
तचपलामिलिमेचचपलचमकतचहं ओरनि मनभामनिको
भेटिमसमिकूजतिमिसमोरनि इहरीतरमनरमनीनकोरमण
अरलगेरमावन गमनकरनकोकहेंगमनसुनीरोनहीआम
न ४ अथ द्रुप वर्णनं घोरतिघनचहंओरंघोषनिघी
घहिमंडहि ^ झिलीगनझंकारपवनझुकिझुकिझकझोरत

धाराधरधरिधरिधररतिमुसलधारनिजलहंडहि १

प्रथीसोंलगवे

छोटावडा
सवद्र

वायसिंहगुंजरतपुंजकुंजरातारूजोरतनिसिदिनविसेषनिः सेख
मितिजानसुश्रौलीओडीये पियदेसपयूषविदेसविषमांदोम
मननछोडिये ४१ ग्रासो वर्णिनं प्रथमपिंडहितप्रघट
पितरपावनयरग्रावहि नवदुगनिनरपजिसुर्गग्रपवर्गनि
पावहि छत्रनिदैछित्रपतिलेतमुवलैसंगपडित केसव
दासग्रकासग्रमलजलजलजिनमंडित रमनीयरमन
रजनीसरुचिरमांरमनहंरासरतिकलकेलिकलपतसद्या
रमैकंतनकरहुविदेसमति ४२ ग्रथ र्तिक णिन वन
उपवनजलथलग्रकासदीसंतदीपगन सुखहीसुषसुखरा
तिजग्राबेलेदंपतिजन देवचरित्रवचित्रचित्रचित्रतग्रंगन
यरजगतजगतजगदीसजोतिजगमगतिनारिनर दिनदोनहान

नारायन जागते ते
देव जे ठाउ नीरिवा

लीलाग्राद
क

96A

गुनगानिहरिजनमें सुफलकरलीजीऐ कहिकेसवदासजहास

मनिकेतनकादिकिंजीऐ ४२ लग मार्ग छंव ने मासन

मेंहरिअंसकहतजासोसवकोई स्वारथपरमारथनदेत्तेमार

थमहिहोई केसवसरितासकलफूलफूलेसुगंधगुर कुंजित

कुलकलहंसकलितकलहंसनिकेसुर दिनपरमननरमसीतन

गरमकरमकरमयहपाइरितु करिप्रानन्नाथपरदेसकोंमारग

सिरमारजानचितु टी कलहंसकुंजितहें अरुकलकहियेम

भोजन नोहरहेंसनिकेसुररराजहंसनिके पेय ऐनें सीतलजलथ्थलव

सनंअसेनंसीतलअनरोचक केसवदासअकासअवनिसीत

लअसमोचक नेलतहलतांमोरतपनतापननरवरनारी राज

अकासविषे
अरअवनीप्र
घ्यीविवेजोमी
तलहेसावियो
गनीकेअस
अअपाततां
केमोचक छुडावतहे

रंकसवछोरिकरात नहीअधिकारी लघुद्योसदीहंरजनीनि
सुनिहोतदुसहदुखरूसमें यहमनक्रमवचनिविचारपियपंथ
नकीजेपूसमें ४५ माघ णीनं यथा वनउपवनकेकी
कपोतिकोकिलवहुवोलत केसवभूलेभमरभरेमाइननि
तडोलत मृगमदमलयकपूरधूरिधूसरतिदसोदिस तार
मृदंगसुधंगसुनतसंगीतगीतनिहि खेलतवसंतसंतताससुख
रसंतअसंतअनेगगति घरनाहनछाडियेमाहमेंजोमनमांभ
विदेसमति ४६ फा नव ने लोकलाजतजलाजरंकनि
जुवति १ रसंकविराजत जोईभावतसोईकहतकरतपुनिहसतनलाजत
घरघरजुवतीजोरिगहहिगंठिनिजोरहि वसनछीनमुख

तिनातुनयातांकोतोरत हैरनकेरूपपेकाहूकीनजरमांसगजाय

मांझिश्रांजिलोचननेंतिनंतोरहि पाटवाससुवासअकासजडिम
मंडलसवमंडिये कहिकेसवदासविलासनिधि फागुनफागुनकछ
डीये ४८ स महेरोसव उम्नि नाज सह राम रच्ि याक
प्रिया कायां हज मचे कायां सेया जपा कार गिनं
मद मप्र सः१० श्रीअथ मालं रव ने दे रा श्राद
श्रंत्तभरवरनीयेसोक्रमकेसवदास श्ररुगननासोंकहतहेंजि
नकेवुधिप्रकास १ यथा पय धिगमंगनविनगुनहिमन
सुधिगसुनमनरिमहि रीमसुधिगविनमोजमोजधिगदेत
जुषिमहि दांनसुधिगविनुसांचसाचुधिगधमनभावहि ध
मिसुधिगविनुदयादयधिगअरिककहश्रावहि श्ररिधिग

श्रवीर

के वि
प्रि ५८

९८

वित्तनमालई वित्तधिगजहांनऊदारमत्ति मत्तिधिगकेस्वरतानविन
ज्ञानसधिगविनहरिभगत्ति २ टीका २ठा मोजहंकोपिकार
श्रनुपछत्तावनदत्तविनैदत्तविनो दत्तधिगसोनिरधारलोग
दियामनसोचुविनु २ सांचदेतधिगताहिजुवहध [illegible]विवि
नोसोक्रमनिरवाहि सममिलेतजेस्कविव [illegible] नि
॥ सोभगतसोनसभाजहांहद्दन व्रद्दननेजे [illegible]
नपद्देनसो चनमाचत देहदयानरिपि [illegible]
यांजीनपमेघरेंघरचमेनसोजहांदांनच [illegible]
व हांसौंकेसवसोचनसोजुवमेंछुलछ्याहि [illegible]
विनभवनभवनतजिजियविनुकीनो

सुषहितजिसंपतिहीनो संपतिंबिनुदानदोनतजिजेहोनविप्रम
ति विप्रतजहिबिनुधर्मधर्मतजियहिबिनुसंपति तजिसंपमस
[illegible]मतजिदीहडुगीबिनुजेवसे तजिदुर्गसकेसवदासकवि
[illegible]लपरनलसे ६ सुगममानि अथ नाग वर्णन
[illegible]चक्ररविरेकसुक्रकीदस एकद[illegible]
[illegible]गरीसद ७ नदीकुलदेरामसजपत्तयहकीधार देखे
[illegible]नहिजेजनमंपदसुजंअश्विनीकुमारि ८ टी रामपुत्रक
तलवप्रसिद्ध हसलसक्रविविपत हेअश्विनीकुमारहेनल
कुवरसुभअवे ९ मू लेषनडकसुजंगकीरसनांअयनमि
जानि गजरदसषचुकरेंडकेक ष्पासियावषानि १० टी अ

चित्तनसालई चित्तधिगजहांनउदारमति मतिधिगकेसवशानविन
ज्ञानसुधिगविनहरिभगति २ टीका रठा सोजहंकोधिक्कार
अनुपक्षुतावनदत्तविनदत्तविनो दत्तधिगसोनिरधारलोग
दिषामनसांचुविन्त २ सांचदेत्तधिगतताहिजुवहधर्मनिष्ठावि
नांसोक्रमनिरवाहि समभिलेत्तजेसुकविवर मूल निसा
या सोभगतसोनसभाजहांहहूनब्रह्मनज्ञेजेपठेंकछुनांहो तें
नपठेंजेनसाधनसाधनदोहदयानहिपेंजिनमांही सोनद
यांजेंनधर्मधरेंधरधर्मनसोजहांदांनहृयांहीं दांननसोज
च हांसौनकेसवसांचनसोजुवसेंछलछाही ५ तजहिजगतन
विनभवनभवनतजिजियविन्तुकीनो जियलजिसुषनदेय

सुषहितजिसंपतिहीनो संपतिबिनुदानदानतजिजेहोनविप्रम
ति विप्रतजहिबिनुधर्मधर्मतजियहिबिनुसुपति तजिसुपसु
बिनुसुमतजिदीहदुर्गबिनुजेवसे तजिदुर्गसुकेसवदासकवि
जहांनजलपुरनलसे ६ सुगममानि अथ नाग वर्णनं
ऐकअग्रामांचक्ररविऐकसुक्रकीहद्य ऐकैदसनगणेसकोजान हैवरनन
तसगरीसद्य ७ नदीकूलदेहरामसुजपत्रषडकीधार हैले
वनहिजजनमपदसुजअस्विनीकुमारि ८ टी रामपुत्रकु
सलवप्रसिद्ध कलसुल्कविविपत्र हैअस्विनीकुमारहेनल
कुवरसुभअव २० सु लेषनडंकसुजंगकीरसनांश्रयनमि
जानि गजरदसुषचुकरेंडकैकष्मांसिषावषानि १० टी अ

क वि
त्रि ५५
९९

पनद छनायनऊत्तरायनसूर्जिअदेहोत्तहे मृ गंगामगंगागेसहू
गंत्रीवरेषमुनलेषि पाककंकालत्रेसलवलिसंध्याजीनिविसिधि
११ पुष्करविक्रमरामविधित्रपुरत्रवेनीवेद तीनितापपरिम
पपदजुरकेत्तीनिसवेद १२ त्री गंगाकेमार्ग स्वर्गमृत्युपा
ताल स्वर्गमेमंदाकिन मृमेंभागीरथी पातालमेअलक
नंदा गु त्तीन सत्व रज तम पा क न अग्नि ज
ठराग्नि वाडवाग्नि का तीन भूत भविष्य वर्त्तमान
पुष्क तीन ज्येष्ठ मध्य कनिष्ठ विक्र त्तीन मन व
च काय रा त्ती श्रीराम परसराम वलराम त्रि र
स्वर्ग मृ पाताल त्र नी गंगा यमुना सरस्वती

99A

वे यजु रिग साम ता ती अधिदेव अध्यात्म अधि
भूता और कफ ज्वर वात पित्त मूल वेदवदनविधिवार
निधिहरिवाहनभुजचारि सेनाअंगगजपायजुगआश्रमवरनि
चारि १३ सुरनायकवारनरदनकेसवदिसावखानि चतुर्थ
हरेवनोचमूचरनपदारथजानि १४ टी समुद्रचारयोदिसि
नके आ म ब्रह्मचारी वानप्रस्थी संन्यासी से अंग
हय गय रथ प्यादा उपा चारि साम दान भेद दंड
व्यूह चना क्रोंचव्यूह चक्रव्यूह सकटव्यूह धनुव्यूह
पदा चारि हैंअर्थ धर्म काम मोक्ष शेष सुगम से
पंडुपुत्रउंड्र्यंकमलरुद्रवदनगतिवान लछ नपंचपुरान

गृहस्त ५

कामदेवकेवा
नाकीगनपं
चतराकीहे

सूत्र वार्तिक कोस भा
स्य माहा कविन के प्रजोग

क वि
प्रि १००
100

केपंचअंगत संर्पन १५ पंचवरगोतत्तपंचअरुपंच सबदपरिमा
न पंचसंधिपंचांगभनिकंन्यापंचसमान १६ पंचमहापातक
प्रगटपंचजग्यजियजांनि पंचगव्यमातापितापंचाग्निजनिवषा
नि १७टी पंच मूल नाभि हृदय कंठ भ्रकुटी सिर
सिव षपंच सद्योजात वामदेव ईसान अघोतत्तर तत्पु
रुष पंच न सोषन मोहन संदीपन उनमादिक संता
पन पुरा लछ पंच विसर्ग मन्वंतर वंस वंसानुवं
स पंचा तरु मूल दल फूल त्वचा फल पंच न
प्रान अपान समान उदान व्यान पंच गौ कवरीदि
पंच रु मंदार पारिजात संतान कल्पद्रुम हरिचंदन

100A

पच सि संज्ञा स्वर प्रकृति व्यंजन विसर्ग पं ग पंचाग्निभी
पाठहै अग्निनितीनकहीपांचभीकहतहै भारथमेवनपर्वहै त
हांतीर्थजात्राकेप्रसंगमै अष्टावक्रसोंवंदीकोवचन पंचाग्नयः
पंचपदापंक्तिःयाटीकामे दक्षणाग्नि गार्हपत्यहवनीय सभ्यऔ
लौकिक ५ घटपांचअग्नि तिथि वार नक्षत्र जोग करन
क पं कुंती द्रोपदी तारा मंदोदरी अहिल्या पं ज
अजमेध हयमेध गजमेध नरमेध वाजिमेध पं ग
दुध दही घृत गोविंदु गोमूत्र पं मृत दुध दधि घृत
शर्करा मधु पं मा गृहपत्नी नृपपत्नी मित्रपत्नी स्व

क वि
प्रि १०१
101

सुरपत्नी जननी पं पि ऊपनेता गुरू अंनदाता भय
त्राता पिता इनकीस्त्रीसोभीमाताजानीये मू कुलिसको
षटतर्कषटदरसनरसमितुरंग चक्रवर्त्तिसिवपुत्रमुषसुनिष
दरागप्रसंग १८ षटमातापटवदनकीषटगुनवरनहुमित्र
भ्रातताइनरषटगनहुषटपदमधुपकवित्त १९ टीको ट
स्त्र न्याय वेदांत सांख्य पातंजलिवैसेषक मीमांसा
षट स अम्ल लवण कटु तिक्त मधु कषाइ षट रु
वसंत ग्रीषम वर्षा सरद हेमंत्त सिसर अं ष वे के
सिक्षा कल्प व्याकरण ज्योतिष छंद निरुक्त चक्र हीं
युधिष्टर विक्रम सालिवाहन विजयाभिनंदन नागार्जु

101A

कलकी बट ग भैरव माल कोस हिंदल श्री दीपक
मेघ बट ए ईस्वरता ज्ञान कीर्ति विषय विरति
मोष श्रा ताई अग्निद गरद दीनसासुद देत्रहारी
कलत्रहारी धनहारी कवितछप्पयकेपद सू सातरसा
तललोकपुनिद्वीपसूरहपवार सागरसुरथैरितालेतरश्रे
नईतीकरतार २० सातछंदसातोपुरीसातताुचासुबसात
चिरंजीवमुनिसातनरसातमात्रेकासात २१ टी सात सा
त तल अतल वितल सुतल तलातल रसातल
पाताल सात क भूलोक भुवलोक स्वर्गलोक महर्लोक
जनलोक तपलोक सत्यलोक सात प जेर लव

क वि
प्रि १०२
102

कुस शाक शाल्मलि क्रोंच पुष्कर वारदिनसातहै सात
मुद्र छार छीर घृत मधु दधि वारुनी जल गिर
त सुमेरु उदयाचल लोकाचल हिमाचल विंधिमाद
न कैलास सा ६ अतिवृष्टि अनावृष्टि मूषक टीडी
सुक निजचक्र परचक्र साततात अनुद्रुत द्रुत लघु वि
श्राम गुरु प्लुत सा छंद गायत्री अनुष्टुप वृहती जग
ती त्रिष्टुप उष्णिक पंक्ति सात री अजोध्या मथुरा माया
काशी कांची अवंती द्वारामती सप्त रंजीव वलि व्या
स हनूमानजी वभीषन कृपाचार्य परसुराम म्र. योगग्रं
दिगपालवसुसिद्धकुलाचलचाल अष्टकुलीअहिमाकरन

102A

द्विगाजजन्मरुनिविचार २ टी योग गं यमनिम आसन प्र
णायाम निदिध्यासन ध्यान धारणा समाधि अ सिद्ध
अनिमा महिमा गरिमा लघिमा प्राप्तिकाम वसिकरन
ईसत्व तरुनि अष्ट पका म. अंगन्यारमू.खंडरसवाधि
छिनिकुचनिधिजांन सुधाकुंडमहनाडिकानमपामक्तिव
षानि टी निद्दि माणंपद्म पद्म संष मकर कद्व
यमु कुंद नील वर्ष नम भक्ति श्रवन कीर्तन स्मर
णं पादसेवन अर्चन वेदन दास्य संख्य आत्मनि वेद
न म. रामनसिरश्रीरांमकेदसअवतारवर्षानि विस्वेदेवा
देशदसदिसादसादसजोनि २४ टीका दस वत्ता मत्स्य

क वि
प्रि १०३
103

कछ वराह न्रसिंह वामन परसराम श्रीराम श्रीकृस्न
बौध कल्कि मूल विन्न यथा ऐकपलथितिपेंवसनप्र
तिजनजीवयद्देकरपेदेसकरकोंधरनुहें त्रिगुनकलितवपुव
लितललितगुनगुननकेगुनतरुफलतिकरहिकरनुहें
चारिहोंपदारथकोंलोभचितनितनितदेवेकोंपदारथसमूह
कोंपरनुहें केसोदासदंद्वजोनभजलअ्रमतपंचभूतकोप्रभव
भवभूतिकोंसरनुहें २५ मु म पुनि विन्न दरसेंनसूरसे
नरेससिरनामेंनितपटदरसनहींकोंसिरनाइयनुहें केसोदा
सपुरीपुरपुंजनिकोपालकपैसातहींपुरीसोंपरेंपेमपाइनुहें
नायकाअनेक,नेकोंनाइकनवअष्टनाइकानिहींसोंमनलाइ

103A यातुहैं नभधाहीहरिकोभजननंदजीतजकेंदसअवतारहीकोंगुन
गाइयातुहैं २६ टीका अदो रा ओरठोरहेंहेगनेजैपोतियवहु
पुनिआठ नभधादसअवतारमेंरीतितजीकिमपाठ २७ ऊ र
नभधाहीयोंकहनेमेंवहुधाहंधुनहोय दसहीसोंहितुजोअवर
हेरहधुनिहांजोय २८ मूल धन्या धाव नले र माता
पितागुरदेवमुनिकहतजुवहुसुषपाई ताहीसोंसवकहतहेआ
सिषकविकेराय २९ यथा वित्त मलयमिलतवासकुंकम
कलितजुतजावकसुमनवसजितललितलकर जटतजरायकी
जजीरीबीचनीलमनिलागिरहेलोकनिकेनेनमानोमनहर वि
राचिहसोंरामचंद्रकेचरनजुगदीवरेंआसिषाअसेषमिलिनारोन

र हयपरगयपरपलिकासुपीठपरअरिउरपरअवनीसनकेसी
सपर ३० पु होइजोकोऊचराचरमध्यमजातिमजातिअनुजम
हीको किंन्नरकेनरनारिविचारिविचारिकिवासुकरेथलके
जलहींकों अंगीअनेगकिमृहअमृहउदासअमीतकिमीति
सहीकों सोअथवोकवहंजिनकेसवत्ताकेउदोतउदेसवहींकों
३१ सु म प्रेमा कार ऐनै कपटनिपटमिटिजयजहांउ
पजेपरनखेम ताहींसोंसवकहतुहेंकेसवउतमप्रेम ३२ क
न कहंवातसुनैंसपनेहुवियोगकीहेंनकेहेंडुरहूकहियो मिल
ठेलीएजासुहवालकतिकहितांसोंअवेलोकोंजानकीयो कहीये
कहिकेसवमेंननिकोंविनुकाजीहपावकपुंजपियो सखीवरजे

104 A

अरुलोकहसेंकहकाहेकोप्रेमकोनेमलीयो ३३ टीका ॥ बिनुकाज
पावकपियोइहांप्रेमकीहांनिहें ॥ उ ॥ र ॥ सखिसोंकहतकिनेनाउबअरा
निकाजबिनुजानि ३४ मूल ॥ श्रेष ॥ एंने दो ॥ रा ॥ दोयतीनअरु
भांतबहआनतजांमेंअर्थ ॥ श्रेष्ठनांमतिनसोंकहतजेंहेंबुद्धिसमर्थ
४४ छिती ॥ घं ॥ धरतधरनरैसखीसचरनोदिकनिगावतिचतुरमु
षसबसुषदानियें ॥ कोमलअमलपदकमलाकरकमलकलित
गुनकोनअरआनीयें ॥ हिरणकस्यपुदानकारीप्रहलादहितनृसिं
जपदऊरधारीवेदनवषानिये ॥ केसोदासदारिदहरदिकेबिदार
वेकोंएकेनरसिंहकेकेअमरसिंहजानीये ३६ टीका ॥ सिंह छ
धरतहेंधरनिंसोछविसोजटामेंसिवजोकोपगाजलविधिगावेस

सदानिये कोमलजुपदतेविकमलाकेकरमांहिचापिवेमेंकजजुग
मानिये हिरनकसदांककारीगतिप्रहलादभक्तिहितओरमनुपतउर
आनीये दारिदओड़रदकेवडेंहीविदारकहेंऐसेप्रभुश्रीनृसिंहसदउ
रआनीये २७ नृप छअर्थ जांकेंचरनोदिकेकोंधारतहेंमपसि
गावतयोंकविनमुषसुषदाईहें जांकेपदकमलाकरजुधनमांनता
केजलसेंकलितकहाधोवतमदाइहें ललितजुगुनगुनीकोंगनउ
रलावेओरहेंमसज्यादानहिहितमोदगतिभाईहें दिजनिजवेदन
वषानेपगधारेअरदरिदसुषफलनासेंनृपकोनिकाईहें २८ मू
ग्रथ यप त्रिअर्थ परमविरोधीअविरोधीहेकहतसवदांमनि
केदानिकविकेसवेप्रमांनहे अधिकअनंतआपुसोहतअनंतसं

105A

गअसरनसरनसुरछिकनिधानहे हूतमुकहितमतिश्रीपतिवसति
हियभावतहेंगंगाजलजगकोंनिदानहे केसोरायकीसोंकहेंकेसोरायदे
षिरछकेसमुछकेअमरसिंहरानहें ३८ रुद्र छप्र कवि परमवि
रोधीसवसृष्टिकीप्रलयकरेंतापीसवअविरोधीहेकेधोकहतहें दोनी
ऊपजाइदेतदीननकोंयातेंसृष्टिकरताहेंरुद्र भेदवेदतेंलहतहें जि
नकोंनअंतचिरजीवीतिनमेंअधिकसोंहेसेससंगमेंरत्नाकरतेंहें ती
जेनेंनअग्निअौरविस्नुवसेहियभावेगंगाविस्नुरूपीऐसेंरुद्रमहातेहे
समुद्र पद पं वडेजेविपछीरोधीतिनहूंकेमारगकेपरिअविरोधी
हेनवेरकछूमनमें कहेंसवदांतिनकेदातादेतरत्नादिकसोहेंसमुद्र
सुरजीवजलंजनमें आपअसरनहेंअचलहोसरनताकोरछिकअौ

106

सुषचरवाडवासुजनमें श्रीपतिसमेतिवसेंसोभामानगमाजलजगकोंका
रनजोसमुद्रकथनमें ४२ अर्थ पपछ यथा परमहेंन्दपयेसेदु
रहेंविरोधछाड कहतहेंगजनकेदातासुप्रमानहे सवतेंअधकऔ
रनहीअंतजांकोंयेसोपानपहेंसुषसोंसवआंनहें सहितजेरनअथवा
किअसहितरनसवहीकेरछिकओसदनसुजानहें जशकोअ
गिनहितसोभाओप्रतिष्टाहियपुरनवसेपायोंन्दपतिकोंवषानिहें
४२ मूल रिअ यथा दानिवारिसुषदजनकजाततानुसा
रकरषतधनुगुनसरसुहांएहें नरदेवछयकरकरमहरनष
रहषनसुकेसोदासगायेहें नागअरप्रियमनेलोकमातासुषदा
नीसोंदरसहाइकनवलगुनपायेंहें ऐसेराजारांमहूजरामकिपरसा

106A

रामकिधोंकेसोदासस्यामरामऊरआयेहें टीका मचं पद दो
नवारिंद्रहताकोंसुषदओजमककीचिंताअनुसरघनुअचितसुहा
एजोंछि नरदेवछयकरमहेंजोंकेऐसेरावनकेहंतायरद्वषनवि
नासीमोमि नागधरसिवज्रकेप्रियमनलोकमाताजासीतासुषदा
निछलमनकेसहाइगानि नवलसुअरदमुजागुनसेतवेघनादि
ऐसेप्रभुरामचंद्रवेदनकहेवषानि ४४ श्रीह्ल पद केसेप्रभ
हेसदानिवारिनासेकंसादिसुषदपिताकेनेदवरुनतेलाएहे जा
तिनांसमुनमनिमथकरेषनघनुहेजवालवंसीगुनसरसमुहा
एहें जेकरमछयकरनिसुरनओदेवनानिकेकहाकिछगातिकर
ताहरतामगारोहें धेनुकजोषरताकेहंताकालीकेघरनमानसुष

क
प्रि
107

वि

१० दानिबरसोदरजिवाएहै ४५ पर राम न्ह सुरकेससुखदाता
तिनकेसुविप्रनिकोंपिताचेरवैरनिकेदुखगुनहरेजोंति नर
देवहूत्तौतिनछयकरकर्मकीनेकेवाकिलबहेमाग्रैरदुखन
केदुखदाति नागधरप्रियजिहेंलछमीकेसुखदेत सोदरस
हायकनकोऊयोकहेवोंाति यातेवलेगुनमाएँअ्रसेस्त्रीपरस
रामतिनकोंअ्ररघसमरथयोकहेप्रमाति ४६ न्टप न्ह
थ दानकोजुवारिकहासंकलपनीरतासोंमुखमानेयामें
दानिवानिवामनिवाधधरि जननिकोसुखविनुजातनोउहै
तेताकोअ्रनसरेमेंचलेतधनगुनभाईकरि न्टपतहेछयकर
करजोकेमहारनतीन्तननदुखनहरेवलगजरोबेधरि देवी

107A

सुषदांनिजांकोसोदरनिसुषदेतदहीहिनवलगुनराजाभ्रातपो
षेभरि ४७ मूल चार्य वित्त भावतपरमहंसज्ञातगुन
सुनिसुषणावतसगीतमीतविवुधवषानीये सुषदसकतिध
रसषरसनेहीवहुवनविदितिजसकेसोदासगानीये राजेहिं
जराजपदस्रषनविमलकमलासेनप्रकासपरदारप्रियमा
नीयें येसेंलोकनाथकित्रिलोकनाथनाथकिचेंजगनाथ
रामनाथजगनाथजानीये ४८ टीका कना व्रसो
भावेहंसवाहनस्रोत्रशिकेजुजांतिगुनजिनकेकसानी
तसुनसुषमानिये मीतहेंसुरनकेविपतिहरिसोंवषानेस
स्करसक्तिधरधमहषिजांनियें वहुमुषेहेंहीराजेहिजप

दानिषरमोदरजिवाएहे ४५ पर राम त्र सुरकेसमुषदाम
तिनकेमु विप्रनिकोपित्रावेरवैरनिकेद्रव्यगुनहरेजोनि नर
देवछ्रीतिनछयकरकर्मकीनेकेयाकिलमहंमाश्रोरइषन
केइषदाति नागधरप्रियजिहंलछमीकेमुषदेनसोदस
हायकनकोऊयोकहेवधाति यातेवलेगुनगाएश्रेसेश्रीमरस
रामतिनकोग्ररषसमरथयोकहेप्रमाति ४६ नप द
ष दानकोजुवारिकहासंव [illegible]
देनिवानिजमनिवोध [illegible]
[illegible]

107A

सुखदानिजाकोसोदरनिर ... ंजेचन्द्रजाके पद भूखनविमलप
खेभरि ४७ ... नावई दारप्रियापेसेजे ... धर ...
सुलिम ... ेवजरकहावही ५१ ...
... जिनमोदिवाकरहेमेरो ...
... लंकार ...
... नेदकरि सुखदसकतिधर बेद
... ाकोचरनधरि भूखनविमलहो
... पुलीसाञ्जेसे ...
... ने
... जाश्रुतिमन ...

हराजपमसषनअमलकेजआसनप्रामीनीरो परदारसरकूमें
जेपतिव्रताहोंहिकहूंतिनपेंप्रसंन्नलोकनाथविधमानीयें ४९
त्रिलो नाथ द्र भाववरजीवजेकरनहारजरानकेगुनको
जुज्ञातिसुनिसुषकोलहतउर भसोगीततकोमीतुसुरने
वषानेअैसेओरसुषदाईजिहेसक्तिधरिसंगीसुर कामके
सनेहीभोगीवहुसुषसिवुजु केजसकोसुगावेअरएेसीदा
रप्रियपुरु राजेंदतिपंकतिओपदमेसुभषनहेंसोभासेंप्र
कासैयोजुरहेंग्रथभाषेगुरु ५० नाथ सिव व भावे
जेसंन्यासीओरउनहीकीजातिगुनसुनिसुषपावेओरतमीत
तनुत्यभावही चतुरनमाहयोवषानेउमासक्तिधरसाता

108A

रसनेहीषरमुषजसगावंही रांजेंचंद्रजांके पदम्भूषनविमलप
दमासनप्रसिधपरजोगमेंवनावई दारप्रियएोसेजेअघरअंग
राषतहेंयाविधसुनाथनाथसिवजरकहावंही ५१ हृज घश्री
ह पत्त सोभावानपरमसुजिनसोदिवाकरहेंमेंरोतेजरविमा
हिकहोंऐसेंअापुहरि जातअलंकारनिमेंसुनेंमांग्रेंपावेसुवम
लीभांतकिर्तिमीत्रवालनिविनोदकरि सुषदसकतिधर चंद
वंसीसमुनाुनमावेंराजेंमृगकोचरनधरे मृषनविमलऐ
सीश्रीसेंपकोसपरदारगिपलीलाग्रेसेहसंकोंहमिरेनरे
५२ नृप लक्षण राजाइतिवानअोपरमअोरहेसजजोध
मंराजअतिगुनसनिसुषन्यारवे भलैछ्रदमीतकतिप्रियसुनि

विमेंजाहिंपंडितनमीतमेलधरेंकरभाइके रनकोसनेहीवहलोग
जसगामेंहिजसनोंरजेराजजामेंसुषमनकाइके निरदोवस
छमीप्रकासेजाकेकोसनिमेंहारपालबहुप्रियनरपसुषदाईहें
५२ मूल षमे वर्णने दो रा तिनमेंएकश्रीभन्नपद
जांनि श्लेषबुद्धिहवेळकेकेसबदासबषानि ५४ श्रीभं प
द थाक ज्ञ मोहतेसुकेमोमंजुचोबारतिजरबसीराजारो
ममोहिबेकोंमरतसुहाईहें कलरविबलितसुरभिरंगरामयु
तवदनकमलषटपदछबिछाईहें भ्रगुटीकुटिलधनु
लोचनकटाक्षसरमेदेयातमंजनतानसुषदाईहें मुदितप
योधरसोंदामिनीकीसाथनायकामकीसीसनाकामसेनावनि

109A

आईहै ५५ टीका हरा निजपदमांहिअभिन्नतताहूहै चांएके
र्थ तासांकहतअभिन्नपदजेहैंवुहिसमर्थ ५६ केसरुदेसुमन
हरनकांमचमरुकोसाज कहीसकेसोइहीतेसेंनाहूहरतिराज ५७
क त्त जामेंमरुड्वानीसाजसेंनजागेमेंजुद्योयाअरमेजोवसीप्री
तिसोऊसाजसेंनहै जहांलगिसूरतासुहारीतेऊसाजसेनावीन
दिकसव्दरागरंगकोसुश्रेनहैं भ्रकुटीकुटिलआदिइहीभांति
जानिलीजेएकहीअरथहूहैओरसबदेनहैं नाइकाकीओरतेआ
रथहैंसुगमकहहेकहूहोसुकआकहोसाजसेंनमेंनहैं ५८ या
हीतेंकामसेनानाइककौओरकोंमसेनाचमरुएकैअर्थवामसों उल
वकियोजेसैनरसिकजानीयै मरु भिन्न द पदहीमेंपद्के

हीयेताहिभिंन्नपदजांनि भिंन्नाभिंन्नपुनिपदनिकेउपमांक्षेपवखा
नि ५८ उप क्षेप या हसभवाहिनीअंगउरबासुकिलसत
प्रवीन शिवसंगसोहेंसर्वदासिवाकिरायप्रवीन क त्त राजे
रजकेसोदासहूटतअरुनलारप्रतिभटअंकनितेंअंकनिसरतुहैं
सेनासुंदरीनकेविलोकमुखमूखननिकिलकिकिलकजोंहीतो
हीकोधरतुहें गाढेगढखेलहीबिलोनांनुज्योतोरिडारेंजग
जेयजसचारचंदकोंअरतुहें वीरसिंहभूअपालअंगनविला
लरनतेरोकरवालवाललीलासीकरतुहें ६१ टीका हरा
हिपदअर्थमिलायकेकरिरूपककेभाय पुनिसुकाटिकरिभिंन्न
करिउपमाउजताइ ६२ जेसंरजरूपीजेराजसरजहेसोइ पुनि

110A

काराजसदहांरजयोपरकारदनहोय ६३ सेनांसङ्करिमुख्य
जेभटतेभूखनजांनि ६४ मूल हरा तिनमेएकअभिन्न
रूपअविरुधरूपकयासुजांनि सुनिविरुधकौअवरनियमवि
रोधीआनि ६५ यथा विज्ञ प्रथमप्रयोगयतुवाजद्विज
राजप्रतिसुवरनसहितनविहानुप्रमानहे जसलसहितअं
गविक्रमप्रसंगरंगकोसतेप्रकासमानिधीरजनिधानहे दीन
कोद्विआसप्रतिप्रगटनकोमालकरेकीरतकोप्रतिपालजांन
तिजहानहे जातुहेविलीनकेइनीकेदांनदेषिरामचंद्रजूके
दानकिधोंकेसवरूपमानहे ६६ टीका हरा रूपरोक
शीफलविरुधसोअभिन्नरूपहोय रूपामिन्नअविरुद्ध
फलअविरुधिरूपासोइ रूपारोकसीकविज्ञनमेंफलवि

कृधयोदानि दानप्रानपोषकसदाय ङप्रोहरिजानि ६८ प्र दा
अधिके कत्तादेषकेलजेहनीके ऽ टै दानबहुदेयदांनी
लजेरहअनअवनसीवान ६९ उ. र सुनेंसकलन्टपरिपुर
ननियजकरत्तहेंदान फलउत्ताविनत्तासुजेपारोफलबहुम
न ७० दानसक्तिअरुबहुकीसकत्तिलहीउहिकमे हमटें
हेसकत्तकछुविनाचाहनाधर्म ७१ तांतेलज्जितसोचियें
हमनदांनअसमदीन नातरदोऊसक्तिवेलहोअतुलनवी
न ७२ याहीतेंहनीकेदानीरहपदधरयो ङनीअबमेदां
नीकहासकामदांनीजत्तिमदांनीकहें निकामदांमीनकहे
निकामदांनीतांतेसकामदांनीलज्जितहोत्तहें दोनत्ताअप
नीविचारकेलजेहेकिऐसोदांनहमपरवजन्ममेंनकीयो जा

111A

तोसोहीब्रह्मसक्तिहमहंपावतो मूल घवि हृक्रिया वेया क
छुकाभ्रमसुन्योकलवोलतकोकिलकामकोकीरतिगावतसी पु
नि वातेंकरेंकलिमाषिनिकामनिकेलकलानिपढावतसी स्रुनि
वाजतबीनसुरागहीयेंमनमोदमहाउपजावतिसी कहिकेसब
रासप्रकासविलाससबेवनिसोभवढावतिसी ७३ टीका को
किलकालसुतत्रियपीनाधुनेकरैरागीभंल्लहूया स्रवि रुद्रप
लकामउद्दीपनलाग ७४ मूल घवि हृकर्म दोऊभवंत
तेजवंतबलवंतश्रुतिहहंनकेरिषिवायहहंनकीदेवियतमूरत
सुदेसीहें सनोदेवदेवबलदेवकामदेवप्रियकेसोरायकोसं
तुमकहोजेसीतेसीहें वारुतीकोरागहोतमूरजकरतस्रस
जदेहद्विजराजकोंसहोतउतकेसीहें ७५ टीका रठा देवत

रुधयोदानि दानप्रानपोषकसदाय क्रप्रोहरिजानि ६८ प्र दा
श्रधिके कत्तादेवकेलज्जोहनोके ऽ है दानवङ्गदेयदांनी
लजेरहस्त्रनस्त्रवनसीवान ६९ उ र सनें
ननियज्ञकरत्तेहेदान
न ७० दान

नोग्रीबहुसक्तिहमहूपा ... हरिवागेवनेजहावेठीप्रियारतितेंश्रुति
छकाकूहसनेपोकलवे ... कचकुंकमकीरुचिरोंनी मा

... बारकोमा ... है आरनगरोनआतिक
... निहूकेसोदामडुगनेसीआइहे राजादस
... मचेहतुमचिरचि रराजकरजाकोरोवोराजुहे
... का रहोंनियमलीएचेवहेंरहनियमरीतियातेंसब
... काचोरीहेयांभांतिजानीये मूल उम कार दो रा कों
नहंभावप्रभावोंजानीयेमनकीवात्त रंगातितेंआकारतेंकहिसरब
अवदात्त ८२ रस प्रियां क ज सखीसोभितगोपरूमा मह
गोविंदवेठहतेइजकोधरिकें जनुकेसव पूरनचंद लसें चितामि
त्रचकोरनिकोंहरिकें तिनकोंउलटोकरिआनिदियासखीनीर

क वि प्रि ११२

112

इकसेदोइ कर्मकरेंअनमिलकहू विरुधकर्महत्तिजोइ विरु
धीकहतहेंपरसपर ७६ पश्चिमदिसालललामकहतवारुनीरा
गतिहु हिसियअथउहिधांममदिरारतियजांनिये ७७ मदि
रारतिमेंआनंदहोतअलहिजराजतहो उदेहोतयहजंतुनुवि
रुधकर्मयहइहूनेको ७८ मूल पवि धीलें रव नें
हसमहरेंहरयेंहरेसंपतिसिंभुविपतिहरेंहेअधिकाई जातनकोंम
अकामनिकेहितयातनकोंमसकामसहाई छातिमेंलखइ
रावतवेतोफिरावतसमसवकेसंगधाई यद्यपकेसवएकतऊह
रसेववकोसतभाई ७९ टीका २८ हसऊपावतकोंम
अरुनिष्कामनकेहितहू हरसुकामहरनामअवरसकोंम
निदेतफल ८० कर्म ईहांविरोधीवेकोकोउपजावेवेवि ११२

112A

नासे मूल नियम वर्णन वैरीगायवामनकोकालैसवकोसरह
कविकुलहीकोसुवरनहरकाजुहे गुरुसेजगांभीरेकवालकैविलो
कियतमातंगनहीकोमतवारेकोसोहाजुहे अरिनगरीनप्रतिक
रतअगम्यगोनदुर्गनिहूंकेसोदासदुर्गतसौआजुहे राजादसर
थसुतराजारामचंद्रतुमचिरुचिरराजकेराजाकोऐसोराजुहे
८१ टीका इहांनियमलोऐसेवहेंरहनियमरीतियांतेसुव
रनकीचोरीहेंयांभांतिजानीये मूल छम कार दो रा को
नहिंभावप्रभावतेंजानीयेमनकीवात इंगिततेंआकारतेंकहिसव
अवदात ८२ रस प्रिया क ऋ सखीसोंमितगोपसभामह
गोविंदवैठहुतेदुजकोधरिकें जनुकेसवपूरनचंदलसेंचितमि
त्रचकोरनिकांहरिकें तिनकोउलटोकरिआनिदियासखीनीर

जनीरनएभरिकें कहिकाहितेंनेकनिहारमनोहरफेरदयोकलिकांक
रिकें ८३ टी नीरजपांनीसोंभरिकेंउलटोकरआनिदियो यामेना
यकारादनकरतीहेंइहजांनी तबनायकानेकलीकरकेवाकमलको
फेरदियो यामेइहजतायोजबकमलमूंदेगेंराजकोंतबहममिलें
गें प्र नीरननयेभरिकेंकहानयोनीरकेसो उ र भयेकहांनमु
तासोंलाइसिरनीचोकरें ईहां प्रश्न नेकनिहारकेंकलीकरसी
यो नेकनिहारवेकोप्रजोजनकहो उ र नायकनेअपनीप्रीत
जताई कमलकोदेरहे यामेंजिताईकिउमारोनेत्रकमलहमारे
नेत्रकमलमेंवसतहें सोकमलकोदेखिरहिवो सखीनेंउहांजाइक
हो इहांसूक्ष्मालंकारहें मूल सोपमा चातुराईकेलेससोंच
तुरांसमकलेस वरनतकविकोविदसवेतांसोकेलवलेस ८७ ११३

113A

मूल सोप वर्ण खेलतहेहरिबागेबनेजहांवेठीप्रियारतितेंअति
लोंनी केसवकेसहेपीठिमेंडीठिपरीकुचकुंकमकीरुचिरोंनी मा
तसमीपडुराइमलेतिनसात्वकभावनिकीगतिहोंनी धूरकपू
रलेपरविलोचनसेंच्योसिरोरुहअंगरिउहोनी ८५ कहूंपा
छेतेंप्रियाजूनेंनायककीपीठिसोंआलिंगनकीयोहो केसरअं
गियाकोलगीहोंसोआपनोचिंहूदेखिकेंप्रियकीपीठिमेंनायका
केसात्वकभयो कपूरनेअश्रुछिपाए सरोरुहनेकंपओ
रवैवर्णछिपायो ओरहनीनेरोमांचछिपाए श्रीमूल अं
यनि सिनां कार कोंनहेंएकप्रकारतेंलतअरुअसतसमा
न करीयेप्रगटनिदर्सनसिमजतसकलसुजांन ८६
क ति तेईकरेंचिररराजराजनिमेंराजेंराजेंराजतिनंहीकी

लोकलोकलोककोंअटतुहैं जीवनजनमतिनहीकोंधन्यकेसो
दासग्रोरिनकेपक्षनज्यौंदिनघटतुहैं तेईप्रभुपरमप्रसिधप
हुमीकेपतितिनहीकोप्रभप्रभताईकोंरटतुहैं सूरजसमान
सोममित्रहोंअमित्रहूकोउबलुहआपनेऊदेईप्रघटतुहैं ८७
टीका हरा जेसेंसूरजचंदकोसवपेसमपरगासु धनिक
चोरसुवडुवलहेसोनिजऊदयविलास ८८ मूल जोले
र ओनं छूनं तनानिजहंकारकोयचपठहेसहाय ऊजैन
मतासोकहेकेसवकविकविराय यथा कोवेपुराजमिल्योहैं
वभीषनहैकुलहूवनजीवेगोकोलों कुंभकरन्नसोमघवा
पुतोकुहोडरहेजमसोलों श्रीरघुनाथकेसुंदरगातनजान
हितहूकौलातननेतोलों सालसवेहगफालनिकररावनकेकर

कालहैजौलौ ८९ अथ सब लेका ऐन रसमयहोइरसु
जौंनीयेरसबदकेसबदास नवरसकोसंछेपहीसमझोकरहुप्र
कास ९० सिंगा सव नेस या आननिहारीनआनकैहो
ननुमेंकछुआननुआंहीकेसोकेसबस्यामसुजानसरूपनजाइ
कहोमनैजोनतितेसो लोचनसोभहिपीवतजाततमातसिहात
अचातनजेसो ज्यौंनरहातविहातततहोवसिजातसुवानकहैं
मेंकवेसो ९१ हास्य सव ने रस प्रिया क ते वे
ठतिहैहठिकेतिनमेंजिनकीतुमसोमतिप्रेमपगीहैं जानतिहोंन
२ लराजमैंनीकीहूतनकप्यारसरंगरंगीहैं एजेगीसाधसवेलबकी
वडेभागकीकेसबजोततजगीहैं मेरकीवातसुनैंनैंकछूवहमास
कोतेसुसिकानलगीहैं ९२ अथ करुणा सव ने हू:रैतेंजंस

क वि
प्रि ११५
115

भीदीहसुनैंनसुनीगजपुंजगुंजारवगाही जोरनहूरनहूरवजै
वरस्नावजंभाटजगावतदाही विप्रनमंगलमंत्रपठेअरुदेषेत
वारवधूहिगठाडी केसवदासकेगातऊतारनआरतिआरति
मातहिवाही ८३ रौद्र सव नंछु जिहिसरमधुमदमरदि
महांमुरमरदनकिन्नउ मास्योकर्कसुनकैसंघहतिसंबजुलि
न्नउ निकंटकसुरकंटककस्योहोंकैटववपुखंड्यो वरदू
वनत्रिसराकवंधनरूखंडविहंड्यो कुंभकरनजिंहसंहस्योपर
नप्रतझोंटस्यो जिंहवानप्रांनदसकंठकोकंठदस्योषंडनक
स्यो ८४ वीर सय छुप्पै करिअदित्यआदितजमकरोअ
रवसु रुद्रनेवोरिसमुद्रकरोगंधर्वसर्वपसु चलतअवेरकुवेर
वलहिंगहिदेउरंद्रग्रव विद्याधरनिअविद्याकरोविन्डसिद्दसव

115A

लैकरोहासरितिकीअदितिअनिलअनिलमिटज्यायजल कहिस
रजसुरजऊःगचनकरोअसुरसंसारवल ९५ अथ यान
रस एनं रामकीबामलेआयचुरायजुलंकमेंमीचकीवेलवी
ईजू केंारनजीतहु गेतिनसोजिनकीधनुरेखननाघीगईजू
वीसविसिवलवंतहे गईहुंगेहगकेसवरूपरईजू गोरिसरासन
सैकरकोपियसीयसुंयवकोनलईजू ९६ अथ भास
स भंगी द सिंगरेनरनायक असुरविनायक रछसम
तिहियहारिगरे कांहूंनचढायोथलनछुडायो टरयोनस
सोभीतभरे इनिराजकुमारनि अतिसुकमारनि लेआरो
होपजकर व्रतभंगहमारे भयोतुमारे रिखतपतेजनत्म
निपरें ९७ सुग अथ हृत स क ज्ञ आसीवियसिंधु

विषपावकसोंन्हातोकछुनौप्रहलादसौंपिताकोंप्रेमतल्योहैं द्रोप
दीकीदेहमेंसूंहीकहांइमासनवरोहीषिसातोथेंचवसननवढ्यो
हैं पेटमेंपरीछतकीपेठिकेवचाईमीचजवसवहीकोवलविध
वोनिलल्योहैं केसवअनाथनकोनाथजोनरद्युनाथहाथी
कहाहाथकेहथ्यारवरछुट्योहैं ९८ टीका हरि अहिस
मुद्रविषअगनतेंवचेनकोअर्जुनत इमतेंवचेजुकमेंयहअद्भुत
श्रीभगवंत ९९ मूल निकत्र केसोदासवेदविधिसाथ
हीवनाईव्याधवंसरीकोंकोंनेसुचिसंहितापढाईहैं वेषधारीह
रिवेषदेख्योहो अैसेयजगतारकाकोकोनेंसिखिनारकासिवाई
हैं वारानसीवारनकरयोहो कहूवसवासकानिकाकवहिपति
देवताकहाईहैं पतितनपावनकरतजोनंदनंदसजनाकवहि

116A

म॰नेकर्णिकाग्रहाईहैं १०० टीका ॥ सवजगदेष्योहोइजनना
तारिकाहीतरीतोयामेंदरसनकुप्रवशंसीहैं ईह रुय वेषधारीज
गकेसवनितिहृश्नेनिर्गुनवेष दे ष्योइहअद्भुतसवेहृपाउनहीकी
लेषि म्लि तिर वर्णते देयगोजीवनहातिजेहेप्रमुहेसिमारे
ज्ञमाकोजिहिद्वैये ग्रावतजेोंग्रनजधमतेड्वापोसुवएरवके
हृतपैये राजवेरंकसुराजकरोसवकेसवकाहूंपेकाहेकोजेरो
मारनहारउबारनहारसुतोसवसिरऊपरहेरो सुग ग्रर्थ र
न्या लेकार ग्रोरग्रानीरोवसुजहग्रोरहकरेतवषान ग्रर्थत
रनकौनामसइहचारिभांतिसुनिजान क त्र मोरेहूंमोहवहार
चितैंडरवाईयेकेमनकेहूंकरेरो तांकोतोकेसवकोरहीयेड्ष
होतमहासुकहाइनहेरो केसोहेतेरोहियोहरिमेंरहैमेरोनही

क वि
प्रि ११८

117

जनछूटतमेरो वुंदकहूयकोंमारयोज्युवाधिसुजननीहोंमाईजायो
नतेरो १०२ टी वसुदयाहिवखानीअंतरसमानिहें मूल हरा
युक्तअयुक्तवखानियेओरअयुक्तेयुक्त केसवदासवखानीयेचो
याचुक्तायुक्त उक्त कार हरा जेहोजहांसुरू मीयेतेहोतोहा
सवानि रूपसीलगुनसुक्तवलऐसोयुक्तवखान १०५ क न
रवेरके दोषदूषिनकलंककरिमहाषित्तनिसाचरीनिकेकाति
भरतुहे चंडकरमंडलतेंलेलेजोप्रचंडकरकेसोदासप्रतिमासमा
सनिसरतुहे विषधरवंघहे अनाथनिकोप्रतिवंधविषकोविसे
षवंधहिहोहहरतुहें कमलनयनकीसोंकमलनयनमेरेचंद्रमु
षीचंद्रमातेन्याइहीजरतुहे १०६ टी ऊपरतेंओगनकहनेहें
यायुक्तिसोंओरजराइवोयुक्तिहीहें प्रचंडकरविर्य्यकोसवं

117A

यहे याके अंतर निजइव कह्यो युक्ता कार छिन हरा जेसोन
हांन प्रछीये जेसो ताहां स्युहोइ केसव ताहि अयुक्ति केवरन ताहे सव
कोय ७ क त्ति केसोदासस होत मारसिरी अेस मारसिरी आर ताहे
देखि वेह अेसीये हेरावरी अमल पत्तासे सेहे ललित कपोल अधर
अमार चेरे ह गति लचावरी यहे छवि छकि जाति छिन में छवी
लेला ललोचन गवारि छीन लेहेरनआवरी वार वार वरजात
वार वार जाति कति मे कई वार वी कोसें सो वारी हेंतू वावरी १०८
टी अंगवर्णन ऊपर जे यो भांति अंतर मे हठ कीनो वाहि सेवे कोइ
हनो अर्थांतरन्यास मारसी सी भाक छु मारसी नही करति तिल वाम
री वेत्रन में कहिवो अयुक्ति प्र अयुक्ति तें पंथ विरोधी क्यों न होइ
अ र तमोल तिल चामरी पंथ हें लोक में म्रल युक्ति एने

क वि
प्रि. १०८
118

असभैसभहैजाततहांकेसहिकेसवदास रहैग्रयुक्तैयुक्तकविव
रनजबुधविलास स या पाजगहानिपितासगहारनगाभैके
सूलनसोंदुरीयेजू तालनिकोवंधिवोवधरारिकोनाथचि
ताजरीयेजू पत्रफटेतेकटेरिनकेंसवकेसेंहुतीरथजोमरि
येजू नीकीदसालगेगारीसगोनकोडंडभलोसोमपामरीयेजू
पुनि चित्र आगेहूलीवोरहैजुचितेरजचोकऊतेहगर्खेचिल
ईहे कोविदकान्हऊहेप्रतिऊत्तरमांनीऐवातजुमोंनमईहे रो
वकीरेखवहेरसकोरुषकाहेकोकेसवछांडदईहे नाहिहियेउ
मनाहिसुनीरहनारिनईनिकोरीतनईहे १११ आगेहेलीवोग्र
युक्तहैं सोहगसोंदेषिहरोचिवोयाभांतिलेवोजुक्तिहे युक्ता
क्लिलं रव नंदो ता रहैवानग्रनिसूजहांकेसेहुंहेजाइ ता

सोंयुक्तायुक्तसवचनतसवमुषपाइ ११२ रति प्रिया विन्न
सूलसेफूलसुवासकुवाससीभाकसीभयेभोनसभागे केसव
वागमहावनमेंजुरसीचटीजेंान्हसअंगदागे नेहलग्योऊरन
हरसोनिसनाहछरीकुकहूंअनुरागे गारीसेगीतविरीविससी
सिगरेईसिंगारअंगारसेलागे ११२ टी ईहांविरहनीसीभास
तहें सोनिसनाहछरीककहूंअनुरागेयामेविलच्छाभई जो
प्रितमनआईसहछचे छरीकहूंविरमें अरुसंकेतस्थानवागसदमों
जानीये वागमेंविहंनीकाहिकोंआईहें औरसिंगारकाहेंकोक
रिहें ईहांतोकह्योसिंगारअंगारसेलागे अपनीअवस्थानयका
नेसषीसोंकहीं निसमेंनाहुछरीकरहेकहूं यातेंऐसवड़षदाईमो
हिभये इहभेदकीवातअंतरंगसोंकही इहांनिजसषीकेसें तह

रहाअंतरसखीहीकोहूतीकरपठयोहेनायकने सोमाहाप्रसंनहो
तीभई नायकाकोत्तिवाउलाई माहाप्रसंनअंतरंगहीहोईवा
स्नहूतिनिकोकामल्लाईवेईकोहे माहाप्रसंन्नकाहेतेजोनौ सोम
वीगावतवीरीयवावतलेचली यांतेकह्योकि गावीसगीतवी
रोविसूसीजवपिनदेष्यो संकेतमेंजवनिजसखीसोंएवचनहे
स्स निस या पावकीसिंहूसदारिनहहूंसूकीरतिआपुको
आपुकहीकी डुह्मकोदानअोरूताकन्हानसूदासीकोसंगति
नौलागतिफीकी वेटीकेभोजनमरुवनरांडकोकेसवप्रीतिसूस
परतीकी जुधमेंसाजदयाआरि आरवामनजातिसोजीतनवी
की ११२ व्यति काले रव ने जामेंआनतभेदकहूहोयजु
वसमांन सोव्यतिरेकसुनामहैयुक्तसहजपरिमान ११४

युक्ति तिरे कवित्त छंदरससबदअतिअमलसकलविधिसक
लसफलबहुसरससगीतनसों विविधिवाससुबुतकेसोदासआस
पासराजैद्विजराजतनपरमपुनीतनसों फूलेईरहतदोऊदीवेही
कोप्रतिपनदेतकोमनानिसवसीतनहूअमीतनसों लोचनवचनग
तिविनइतनोईभेदइंद्रजीतरघुवरअरुइंद्रइंद्रजीतसों सह मति
क गायबरावरिधामसबैधैनौतिबरावहीचलिआई केसवके
सदिवानिपितानिबरावरिहीयहरावनपाई वैसवरावरदीपति
देहबरावरिहीविधुवुद्धिबडाई ऐसबीआजुहीहोंउगीकों
सवडीतुमआवनहीकीवडाई ११६ अथ पन्ह लंका व
नै मनकीवातड़रावरमुषऔरेकहीयेवात कहतअपन्हवि
सकलकवियामोंवुधअवदात ११७ क त सुरनिवसितक

लखनिकलितअतिसुंदरललितगतिमेरेमनमानीहे अंगअ
गगूढभावकेप्रभावजानेकोतुभावहीकोभावरुचिपचिपहचा
नीहें अमलअहूविनतुभूषननमेविनसुवरनहरनमन
तुरसुवदानीहैं केसोदासदेवीकोऊदेषीतुमनांहीराजप्रयेर
प्रवीनरायजूकीयहवानीहे ११८ पुनि विज्ञ कारेसटका
रेकेसनैनोनीकछुहोनीकैसमोंनेतेंसलोंनीदुतिदेवियतितनकी
आछीआछीचलनिचितौनिअतिआछी आछीमुषकवितावि
मोहेंमतिमानमनकी केसोदासकोंहूभागपाईएजोवागगहि
सामनुजसोमेसाधपूजेरतिरनको वेटीकाहूगोपकोविलो
कीप्यारेनंदलालनाहीलोललोचनवडवावडेपनकी ११९
तु म रति नार हूज मवि चिता कवि यादी यांस

120A

रोम इका णित्र द्याले रव नाम काद प्रका ११ अथ
लंका वर्णने दो रा ल न बुद्धिविवेकअनेकवलऊपजा
तर्कअपार ताहोकविकुलऊक्तकहिवर्णितिअभिन्नप्रकार १ ऊ
क्ति द वक्रअन्यव्यधिकरनकहिअोरविसेषसमांन सहित
सहोक्तितिमेंकहीयुक्तिसुपांचप्रमांन २ वक्रो वर्णी केसवस
धीवाततमेवरनीयेदेटोभाव वक्रोक्तिताहीकेहेसदासवेकवि
राव ३ रस प्रिया कवि यथा ज्योंज्योंहुलसोकेसवदास
विलासनिवासहीयेअवरेष्यो त्योंत्योंवठाऊरकंपकछुभ्रम
भीतभयोअरुप्रीतविसेष्यो मुद्रतहोगसषीवरहीमेरेनेनसरो
जनसोंचुकेलेष्यो तेजुकहोमुषमोहनकोअरविंदसोहैंसोतो
चंदसोदेष्यो टी इहनायकाविंगसोकहतहैं सषीसोंश्रीहरुस

121

जुकोसुनायके अरीतेंमुखमोहनकोअरविंदसोकह्योहोसोतोचं
दसोदेख्यो जोतोकलंककोअर्पकरीयेतोव्यंगसहनहीहोत प्र
गटहीहैं यामेंनायककोअपराधदेख्योसोकंपकोकारनओर
हीजनायकेव्यंगसोंकहतहै कितेंतेंविलासकोनिवासकमल
जैसोमुखकह्योहो सोतोहमचंदसोदेख्यो क्योंकेचंद्रमासीतल
हें वाकोदेखेंकंपहोतहे सोइनकेदेखेंकंपसोभयो तोऊमेंने
वाततारीमनतें किकछूमेरोमनकाहूसोंभीतभयोहे केंभ्रम
हे परितवमेरेनेनकमलसमुंदनलोदेखतमेंतवइनकमलि
निसांचककहदीयो किचंद्रमाहीहें चंद्रमादेखिकमलसमुंदत
हें यामेंक्रोधकोअधकाईव्यंगसोंजनाई केंसामुहनिर
ख्योहूनहीजात याभांतिधीराकोलसोकह्यो इहांवक्रोक्तिअ

लेरहे टेटेमा कहे जहां वक्रोक्ति सुनि धीर सो इहां वक्रता ईकी टेहो
[illegible]नैसें वचन कहे मूल न्योक्ति लंका वर्ण और ही प्रतिगुवषा
नी ऐऐक और ही वात अन्योकति इहकह ताहें वरनत कविन अयात ५
यथा वित्त दल देषो न वरु जाडो वडो अरु घांम घनो जल कोंहरि
हें कहि के सब बाव बहे दिन दाबद हे घर धीरज कों धरि हें फल
हे फल नाही कि तो लेंतु ही कहतो पह मूष सही परिहे कठूछाह
नहीं सुष सो मन ही रहि कीर करीर कहा करिहे ५ टी अन्योक्ति है
भांति एक विजाती प्रति जैसे कीर पेंडार के कही एक सजाती प्रति और स
षी की वात और पेंडार के कही पुनि वित्त अंग अली घरी ये अपु
ऊन आजु जेनी दोन आवन दीजै जांनती हे हिय नातो सषीन को लागे
ह तो अव सायन लाजै पोरे ईदों सजे तें षेल न तें जल गीजिन के जिय सो

क. प्रि. टि. १२ 122

जीवजे नाहकेनेहकेमामसेआनीच्याहहूंकीपरतीजनकीजै त्रि
योरेईयोजेबेलमीहें आधि रत्त कार ग्निने ओरहिमेंकी
जेप्रगटओरहिकोगुनदोष ऊक्तियहेआधिकरनकोलनातहो
संतोष ८ यथ वित्त जानुकटिनाभकूलकंठपीठभुजमल
ऊरजकरजरेषरेबीचहूभांतहें दलितकपोलरदललितअधर
रुचिरसनारसितरसरसमेंरिसातहें लोटिलोटिलोटिपोटिलप
टातिबीचिहाहाहूहूनेतिनेतिबानीहोतिजातिहे आलिंगनअं
गपीडीयतपदमनीकेसोतनिकेअंगअंगपीडनिपिरातहे ९ आ
लिंगनमेअंगअंगपदमनीकेपीडीयतहै वहजोपीडाद्रगावनि
मसलबोसोसोतनकेअंगअंगमेपिरातहैइबातहे नायकाकेअं
गपीडनदेषतेसोतनकोपीडादोषजानीये क त्त राजमार

122A

साजभार लाजभार भूमिभार मक्कभार जयभार नीके ही उठत है पै
मभार पनभार के सव संपतिभार पतिभार जुतिआतिजु हनजटत हैं
दानभार मोतिभार सकलसिद्धि आनभार भोगभार भागभार ढोट
त हैं ऐसे भार फूलनि ज्यौ राजे राजा रामसिर तें हिउ वसत्रुन के सी
बफटतु हैं १० सु मपु क त सूतमयो दसरथ के के कदेव
नके चरवाजीव धाई फूल के फूलनि को करषे तरु फूले फले सव ही
सुषदाई छीर वही वही सरितासव मजार धीर समीर सुगंध सुहा
ई सर्वसलोकलुटावन देषि कैं दरिद्र देह दरारन पाई टीका
अदे रा सर्वसलुटवत दारिद्रहि कि मड़घे रहतो नाहि जहाँस
र्वस नहोत होल है ठौर ऊठि हि १२ ऊ र ओरपति के सुत
मयेव है हेउ प्रसवहाय दसरथसुत तहां लछिमी सुसरिर ही है सो

१२३ तोदरिद्रकहांहै नगरमेंजोदुखपावे ऊ र तहांलछ्छनातेंजांन्योवि
देसभिछुकआएहें क्योंकि नगरवासिनिकेमोक्षलहेतेंजोलुटावनहा
रेहेंसवजानेंजानीए अन्यनगरकेलोगलेतहे म्हले निंदा हरा
होयहतीओरनसुनेंइहअचर्जकीवात काहूलगावतचंदनहिमे
रेनैंनसिराज १४ विसे छिव नें विद्यमानकरनसकलकारज
होहिनसिद्ध सोईयुक्तिविसेमत्यकेसवपरमप्रद्ध १५ कवि यथा
कऐसेइकृतिरूश्रहांभटपायसोपुत्रनमासनटारें सोदरनडसा
सनसेंसवसाथसमर्थभुजाजसकारें हाथीहजारनिकेवलकेसवहारि
थपटकोडरडारें द्रोपदीकोडुरजोधनपेतिलअंगनअंबरसोनउघारे
१६ सुग पुनि वित्तरस प्रिया यथा सीषेहारीसबीढरपाय
हारीकदंविनीदामनीदिषायहारीदिसअघरातकी कुकिकुकिहारीर

123A

तिमारिमारिहासोमारहभीझकझोरिकै विविधगतिवानकी दई
निरदई दईवाहिकाहेऐसीमतिजारतिजुरैं नदिन दाएसेगातकी
केसेहूंनमानेहोंमनायहारीकेसोदासबोलिहारीकोकिलाबुल
यहारीचातकी १७ टीका अडि रा औरसबेकारनसु
नोंमानहरनपरवीन इहांनिरदईमतिसुजोमारनबचनबलव
लमांन १८ जोनिदयपददईकोंतऊप्रसंगइहमांहि ऐसीम
तिकहहठभरीमांनहरनसोऊनाह १९ ह्यांतोमारनहरन
सबेचहीरीतिबेनिवाह अलंकारकोहोइहप्रसंककरनकविनाह २
० र इहजानतिहेहोनजबमिलहोप्रीतमसंग तवपीयकों
हूंवामसोमिलकरिहेरसरंग २१ देषिनसकतिओरकों
सुबचनकहूंअनमान वहसबकरिहैंजानिइहतजतीपह

क वि
प्रि १२४
124

लैमांनि २२ मानहरनकोहेतहैनिरदययाहिसुभाव उह
धिनिरदयताजऊहरयोनमानप्रभाव २३ वा ओरहहति
दईसतिनायकमेंसंभवे पियकेऊपपेंदयानाही दईपेहेक
हिवीनिर्दयताजोपियहीकेजेपातेकहेंगेतातेहूरतोहूसरेहर
जेवेरोलीजेयाहीकोनिर्दयताहे प्रतदामयीवहरंगहे जान
तिहेकिआजुहीमतिऐसीदईहेवाकीमतिओरहीतेंहे सखी
वहिरंगकेसैंमियेंहारी सखीयेसेंकहतिहेयातेवहिरंगहे
मूल निक त्त कर्णकृपाहिजद्रोणतहीतिनकोहतको
हूंपेंजानतटारयो भीमगदानधरेंधनुअर्जुनजहुजुरयो
जिनसोंजमहारयो केसवदासपितामहिभीषममीचकरी
वमलेदिमचारयो देखतहीतिनकेदुरजोधनद्रोपदीसामुहे

हाथपसार्‍यो २४ टी कारनसवहेहाथनपसारनदेनेकेपरिन
पसारनोइहहनभयो मूल नि वेईहेंवानविधाननिदानग्र
नेकचमरजिनजोरिहईजू वेईहेवाहुवेहेधनुधीरजसीहदस
जिनजुधजईजू वेहीहेंअर्जुनआपुनहीजगमेंजसकीजिन
वेलवईजू देवतहीतिनकोगवकाविननीकेंहीनारिछिडाइल
ईजू २५ अथ योनि ऐने हांनिहाधिसुभअसुभकजुक
हीवेसहप्रकास हेयसयोकतिलायहीवरनताकेसवदास २६
क ज्ञा सिसुतासुमेतनभईमंदगतीलोइननगुननिसोंवलिताल
लितगतपाईहे भोहनकीहोडाहोडीहेगरकुटलअतितेरी
वानीमेरीरानीसुनतसुहाईहे केसोदाससमवहासहीसकेंही
कटितटछिनछिनसुछिमतवेलीछविछाईहे

वारूवुहिवारनिकेसाथहीकहीहेवीरकुचनिकेसाथहीमकुचअर
आईहे २७ मग व्याजस्तुति अलतिनिंदामिसहोइज
हास्तुतिमिसनिंदाजानि व्याजस्तुतिनिंदाइहेकेसदासवषानि
२८ कवि रस प्रिया सीतलहूहीतलत्तिहारेनवसतिवह
तुमनतजतीतिलताकेउरतापगेह आपनोज्योंहीरासोपरा
येहाथहजनाथदेकेतोअकाथसाथमैंनएसोमनलेह ऐतप
रकेसोरापतुमैनप्रवाहवाहअहेजकलागीभषभारीसुख
भल्योगेह मांडेमहछडेछिनछलनछबीलेलालिऐ
सीतोगवारिसोतुमहींनिवाबहनेह २९ यकवितमेमिश्रअलंकारवो
निंदाहांउहजानोकहतसषीनायकसोवचनिनिमांहचतुराई
जानो नहांएकरहरीत अर्थमेंजवतियनिंदाहोय तवयिष

125A

अलितिपिवनिंदराजवतिअलुतोविधिजोर २० सषी वचन
वहसुरावरेहियसीतलहूवसेनयोवुधिहीनो तुमतोकोत
नतापगेहसोतिलनतजतेलीनो अपनोज्योंहीरासुअमोरा
कदैसुतोमनुलीजे तुह्येतजूपवाहमैंनमनगोवाकेजकवी
जे माइयामनुहाहुमअहिनतम्यो छलइमगमारतियआहो
अविप्रियनिंदकहतहै जामेत्रियअलितिविधचाही छं य
रहतोहियोरावरोसीतलप्रेमसुंवजहानाही तुमहिनडत
तिलअरतोंकोतापविरहकोजोमें निजमनहैसकठोरअवस्य
नलेतसुमदुतोजामें ताहितुजकोनवसावतजूतुह्येप्रव
हसुनाही मेंडितमुषछंडयोपेंछलनहिछाडयोपलहूमें
हो ऐसीतोगवारमनसोहोअरुनिवहेहितकेसे यामेत्रिय

क वि
प्रि १२६
126

अस्तुतिपियनिंदावरनीकविवरऐसें २२ अथ जाति स्तुति
केसरकपूरकंजकेतकीगुलाबलालसंध्यातनचंपकचमेलीचा
रुतोरीहे जिनकीतोवासवासनवसियेतेंआसपासठाढीकेसो
दासकीनीभयभ्रमभोरीहे तेरेकोनहतकिधोंसहजसुवा
हीतेंवसीमईहरिचित्तकोंहचोराचोरीहे सुनिहिअचेतअ
ईरहहेतनांहीतरुतोसीगवारिगोकलगुवरिहारीयोरीहें
२३ टीका हरा ईहारूपकीनिंदामिसअस्तुतिपियकीचा
ह तोविनकुंकमआदिदेमऐसकलडवदाह २४ मूल मि
जानीऐनजांकीमायामोहतेमिलेहंमाजिऐकहापपुन्यऐक
पापकेनिवारीऐ परदाराप्रियमतेम्यातेमासुताभिगामीनिस
नरकेसोमुवदेबोदेहकारिऐ आजिलोंअजादिराखेवरदवि

नोदभावेऐतेमेअनायप्रतिकेसवनिहारीऐ राजनिकेराजाछ्वा
डिकीजगतितिलक ताहभीयमकोंकहांकहोपुरषेंननारीऐ सो
का हरा याकवितमेंरिपुवचनताहनिंदाकोभाव सवेअर्थ
सुरतियकियअस्तुतिकेपरभाव ३६ अर्थ मायाजानेको
जुमोहेमिलेंजगऐकहाय पापिनकेनासकोंओरउधकधरम
ऐक श्रीकेप्रियजगतिदेखिरीझेचंदमुखीसवहनिकीदे
हनिकेकीरीसहीतोविवेक आजहूलोंगोपवेवहमेविधर
छ्वकहोवरदाईनायसवहीकेनिजराखेटेक पुरषननारी
ऐसोंवेदनउपचारीगतिपावेकोतुमारीजांकीविधिहेरचीअनेक
अथ मित्त लछन जहसाधनहैभोगवेसाधककोसभति
ह अमित्त नामताकोकहेजोकोअमित्तप्रसिद्ध ३८ यथा स

क वि
प्रि · या
१२७
127

आनन सीकर सीक कहा हियै तोहि नेत अमिं आतुर आई फी
को भयो मुख ही मुख राग कैं तो तेरे पिया रहवा रव काई प्रीतम को
पट को लपट्यो अली के बल तेरी प्रतीत को लाई के सब नीकें
ही नायक सों रमि नाइका बात नहीं बहराई २९ पुनि वित
को मिले करि जग मम सेन्य पसाय सबै दल राज नहीं को जा मे
कों बानि कि मे सुलतान सो आयो सहं बदिसाहि दिली को औरङ्
छि औ निजु स्यो कहि के सब साहि मध्य कर सों सकजी को हेरि के
हलह रां मसु जीति कह्यो अपने सिर की रगि टी को ४० परि
या जलै र दो रा को न ह्वै एक अदिश्यो अनह्वी यो जु
हौर सिंह आपने रस्की पजी जो खित सोर क त्र बेल गही
सार जं अलीन में आपु हि तें तहां हरि आए कि घोका है के बुलोरी

127A लागेमिलबैलनिमिलेकेहरेमनुहरेंदेंनलागेराजआपमनभाएरी उठ
रूठगईमिसिमिसिजितिहिनिकेसोरायकीसोदोऊरहेछबिछएरी
चौकिचौकितिहिछिनराधाजूकेमेरीआलीजलजसेलोचनजलद
हिआएरी ४२ युग युक्ता कार जेसोजांकोवुधवलकहीएतेसो
रूप तांकोकविकुलयुक्तकहिवरनतबहुतसरूप ४२ टीका रुध
जेसोजांकोरूपवुधिवलसोतेसोकहे युक्तवनायअनूपसवहयुक्तिव
रनतसुकवि मूल विन्न मदनवदनलोतलाजकोसदनदेखिजग्र
पजगतजीवमोहिवेकोहेछमी कोटएकचंद्रमासवारवारिडारेंजो
जांकेकाजहूजराजआजहूहेसोसंजमी केसोदासविलासतेरेमुषकी
सुवाससमसिसुनिआरसहीसारसनिलेरमी मित्रदेषछिजिडुगदेड
वलकेंसकुलवलजांकेतांकेकहाकोनवासकीकमी ५६ टीका हस

क वि प्रि १२८
128

तामुखकीजुसुवासताआरसकीनिहपाई भौंकमलसेमहयमिश्रइ
दलभाई वा जहांयुक्तहेजुक्ताअक्तिवेसंतहाजोगयताकही किजर
यवेलायकहींहिवेदमां क्याकिसूर्यमेतोकहताहेविषकोवघुहेइहांद
दलकोमौंदंडराजुसामग्रीयुक्तिसोंरूपमेंस्थापनकरी यातेयुक्तिसे
भेदहे इति नाज सह राम रचि यांक प्रिया कायां हज
मचे कायां ज्ञपाले रव नेना हाद प्रका १२ अथ मा
हि लंका वर्णि दोहा हेतनकेहोंहोतजहादेवभोगजोकाज मा
हिसमाहितनामकहिवरननकविसिरताज । राम प्रिया यथा
छविसोछवीलीवृषभानकीकुमरिआजुरहीहुतीधरिमानरूप
मदछकेकें मारहतेसुकमारनंदकेकुमारतांहिआयेरीभमनाव
नसयानसवत्तिकिकें हसिहसिसोहिकरिकरिपायपरपरकेसोहा

128A

सकौसौतनवरहेजियजकके तेहीसमेंअठेचन चोरिचोरिसांमिनिमी
लागीसोतिस्यांमचनलपकिकें २ टीका ॥ मरईहांकाहो
रसौतनवमिली ऊ र गर्वसबभांतकोजोऊपरकहिआए कोहन
मानछूट्यो सोइपांयपरिवो ऊपायनायकनेचनेकीयेपहायह
गर्बहीहै किउनकेऊपायसोंकछूनसरयो हमहींआपनीओरतें
मान्यो इहगर्वकीभांतिहैं औरस्यामतनकिकेईहाइहधनिहै
जोस्यांमकोविकलताहेषीतवमिली अपनासामर्थ्यताइहबहरन
कीदिखाई इहांसमाहितालंकाररहे चनआयेकाजभयोजाते भ
ल कित लातहंदीपनकेअपनीपतिहाररहेपियमेजवजानें वी
सविसेआतंभगभयोइकहोअबकेसबकोधनतानें सोककीआगि
लगीपरपूरनआयोगयेचनस्यांमविहानें जानुकीकेजनको

क वि
प्रि १२८
129

दिककेसबफलबठेततकपुन्यपुराने २ अथ सिद्धा कार गीत सा
हिसाहि औरेंमरेओरेभोगेसिद्ध तासोकहतसुसिद्धसबजेहेंबुहि
समरह यथा वैसा मूलनसोफलफूलसबेदलजेसोकछूरस
रीतबलीजे भाजनभोजनमूबनभामिनभोनमरीमब भोतिम
लीजे डासनआसनबासनबासस्तबाहनजानिविमानथलीजे
केसबकेकेमहाजनलोकमरेंसुबभोगवेलैलैबलीजे छ य
सरवासविसविमहहमहरमधुपानकरतसुख घनिघनिमर
नगवारकूपजललोकपियतसुख गगवानवहमरहफूलवो
धतजरारनर पचमचिमरहिसुवारमूपभोजननिकरतवर
मूबनसुनारगहगहमरहिभामनिमूबनिकरततन कहि
केसबलेबकलिबमरहिपेडतपहडपुराननगन ६ प्रसि

लंका वर्ण साधनसाधेलोकभुवभोगमेसिद्धअनेक तोसोकहि
तप्रसिद्धसवकेसवसहितविवेक यथा वैया मातकेमोहपितापरि
तोषनेकेवलरामभरेरिसमारे ओगनऐकहिअर्जुनकोछितमंड
लकेसभछत्रीयमारे देवपुरीकहंओधपुरीजनकेसवदासवडे
ओरवारे सूकरस्वानसमेतसवेहरिचंदकेसत्यसदेहसिधारे ८
विप तालं ंद्वो रा कारजसाधककोजहांसाधनवाधकहोइ
तासोसवविपरीतकरिकहितसयानेलोइ ९ कवि यथा ना
नाहतेंनाहरित्रियजेवरीतेसांपुकरियालेंबरैभीयकावसावता
वननकींसिवहिंसिवाहंभेदपारततजिनकीमायामायारहेनजोने
छायाछलिततनकी राधाजेसोकहाकहोअसनिकीसनेसि
यसंपतिसहित विषरहितफननकी केशनपरेवीचअविया

दिककेसवफ़लअठेतरुपुन्यपुराने २ अथ सिद्दा कार तिने सा
हिसाहि औरेंमरेऔरेभोगेसिद्द नासोकहतहसिद्दसवजेहैंवुहि
समरहु यथा वैसा मलनसोफलफूलसवेदलजेसोकछूरस
रीतवलीजे भोजनभोजनभवनभांमिनभोनमरीमव भोतिम
लीजे डासनआसनवासनवासस्वाहनजानिविमानयलीजे
केसवकेकेमहाजनलोकमरेंभुवभोगवेलेलेवलीजे छ य
सरवासविसविमहसहरमधुपानकरतमुव थनिथनिमर
नगवारकूपजललोकपियतमुव वागवानवहमरहफलवो
धनजेरारनर पवमचिमर...
भवनम...

...सोमिसवकहतजेहेकेमव...

लेका वर्ण साधनसाधोक मुवमोगमेसिद्ध अनेक तासोक
तप्रसिद्धसवदेसवस्रहितविवेक यथा वेया मातवेनोर
तोथनेकेवलरामभवेविसमोरे श्रीरा
लकेतमछत्रीयमारे देव
अरवोर सव
विप तातं हे
तासेसवहि

नय केसो
धननि
जानकोकोजानोव रे हे हे हे कमलवदन
तराजहंतसवदानि मोरमजतदिन अहं तक सो हीरह

नसहिसकेवीविपारीअंगनाअनेकअंगननकी १० प्रति था सा
पनसयानेकोऊहाथनहथ्याररघुनाथजूकेजशकोतुरंगगाहि
राख्योई काछनकछोटीसिरछोटीकाकपछ्यांचहीवरसं
कनेचत्रअविलाख्योई नलनीलअंगदसहितजामवंतहनव
तसिअनंतजिनिनीरनिधिनाख्योई केसोदासदीपदीपभूप
नसोरघुकुलकुमलविजीतकेविजयरसचाख्योई टीका अ
साधसिआनोंनाहिनोहाथहथ्यारनकोई हेतुनहीजयकोसु
कोनहिविभावनाहोई अ र तहांइहाकुसलवत्तनयप्रभुके
साधनआहि जयकेतिनहिविजयलहीयोविपरीतिगिनाई
१३ रूप लंका वर्णि उपमाहीकेरूपसोमिलोवरनीयेरू
प नाहीसोंसवकहतहेंकेसवरूपकरूप १४ वदनचंदसोच

130A

नकमलबाहुपासउमोजानि करपल्लवअरुमलतानिबिंबाधर
बिंबानि १५ तोकेभेदअनेकमेंतीनीकहेसुभाव अद्भुतऐ
कबिरुधअरुरूपकरूपकनाव १६ रूग अद्भुत पकोलै
र सदाऐकरसबरनीयेऔरनजाइसमान अद्भुतरूपकह
तहैंतासोंबुधनिधान १७ कः सोभासरबरमांझफूल्योईरहतस
षिराजेंराजहंससनिसमीपसुषदानिये केसोदासआसपासभौ
रभकेसोभयेनेंयेनें आननिकेदेवमोरभ्रमतबखानीये हो
तियोनिदिनहूनीनिसमेंसहसगुनीसूरजसुरदचारचंदराम
मानीये प्रीतकोसदनछुदूसकेनमदनरोसोकमलबदनज
गजानुकीकोजानीये १८ टी दो रा अद्भुतफूल्योहीरह
तराजहंससुषदानि भौंरभ्रमतदिननदिनबहतजोतिआसमआ

नि १९ वा औरअद्भुतितायहनिनिसमेंसहसगुनीकाहेतें अहो
सूरजसुहृदपासहें सूरजसुहृदरामचंद्रकहारेंनमेंवसतिसंनि
धानहें तोसूरजवंसीरेंनिमेंइहअद्भुतिता औरचंद्रसंज्ञाराम
चंद्रजूकीतिनकरेंमानिजांनि। औसोहेकमलवदनहेचंद्रमाक
रिमांनहेंइरहअद्भुतिता अरुनिकोधामहें –त्रिकोधामहेइह
अद्भुत रातिकौधामहे अरुमदनछ्वैसकतनाही क्योंकिमदन
जीवनिकोंस्पर्शकरेंईश्वरीहें तिनकोंकेसेंछ्वै ऐवातेंसवअद्भुत
कहीयातेंअद्भुतरूपक विरु रूप वर्ण जहांकहीऐअनमिल
कछूसुमिलसकलविधअर्थ सोविरुद्धरूपककहेकेसवबुद्धिस
मर्थ २० यथा कवित्त सोनेकीऐकलताजुलसीवनकोवरनें
सुनवुद्धिसकेछे केसवदासमनोजमनोहरताहिफलेंफलश्री

131

131A

फलसेहे फूलसरोजरह्योतिहऊपररूपनिरूपीतचितचलेहै ताप
रऐकसुवासनतापरषेलतवालकषंजनकेहे २१ सुगम रूप रू
प रूपभावजहांवरनीऐकोनहुवुद्धिविवेक रूपकरूपककहतक
विकेसवदासअनेक २२ कवि रस प्रिया काछेसितासितका
छनीकेसवपातुरज्योंपुतरीनविचारो कोटककटाछनरोगतभे
दननचावतनायकनेहनिन्यारो वाजतहेकलहासमृदंगसुदी
पतिदीपनकोउजिआरो देषतहेहरिदेषतुमेंवहहोतहेंआंषिन
मेंअषारो २३ टी अषारेकेभाववरनेपायातेरूपक अ नें
हन्यारोकोंकहे ३ र तहांकहीयेनेहनेत्रनिहीमेंहे परिइह
लोकोक्तिहेअमुकीठोरसभामेंपंडितन्यारेईवेठेहे ज्योतसीन्या
रेईपहतहें तोइहलोकोक्तिहें ओर अ मृदंहासतोअध

132

रनमेंहें अपारेनेत्रनिकोकेसेजहां ॐ र म्ह्हासनेत्रनिहीकोहांसी

हे जपाहहीनछाडजनेंन पुनि म्र गाजिवोसदकह्योसोकेयो

वनें ॐ र तहांपलकसेंपलकलगिवोस्पर्शहेहोजहांस्पर्शहेत

हांस्रत्नासन्दहोयही याविधअर्थजानीये दीप वर्ण अने

होदो रा वाचकीयागुनद्रव्यकहवरनताकरइहठोर दीपक

दीपतिहोंजहेंकेसवकविसिरमोर २४ वा जहांदीपनकीवात

जेजहीपनवस्तुहें ताहांचारोरएकठकहीये कहावाच्यगुण

क्रिद्रव्य एचारोसोजहांकहीयेजहांहोहिताहादीपकसोवचा

दिकचारोसोउदाहरनमेंजनाईहें मन पक छन वरषा

सरदवसंतसिसरसुभताहोमसुगंध प्रेमपवनमखनमव

नदीपकदीपकवध टी ऐन्यारेन्यारेमनदीपकहें दो रा

132A

तिनमैंकेजुवरनीयेकोनहुकुहूविलास तासोमनिदीपकस
दाकहितकेसवदास २६ तहां एक एनें था प्रथमह
स्निनैनीहेरिहेरिहरिकीसोंहरश्रीहरवित्तमत्रैजनिहरतुहै
केसोदासश्रासपासपरमप्रकासश्रोहुलाससोंविलासकछू
कहिनपरतुहै भांतिभांतिभामिनभ्रमनकहेंभरषेभवसुभ
गसुभायसुभसोभाकोधरतुहै मानदसमेतमानमानिनी
वसकरिमेरोमनतेरोदीपदीपतिकरतुहै २६ टी हांमा
ननिहांसमेतगर्वजेमानिनीहैं तिनकोंवसीकरनहेंरहरी
प श्ररुमेरेहीमनकोदीपतिकेरहें उद्दीपनदिवाइमना
वतिहेइहतो श्र श्रववाच्यादिचारसोसुनीये वाच्यतो

133

तेरैदीपदीपककौमांमलेवौ तमकोहरतुहैंतेजहिमें त
हांतेजतेउद्वमभयो औरुहरहतयहत्रियाभई अरुप्रका
ससौभागुनभयो येसेंचारसोजानीये मूल न्यच्च द
छिनपवनदच्छयसितिनीनरवलगिलोलनकरतेलेंगल
वलीलताकोफरु केसोदासकेसरेकुसमकोसरसकान
तनुजानु तिनहूकेमहिनसकतमरु कैंहूकेंहूहेतह
ठिसाहसविलासवसिचंपकबेवेलीमिलभालुतीसुवासु
हरु सीतलसुगंधमंदगतिनंदनंदकीसेंपावतकहौ
तेजतेरिवेकोंमानुतरु २८ टी सीतलसुगंधमंदजु
पवनहैतामेवाच्यादिचारसोकहतहे सीतलसुगंधय

हतोवाक्य पवनइम सुवासकोंहरकें आयोउहकीया सु
गंधादिकोदेवैोयहगुण सीतलतोदछिनतेंमलयचल
सोस्पर्शाकरिआयोमंदहूरतेंआयो अरसुगंधचंपकादि
स्पर्शेमिसों मूल लादी कव नंदो मा सवेमिरेजहें
वरनीयेदेसकालवधिवंतमालादीपककहतहें तांकेभेद
अनेंत २८ क त्रय दीपकदेहदसामेंामिलेसुदसामि
लतेजहजोतजिगावे जागकेजोतिसवेसमुझे त्रमुसुचिसु
तोसुभगादरसावे सोसुभगतारचेरूपकोरूपकरूपसुकाम
कलाउपजावे कोमसुकेसवप्रेमकहावतप्रेमलेप्रानपियाहि
मिलावै टी नायकाकोदेहमेंातोदीपकदसाअवस्यामेंांद
सभागीभई सोवहदसातेजहिमेंामिली तेजआगितेजमुष

कौंनवज्यौंतिजगी तवऊहिकहाकियो जोतिनेसवैसमुझे
मनदियो केसौंतानजिनतमअग्यानदूरिकरिकै सुभको
दरसाईदई सोसुभतानेरूपकोरूपकसोभारचो सोभाने
कोमऊपजायो कोमनेप्रेंमप्रेंमनेप्रियमिलयो असोयामे
मनिदीपवहुतआरो यातेंमालादीपक एकतौप्रथमदीप
कआयो दूजोसुभमातीजेंरूपसोसोभ चौथेप्रेंमसोंपच
दोहामेंहैं वरखासरदवसंतसखियादोहामेंकेचारिआरो या
तेंमालादीपक रसि प्रिय कवि बैननिकीयोरसुनैमे
रनैकोसोरसुनसुनिसुनिकेसवअलापअलीजनको दा
मिनकीदमकदेखिदीपकीदिपतिदेखिदेवदेखसुभसजदे
खिसुरनसुवनको कुंकमकीवासखुनसारकीसुवाससमयो

134A

फूलनकीवासमनफूलिकेमिलनको हसिहसिवोलिदोऊसु
नेहीमनाऐमानछूटगैयोएकहीवेरराधिकारमनको ३०
टी रहावर्णकीयोवधी सुगंध भवन दीपक इत्यादि
अथ हेल लंका वर्ण वरनतवातङराईकछूजहाको
नहएकप्रकार तासोंकहतप्रहेलकाकविकुलबुधिउदार
३२ यथा सोभितसताईससिरऊनसठिलोचनलषि हु
पानपदजानोजहांवीसवाहवरदेषि ३२ सूटीमंडलमा
नवो दो २ा वरनअठारेहवाहुदसलोचनसत्ताईस मा
रउहेप्रतिपालकरिसोभितग्यारहसीस ३३ हरिहरात्मक
जानिवो दो रा नौपसनाऊदेवताद्वपदीजिह्मिगह केस
वसोईराखिहेंअंद्रजीतकीदेह ३४ सूर्यमंडल सीस लोच

न २० चरन १८ पबाह १०

हरि	लक्ष्मी	गणेश	हर	दुर्गा	वृषभ	सिंह	ब्रह्मा	सावित्री	हंस	रवि	संज्ञा	सूरज	ग्र	सर्व	
१	१	१	५	१	१	१	४	१	१	१	१	१	७	२७	सिर
२	२	२	१५	२	२	२	८	२	२	२	२	२	१४	५९	नेत्र
२	२	२	२	२	४	४	२	२	२	२	२	०	२८	५६	पट
४	२	०	२	२	०	०	२	२	०	२	२	[illegible]	०	२०	बाहु

टीका हरिहरब्रह्मारविसक्तियवा ५ हनकेहरिसूरज रवि मंडलजोहरिहरहिहरिहररहोतअमृत ३५ ऐसवरविमंडलहीमेंसवबगनतीलषिलेउ हराहरात्मकसिंहलोगनतीकर चित्तदेउ ३६ नोपरूनोउदेवताताहकोगपान तीनयेहेलीसमुझीपेरहीसुजेअविदान ३७ मूल देषेसुनैनबाय

135A

कछुपायनजुवतीजाति केसव चलतनहारही वासर गिनेनन
रीति ३८ वाट केसवजोकेनामकेअछरकहीऐहोय सुधे
भूखनमिलेकेउलटेहूयनहोय ३९ राज जातिलतादोअ
धरनीनामकेहेंसवकोय सुधेसुखमसुखम छपेउलटेअंवर
होय ४० दास सवसुखवाहेंभोगजोयोपियरोएकेवार
चांडुगहेजहेराजकोजेहोतिहिदरवार ४१ वीरवलकोदर
वारचांड्योरिअ इत्यादि ऐसीम्हरिदिमाउस विजियज
नतसवकोय पीठलगाएजासुतनछुनीसीरीहोय ४२
पुत्र रिह लंका दोहा करतजहांओरेकछुउपजपे
कछुओर तासोंपरिहतकहतहेकेसवकविसिरमोर ४३
सुग कवि रस प्रिया यथा हरिवोलतहीसहसेस

रघुभाषावचन

136

मकेसवलासभगावतलोभमगें कछुवातचालावतवेरुचलेम
ग्रानंनहीमनमयजगें सषीतंज्युकहेसहुतीमनमेरेंहिजायहे
नहियोऊमगें हरित्योनेकडीठपसारतंहीश्रगुरीनपसारन
लोकलगें ४४ हसिवोलिवोतोसिंगार लाजभगावतसिंगा
र येरुचलेविभासमें मनमथजगेसिंगार हीयोनाऊमगेवेवी
भत्सडीठपसारवोसिंगार श्रंगुरीनपसावीभास श्रेससिंगारश्रो
विभासकहो नाहांप्रत्यनीकरसभयो श्रेसेंईभयवीरमिलें
रुद्रकरुनामिलें नाहांहंप्रत्यनीकजांनिये मूल न्यचय
छायगहोहजनाथसभायहीछूटिगईधरिधीरजतईं पां
नमषेमछानेंनरचीरुचिश्रारसीरैप्रिकरीगहमठाईं रैपरि
रंमनमोहनकोंमनमोहिलयोसजनीसुषदाईं लालमो

पालकपोलनंछुतजेरेदियेतेंमहाछविछाई ४५ टीका
प्र प्रत्यनीकयहकवित्तहेरसकप्रियालविलेऊ हूवनमें
न्योइहांअलंकारकहिमेऊ ऊ र अलंकारहकाव्यकोहूव
नहमेंभासअर्थहीनमेंज्योंलसेअलंकारअनुप्रास ४७
तैसेंह्यांपरिहरतक ह्योप्रत्यनीकाकेमांहि हेरसदोषसहुँहि रस
कवितामेनाहि ४८ मूल अन्वय जीऊदियोऔरजम्म
दिओजगजाहकोजेंपतिवडीजगजानै ताहीसोवेरमतेगवा
कायकरेहूतनकेसवकोऊरआनै मूयतेरिपसेंहकरसोपि
रताहीसोंमूरेविरोववितानै ऐसोहेकालकहूंइहजांकें
भलोकरियैसोवुरोकरमानै प्र विषमालंकारकेमानहे
य ऊ र इ हकेऊहिमतेंअनिष्टभयोतहांसिंहकरनलो

मनहीरहूनहोलीलाकरतंहीओरेंकरतेओरेभयोपरिहूतहींहें
विषमनहीं इति नाज सह राम रचि याक प्रिया
काया हज मचे काया माहि डीप परि नालं
रव नंना चिये सप्र स १३ अथ पमा कार
णिनं दे रा रूपसीलगुनहोयसमजोकोंहंअनुसार ता
हीसोंउपमाकहतकेसववहतप्रकार १ नाम संसयहेतुअ
भतअतअतिअद्भुतिविक्रजोन दूषनभूषनमोहमयेनय
मगुणाधिकओति २ अतिसैंघउतप्रछुतकहोस्लेषधर्मवि
परीतंनिर्णलछनकोपमाअसंभाविताभीत ३ वुधिविरोध
वुधिविरोधमालोपमाओरपरस्परईस ४ सुगमाति संसो
पमा णिनं जहानंहीनिरधारकछुसवसंदेहसरूप सोसंस

131A

यउमासत्रावरनतहोकविभूप सवै रस प्रिया वेंजनहें
मनरंजनकेसववेंजननैंनिकिधोमतुजीको मीठोसुधाकिसु
धाधरकीदुतिदंतनकीकिधोहिमलीकी चंदभलोमुखचं
दकिधोंसचिसुरतिकोमकिकान्हकीनीकी कोमलपंकज
कैपदपंकजप्रानपियारेकिसुरंतपीकी ६ टीका मझे
जीमेंकीनीसचिकहतिहें भ्रा वेंजनमेंमनरंजनधर्म
सुधामेंमिश्टताधर्म दंतनकीठोधर्मनहीसुकों उ र डी
दंतनकीनीकीकीदाहिमकीनीकीसदृतांमहानीकीजानी
ए मूल तूप वनी दोहा होतकोनहेंहेतातेंभ्रातिउत्त
मसोहीन ताहीमोहेजोपमाकेसवकहतप्रवीन यथा वित

138

अमलकमलकुलकलितललितगतिवेलेसोंवलितमधुमा
धवीकोपानीहै मगमदकेपूरधूरिप्यरिपगकेसरिकोकेस
वविलासपहचानीहैं गेलकेचमेलीकरिचंपककेसोकेलीमेद
सवनीसमेतहेतुकेतुकीसोंजानीहैं हिलमिमालतीसोंअ
वतसमीरजवतवातेरसुवमुयकासमेोवखानीहै सुगम
अम पम उपमाजायकहीनहीजोंकोरूपनिहारि सो
अमसोउपमाकहीकेसवदाससविचार ८ रस प्रिया कवि
यथा इरहेकोंमखनवसनइतिजोवनकीदहहीको
योतिहोतिहोमस्रेसीरातिहैं नाहकोसुवासलगेंहेहेकेसी
केसवसुभायहीकीवासमेोरिभीरिफायातहै देखितेरीमर

तिकीम्हरतिविस्मरतिहेंलालनकेदृगदेषवेकोललचातिहे च
लहेहैकोंचंदमुखीकुचनकेभारि भयेकचनकेभारहीलचकक
टिजातहैं टीका हरा देदृजोतितोघोंससीभखनजोवन
संग भयेयनउपमोतासकोउहीअभषैतप्रसंग ११ वार्त्ता स
भावकीवासकोंतोसुगंधनकीउपमानहोयगी ऐसेंहीकुचभा
रकोंजानीऐ अथ इती माव नेडो रा जेसीभईनहो
तअवआगेंकहेंनकोय केसवकुंअेसेवरनीयेअ इतउपमासे
य १२ सवै यथा प्रीतमकोअपमानेनिगयानसयानेगी
रीझरिझावै वंकविलोकनिवोलअमोलिनिवोलितोकेसवमो
दवढावै हावहुभावप्रभावसुभाकेकेभावनिभावतिचित्त
चुरावै ऐसेविलासतोहोइसरोजमेंतोउपमामुखतेरेकीपावै

टीका पियप्रेमप्रमानादिककरमनहिकंजहित्रियकाल अंग
नउपमाविलासविनउपमावदनुरसाल १४ मूल क्रियो
मा कोंहूं कोंहूं वरनीयेंकोनहूंएककउपाय विहूयउपमाहो
नतहांवरननत्रकेसवराय रम क्रिया यथा केसौदासकुंद
नकेकोसतेंप्रकासमांनिचिंतामनिउपमासोंआपकेउजारीसी
रंडकेउयोततेउकरीऐसीकाहीसवसारससहरसोभासार
तेंनिकारीसी सोंधेकीसीसोंधीदेहसुधासोसुधारेपाइधारीदे
वलोकतेंकिसिंधुतेउधारीसी आजयासोंहसिबेलबोलचा
लतेउलालकालिहरोसीग्वालिलाउंकामकीकुमारीसी १६
टीका रठा कोउएकउपायकोंहूंकोंहूंभांतिको वरनी
येतिनहिंवनायविवित्रियउपमाजानितेह १७ कुंदनतेपरकासी

139A

ऽऽकहीसीवाम काहीसमरसमारसीयोविक्रोयविचिनाम १
प्रश्न जानायिकोंकोलाईहे ताहीनताकोंकरी आजुपासोको
मचलाईऐ यहनायकाजोआईहताकोओरदिनचालोहे नाम
काकीचाहयासोंवहुतहेताहाहूतिकहतहे कालिहेंश्रेसी
लाइहोंचिंतामतिकरौ यामेंवाकीम्लुतिकडी हूष माव ने
जहांहूषनगनवरनियेंम्रूषनमावडुराय हूषनऊपमाताहि
कोवुधजनकहतवनाय सेवे रस प्रिया जोकहोकेसवसो
मसरोजसुधासुरभंगनिदेहदहेहैं दाडिमकेफलश्रीफल
विद्रुमहाटिककोटकिकहूसहेहैं कोकिकपोतिकरीश्रहिकेह
रिकोकलिकीरकुचीरकहेहे श्रंगश्रनूपमवातीयकेऊनकीऊ
पमाकहिवेईरहेहैं टीका नायकाआपसोंमनमेंकहतिहे जो

को है तो सम सुष की उपमा तैसो सम के अंग सुधा सर जे है तिन द है है । ऐ
कला नित्य लेत है अरु सरोज कहै नैनन को उपमा तो सरोज न
को अंग न दह्यो है अरु दाडिम आदि बन मे कस्ट सहै हैं
आदि कुचील है याते उन अंगन की उपमा को उनके अं
मन मे वचन प्रछन्न रह्यो हू सबै उपमा अरु अनन्य पाल
गार है उपमानो को इन कहे याते मैं हू सबै उपमा अरु उनके
उन ही के अंग मै है रह अनन्य है जाहां कहे इक बस्तु को उपमे
उपमान रह लछन है सल सबै माव ने हू सब न हरि द्र
होवरना स्म सब न भाइ सब न उपमा होरिति होवरना हे क विर
सवैया सुवरण बलित सुरनि कलि गाउ मेरो सो मिलि लागति ल
लित वितानी है पावन प्रगट इति इ जनी की देपति दीपति दिपति

140A

आतश्रुतिसुखदानीहै सोभासुभगानीपरमारथमिछानीहैहवनक
रूपानीमानीसवजरानीहै सरवकेसरेपअनुपमनीरुपचीनरायो
रीवांनीमेरीरांनीगुणकेसोपानीहैं २२ वानी त[illegible]वरनम
लि[illegible]स्वरमेंरोरांहिजदतछविस्रुतिकणिपानीपवन सुवरन
[illegible]देवतामेरो सिवद्विजविप्रश्रुतिवेदयेसेजानीयें अ
[illegible]ोनहोयहेपतंसर्थलगेको ऊ र इहांस्रवनमासि
[illegible]बमेंसवदसांमिताहै जेसेपरमविरोधीरुद्र स
[illegible]वनहीहै पानीकेस्रवनद्वरायेअधिमत रस
[illegible]रा रूपककेअनरूपकोकोनहिंविधिमत
[illegible]ाकहतसकलकविय २३ यथा सित

कहो सोम मुषकी उपमा जे सोमके अंग सुधा सुर जे हैं तिन दहे हैं ऐ
कला नित्य लेत है अरु सरोज कहो नैनन का उपमा तौ सरोजन
को अंगन ने दह्यो है अरु दाडिम आदि वन में कष्ट सहे हैं कोक
आदि कुचील है याते उन अंगन की उपमा को उनके अंग ही है
ननमो वचन प्रछन्न इहां हू षनोपमा अरु अनन्वयालंकार को
स्यार है उपमानो को हन कहे याते मैं हू षनोपमा अरु उनके अंग
न ही के अंग से है इह अनन्वय है जहां कहे इक वस्तु को उपमेय उ
पमान इह लछन है मूल षनो माव ने हूषन हूरि दुरायज
हां वरनाम सषन भाइ मषन उपमा हो जिति हो वरनाम हे कविराइ
सवैया सुवरण वलि तुम्ह सुर निकलि गाड़ मेरो सोमि लागति ल
लित वितानी है पावन प्रगट इति उजनी को देषि पति दीपति दिपति

140A

अतिश्रुतिसुखदानीहै सीनासु भसानीअरमायतिघानीदीहकलुष
हपानीमानीसवजरानीहै सुखकेपूरेपुन्यसनीरएप्रवीनरायतो
रीवानीमेरीरानीगुणकेसेयानीहै २२ वानी व सुवरनभ
लेअन्तरसबसबरमेंरोगोंहिजंदेतछविगुनकिंपानीपव सुवरनं
रंगसोनसुरदेवतामेरे सिवहिजविप्रश्रुतिविदयेसेजानीयें अ
सोबालंकाकोनहोयहैयतअर्थलगेय उ र इहांअसबनभावि
निरेलिये अबमेसवसांमितहे जेसेयरमविरोधीरुद्र स
मुद्रतोअसबनभावनहीहै पानीकेसबन्हरायअधिमत रम
दि मोहो माटो रा रूपककेअनरूपकोकोनहिंविधिमव
जाय ताहीसोमोहोपमाकहतसकलकविय २३ यथा चित

क वि
प्रि-१४१
141

बेलतनखेलकचूहांसीनहसतहरिसुनगोनकोनतोनबांमही
वहे सोमोहतनअंवरनिउंजलतादिगंवरसेसंवरज्यांसंवरांरिदे
हृदयकोंदहे मूलहोंतसं चोफलफलिफलिकुमिलातेजात
वातवीराहुंनवातुकाहुसोकहे देखिदेखिमुखचंदकेसवच
कोरसमचंदमुखीचंदहुकेविरंगमोचितैरहे २४ टीका हर
कोनहुरूपककेजहांअनरूपहिमधिजाइ वसेचितमोआप
मानहकहेकविरइ अर्थ जद्यपिचंदनुमंदहै छबिमुखसम
नप्रकासु तदपिकहुकमुखआकतिहिपाइरहतलखितामु
२६ चंदमुखीकोअर्थचंद्रजाकेमुखसोहे प्रीतिपकीजेयांमें
मंदहेचंद मल [illegible]या माव ने एकहिसुभजहवरनीये

मनक्रमवचनविसेष केसवदासप्रकासवाहिनियमोपमासु
लेखि २७ यथा चित्र कलितकलंककेतैकेतुअरिसेतुगातभो
गजोगकोअजोगरोगहीकोथलसो सून्योंहीकोपूरनयेंप्रतिदिन
हूनोदिनदीछिनिछिनछविछीनछीलरकोजलसो चंदसोजुवर
नतेरोमनचंद्रकोदुखईसोईमतिमंदकविकेसवकुमलसो सुंदरसु
वासअरुकोमलअमलअतिसीताजूकोमुषसषीकेवलकमलसो
२८ टी केवलकमलकेसोंउहीनयमहै कलंककविकेतधुजा
कोराषतहै मू अ गु थि य व नं अधिकनहूंते
अधिकतानेजहांवरनियतहोय तासोतानअधिकोपमाकहतनसि
घातेलोइ २९ य वेतरंगसेतरंगसंगएकराअनेकहै सुरंगअं

गंग्रंगपेकुरंगमीतसे ऐनिनकअंकपरवेससंककेसोरस्सऐकलंक
रंकधेकलंककहीकलीतसे वैपियेसुधाहिअसेधानिधीसकेरसेज्ञस
चिहंसुनीतसेपुनीतवेपुनीतसे देहेऐदियेनदेहवेभोएनहेनहो
हिगेनरंडडंद्रुमीतसे २· सुगमाल अति योप वएै ऐक
कछुऐकेविषेसदाहोयरसऐक अतिसयउपमाहोत तहांवरन
नसहिनविवेक यथा विन केसोदासप्रगटप्रकाससोअकास
पुनिईसरकेसीसरजनीसअवरेषीये पलय लजलजलअ
वेसअमलअतिकोमलकमलवहुवरनविसेषीये मुकरकठो
रवहुनाहिनअचलजसवसुधासुधानत्रियअधरनैलेषीये ए
करसऐकरूपजोकीगीतामीमासुनितेरोमावदताकेलतेहीविषे

हे कीये २२ अैकादो वसुधालधानहीकहात्रियअधरनसु
लखाहि ठौरठौरऔरसबानुबसेबतोहीमाहि २३ मूल ऊजे
विनो भाव ने ऐकैदीपतिऐकहीहोपअनेकनमाह ऊ
पदितिजउपमासुजोकहीकविनकेनाहि २४ यथा वित्त
प्यारीईगुमानमनमीननैनकेमानियतजानीयतसबहीसके
सनजनाईऐ पंचबानबाननकेआनआनभांतिगबैबह्योप
रमानविनुकेसेकेंबताईये केसोदासमविलासगीतरंगरंगी
निकुरंगअंगनानिहूकेअंगननिगाईये सीतारहूकेनेनन
निकाईहमतीमेंहेसरूठेहे कमलखंजरीटहूसेपाईये २५
रूगग येस्वेपमा जहांहररूपप्रगीयेसब्दऐकहीसूधे

कवि
प्रि १५२
143

केसवहे श्लेषोपमा समर्थ २६ यथा सगुनसरससबअंगअनुरागरे
जितहैं सनेहसभागवडेभागवागपाईऐ सुंदरसुवासतनकोमल
अमलमनमोहसबरसमहहरषबढाईऐ बलितललितवासकै
सोदासतविमलदरीसिंगाररत्याईगहरुबलाईऐ चातुरीकीसार
मांगिआछरीहेनंदलालचंपेकीसीमालावालाजरजरजाईऐ
२७ टीका सबजननकोअनुरागजाकेअंगरचितमयोऐसी
सुंदरलामामालवहताजिहिकोसवे रा रा मनमोहरबढाई
येमोहसानमयदेखि सहितसुसुंदरठांउंकरिवालमालसम
देखि २८ प्रश्न श्लेषोपमाकारकोनहोइ उ र जहां
उपमानकेसाथश्लेषहोइसोश्लेषोपमाहै जैसेंमालावालाजप

मानउपमेयहैं अरुकांहूकेसंगसहसाम्यताकौजोतहांम्होय जे
सेकरवालअरुवालकइनमेंउपमानअरुउपमेयतानाहीं अ
सजानीय मूल मीप लछ ऐकधर्मकोऐकअंगजहंजानि
यतहोय नाहीसोधर्मोपमाकहावेहि आनेलोइ ३९ क म उ
जरेऊहारमरवासकि विराजमानहारकेसमानमउपमानअनटी
हीये सोभितजलनेवीचिगंगाजलकेजलविंदुकुंदकलिकासे
केसोरायवसनमोहिये नवकीसीरेषाचंदचंदनसीचारुरजअंज
नसिंगारहूमरलरुचिरोहीये सबसुवसिहूलिवासोमेसिवजर
केसंगजावकसोपावकलिलारलाग्योसोहिये ४ टीका हरा
अकधर्मकोअंगताहांअसहिऐककोअंगजहांजानिपायनकरे

धर्मोपमाश्लेसम ४१ सिवज़्रमेंहेसोतिरसपाप्योत्यहांलिसार धर्मो
पमा अरुधर्ममेंऔरैधर्मविचार ४२ विप नोप वाणि पूरुव
पूरेपुन्यकेजोईकहीरोहीन तासोंविपरीतोपमाकेसवकहतप्रवीन
४३ स या मे विततदेहविमतितिदिगंवरअंगनकीनो हरकेसु
दरीकेसवुहेरदरीनमेंमेदरकीनों देषिविमंडितमंडिनसोंभुज
दंडहुहेदिसिरअविहीनों राजनिश्रीरघुनाथकेराजकुमंडलछा
डिकमंडललीनो ४४ टीका हरा प्रथमेंगुननिपरेहुतेनेकर
उरहीन यांतेविपरीतोपमालितरूपनरपकीन ४५ अथ लिखे
माव ने उपमाअरुउपमेयमेकोजहांछनदोषविचार निर्ने
उउपमाहोनताहासवउपमनिकोसार ४६ कवि यथा एवक

हेअमलकमलसुषसीताजूकोंऐककहेचंदमयआनंदकोंकंदरी हो
यजोपैंकमलतोरेनिमांहिसकुचेरीचंदजोतोवासरनहोइदुतिमं
दरी वासरहींकमलरजनीमेंहीसुषचंदवासरहीरजनीविराजें
जगवंदरी देषोसुषभावतनदेषोकमलचंदयाजेसुषसुषैसभि
कमलनचंदरी ४७ सुगम अप छिन पमा लीने दोह
लछनलछसवरनीयेबुद्धिवलवचनविलास ताहीलछन
कोपमावरनतेकेसवदास ४८ यथा वित्त वासोंमृगअंकक
हैतोसोंमृगनैनीसवकासोंसुधाधरकहेहीसुधाधरमानीये
वहद्विजराजतेरेद्विजराजराजेराजेंवहकलानिधतेंहीकलाकलि
तवषानीये रतनाकरकेहोऊकेकेसवप्रकासकरअंवरविलासकव

क वि
प्रि १४५
145

लयहितमानीयें वाके सीतकरकर लेही सीता सीतकर चंद्रमा सोवे सु
धीसवजगजानीयें ४९ टीका हरा मगणकमगनेंनीकाहीस
सुधासुधाहेवार द्विजद्विजकलाकलासवेकहे सहस्रहठार ५० प्र
श्न रतनाकरकेदोऊरहनिवहीनहीरीति हूजेंरसलेषिकिति
श्रुभिनश्रुयपरतीत ५१ उ र पुरवस वज्रो ह हूयाहोतोताय
कश्रर्थ कहाकिहूवोप्रकासकरिसोतोनहीसमर्थ सो ठा है
प्रकासकरचंदवहप्रकासिकारनसुतो श्रर्थकरतारन छंदहे भांत
तिनिकसैसवद ५२ वहअंबरसुविलासउहअंबरसुविलासहु
नी वहकवलयहितकारिनी ५३ दो रा ऐकभांतिकोसव
होलगतनदोऊठाम पांतेनहीसुश्लेषपहेलछिनउपमानाम

५४ मूल अर्थ संभा जोग वर्णं जैसेभावनसंभवैतैसेकरत
प्रकास होतअरुसंभावितनहींहोताकौसमवदास ५५ यथा चित्र
जैसीअतिसीतलरूगवासमनसयजमहिअमलअनलसबुद्धिवलपहि
चानीये जैसेकोनोकालवसकोमलकमलमहिकेसराईकेसरा
सकंटकसेजांनीये जैसेविधुसधरमधुरमधुमधमहिमोहैमोह
रायविधुविषमवषानीये सुदरिसुलोचनसवचिनसुदतितेसें
तेरेमुषअंबुजपरवतसमानीयें ५६ टीका रठा तिमतेरे
जवयोगजैसेंकेसवरावकोमलयअनलसमजोगत्योतुवचमा
नहिपरख ५७ मूल कोविलसेअतिहूसचनकरिनीसमि
रराज मृगरूरेमृगराजसोरोसोबरनतलाज टीका कोकि

लकीवानीलई गिरिकरनीनरनीय मृगाके हविसु भावतेउपमान
गतनहीय ५८ मूल सोद्यो भाव नं जहांउपमाउपमेयसोंउ
पमानविरोध सोंविरोधउपमासदावरनतिजिनहिप्रबोध के ते
कोमलकमलकरकमलाके भूषनकोंके सोदास हवनसरदससि
ठाईहें ससिअतिअमलअमृतमयमनिमयसीताकोवदनदेषि
तो कोमललिनाईहें सीताकोवदनसबसुषकोसदनजाहिमाहन
मदनदुषकदनतिकाईहें आधोपलमाधोजूकेदेषविनुसो
ईसासिसीताकेवदनकहंहोगइवदाईहे ६१ मालो भाव नं
मदनमोहनकहोरूपकोंरूपककेसोमदनवदनजैसोजाहिजे
नमोहिये मदनवदनकेसोसोभाकोसदनस्यामजैसोहेकमल

14 GA

अरु लोचन नियो हिये के सो हे कमल जे सो आनंद कोकंद सम भके
सो हे सचंद जे सो उपमान टो हिये के सो हे सचंद वहु के सब कुम
र का न्हे सु जो आन प्यारी जे सो तेरो मुख सो हिये ६२ पर रोप
वर्नं जहा अभेद बखानीये उपमा अरु उपमान तासो परस्व
रोप मके सब कहा तो बखान ६३ यथा चित्र गोरे न वडे हद
नाहि ने ग्रह सिद्धि बावरे न बुद्धि वंत नारी यो न नर से अंगीन
न अंगन रूजरे न मेले मन स्यार जन सरे रन पावर न वर से हुव
र न मोटे रंक राजा जन कहे जाई मर न भ्रमर अरु आप ने ने पर
से वेद हन पावे भेद पार यत के सो दास हर जन से है हो हरि हरि है
हो हर सो ६४ अथ ताप वर्न दोह वंद चोर वादीस

कवि
प्रि १४८
147

हदकलसहतप्रभजानि समरिपुसोदरआदिदेखकेअर्थवखांनि ६५
यथा चित्र विधुकेसोबंधु किधोंचोरहास्यरसकोकिकुंदनकोबा
लकिधोंमोतिकोमीतहे कलकलहंसकोकिछीरनिधछविप्रद
हिमगिरिप्रभाप्रभप्रगटपुनीतहै अमलअमितअंगगंगाकेतरं
गसमसुधाकोसुबंधुरिपुरूपकोअमीतहैं दिसदिसदेसदेसप
रमप्रकासमांनिकिधोंकेसोदासरामचंदजूकेगीतहैं कोककल
सेअतनकलवहदोहाईहोचाहिये सुगम ६६ इति नाज
सह रांम रचि कवि पोटी सह रांम इका वसि लं
का लीने मच ईस काम १४ पज माले देखी धि
का वसि प्रति पमा नैने सावताकेपरनायअोंवरनतवा

147A

त्रिताश्रंग कहे यथामतिवरनत्योंवनिताकेप्रसंग १ कहीजुम
रवपंडितनजोकीजितनीजोनि तितनीश्रवताश्रंगकीउपमाव
होववांन २ जोकीजाश्रंगकीजितनीववितकहीतितनीऐसे
कहतहो मूल नषतेंसिषलोवरनीयेदेवीदीपतिदेषि
सिषतेनषलेंमानुषीकेसवदासविसेष ३ जगकेदेवीदे
वकोंश्रीहरिदेववषानि तिनहरकीश्रीराधिकाइष्टदेवता
जोनि ४ मूषनतिनकेमूवनतिक्रिमश्रनपतिकेसंग ति
नकेकेसवदासकविवरनताहेप्रसंग ५ श्रथ रएा मा
व ने उपमाश्रौरसमानसवहूतनोभेदववानि जावक
पुतपगवरनीयेमहदीसंजुतपांनि जाव वर्ण दोह

राजरजोगुनकोआगारप्रतिपछीनकोभाग रंगमसमजावककवरनि
कोपरागअनुराग ७ का० तु कोमलअमलनिकोरंगमसम
कि पेंड्हसोभिजतआंगनिकिसोभाकेसदनको अरुनिदल
निपरकीनोंसहतरनकोपजस्योंकि पोंरजोगुनराजीवकेगन
नको पलपलअनपकरतकिपोंकेसोदासलगिरह्योअ
नुरागपियमनकों ऐरीहमभांनकीकुमारितेरेंसोहेंपायजा
वककोरंगकिसहगसोतिनको ८ टीका राजीवनिको
रजोगुनजीत्यों याहीतेंसर्पनेकोपकीयोहें अरुनदल
पेंकिपों वर पमा णिने अतिकोलपरवरनीयेपल्लव
कमलसमानि जजलकमलज्योंचरनकहिकरकहिय

148A

सजसमांन ९ यथा वित्त गंगाजकेजलमधिकंठलोप्र
मांनियेऊजपिजपियहरमंत्रमानेदखटावई केसोदासबामज
सहीतसहैरोकेरसएकपाइठाडेकोटिकलपनसावई कोमलअ
मनभएसीतलसवासभएकमलानवासमनतपमसावई
पायोपरहसंपदपदमनिपदमनितेरेपदपदवीकोंपदपेनपाव
ई १० यथा रन गली ऐने अंगुरीचंपककीकलीजोवन
रूपमांनतारारविससिसुमनगनबनसमांन ११ विछिप
वांकअतोटकीनाहिनउपमाआन सोभाप्रभांतरंगनविहंस
अंसतनमान ११ हंसअंसहंससत क त चंपककीदल
हातेमलीपदअंगुरीवालकेरूपरसेहे सभुसदेसलसेनल

क वि
प्रि १४८
148

राजरजोगुनकोप्रगटप्रतिपछीनकोभाग रंगमसमजावककवरनि
कोपरागअनुराग ७ का। तु कोमलअमलतांको रंगमसम
कि धोंइहसोभिजतअंगनिकि सोभाकेसदनकों अरु निदल
निपरकीनोंसुतारुनकोपतत्योंकि धोंरजोगुनराजीवकेगन
नकों पलपलअनपकरतकि धोंकेसोदासलगिरह्योअ
नुरागपियमनकों ऐरीहमभानकीकुमारितेरेसोहेपावजा
वककोरंगकि सुहागसोतिनकों ८ टीका राजीवनिकों
रजोगुनजीयों याहीतेंसुर्यनेकोपकीयोहै अरुनदल
पेकिधों बर पमा रीने अतिकोलपदवरनीयेपूल
कमलसमानि जजलकमलज्योंचरनकहिकरक

लजस्समान ९ यथा वित गंगाजरकेजलमधिकंठसो प्र

मानियेअजपिजपिम [illegible] श्रातेस्वबढावई केसौरामसबासज

समीतमसै [illegible] कलपनसावई कैमल श्र

[illegible] वातमनगप्रपमभ्मावई

[illegible] तेरेपरपरवी कैपरपेनपाव

[illegible] ने श्रमुगीबपकैकीकसीजीवन

[illegible] तस्सुमनग [illegible] न ॥ विडिण

[illegible] हनजपम [illegible] आंतरंगमनविहस

[illegible] ॥ हेस [illegible] मैहे ते वेपकवकीरहे

[illegible] परहुश्री [illegible] सभुसरंदरनगरनेहेन

148A

क वि
प्रि १४९
149

याअनुप्रीतमकेद्रगदेवसेहै वाकेअमोटवमेविछियामिवि
म्रुखितजोतिजराझारादगसेंहें केसवसोमसरोजनरूपरकोप
मनोतनजानिकसेहे १२ टीका हरा हगदेवसुरविजांनीऐ
अरुनअकारवसमानि मनोसोंमपंकोपिकेकेजकसेतन
आन अथ पर लीने हरा नूपररिझ्यायेत्रमनिलोचन
गुनगतिहारि जापक जसपाठमधुपनिकेवेदनुवार
१४ यथा गननकेहारविहारकेपहारयह किंधोंप्रतिहार
रतिपतिकेनिलयके हेंसगनेनायककि गतढगनगायककि
श्रवनसुगायककि मापकहेमधके केसवकुवलकुलम्र
लिकुलकुलैननकिकिंधोंप्रतिघुननसमनिजनेचपके हा

149A

टकाघटितामनेस्यामलजटितपगानपरजुगलकिधोंवसेहैविजय
के २६ टीका हंसकोंगतिसिषावनमेंनायकहे अरुसिसम हक्क
नितसहकरतहें मनितकहतहेंहें रतिकेसहकोंजिनकीठौरकैरा
ह्वैकेकरनहारहें अथ हर णिने हरा जेहरिजयकिंकिनि
कलितकेसवदाससुजांन मालामालासुभसमासीमासमसे
पौन १८ टीक मालामालापंकतिसदनेनिकोसभाकीसीमा
मणीवासोयानछिही मूल क चंपा कोमलकमलकूल
रूपरनवलअतिकुलनिकोमालाकिधोंकेसवसभायकी वरन
सरोवरीमरोकिधोंविछियाकुनिककिचोंकलहंसनकीवैठकवना
नाईकी [illegible]कीचीतीगतिमेरीमतवांधीजुकिंकेनिकी

सोभासुषदायकी अमिलसमिलसोंहीमदनसदनकीकिज
गमगेंपगजुमजेहरजरायकी टीका चरनकोंमसरोवरीवि
छियाहेंसनिकेसंबंधसोविछियानिकोहसकलसहूसंबंध
सोंकनककुरंगनलीजेसीलऊपमाहे अथ रूप वेदो रा
ऊरूकरीककुरकेरिसमकरभसोंभसोंलीन चक्रवाकथलपु
लनिसमवरनिनितंबनिपीन केरमहलमानुआकारकेरिक
दलीन नितं वणि कवि चहुंओरचितचोरचक्रवाकेच
क्रसमसंदरसनदरसनहीनेहें छितिमुत्तासमुनवेटाइकेकों
सबरषसुरनवहावेकोंकेसवप्रवीनेहें सुवहीकेमनिनम
पतहरिहरिहरिजुकेमननमथवेकोंमनमथहथ्यदीनेहें स

150A

सुचिरु चिसकु चिस केलि कैं नरु निजैर काहू नियै चातु नितंव चक्र
कीने हैं २० टीका हरा छुतिनितंव को चेर जो चाकजु च
हु दिस जाति चक्र फिर नदर रसन रहित सुन्यो सुदर समाति २१
दैम्य वेरुसु रहित क्रियासु चिसकु वई सुहीन ऐसो राचिसु चि
सकु चकी सेव लैठ प्रवीन २२ अथ टिव नंदो राय कवि
श्रीतिसु छिम ऊदर रहति यलदलदल ऊनमान रोमलता सु
ति धसु मत्त मचारु चुटीन समान २३ यथा कि सुजनकी मि
ठाई जैसी सांच की उठाई तैसी स्यार की दिठाई औसी छीन छहु
रि रहें धीरा को सोहास केसो दासदासी को सो सुव स्वर की सोस
क अंकरंक को सो चितु है सुमको सो दानु मति मह को सो ग्यान

गोरी गोरा को मोमां न मेरे जां न सदि तु हें कोने घो सम्मारी हस्त मांन
की कुंमारी यह तेरी कटि नि पट कपट को मो हि तु हें २४ सुगम रो
गा लीउ रय कि घों काम बाग मांन वई हे सिंगार बेलि सी चके
बनाई नाभि कूप न मो हि ये कि घों हरि नें न पंजरी टे नि के बेलि
बे कीम्ह से के सो दा सन यु पंक रु चि रो ही रो कि घों चू लदल परी पि
य को क पट जुर मु ट बे कों मंत्र लिख्यो लोचन नियो जो ही ये सुंद
र उदर सुभ सुंद री को रो म राजी कि घों चित चातु री की चोटी चा
रु सो ही ये २१ टीका चित मेंनु भ्रम्यन र चतु राई हे मा नो वा की
चोटी दर सत है प्र उदर को वर्णन कें ओन की ये दो हा में तो उ
दर को नाम कह्यो है। ज्हा हा ऊपर भ्रपंगा भांति हे कटि श्री ति

151A

स्रुतियाभांतिहे क्यौंकिउदरवलदलकेउनमानहे वलद्रुल
कौकोरसरुछमहेंयातेंप्रसंगमात्रकह्यौहे मूल पंकु ऐनं
हरा चक्रकाककुचवरन्नीयेकेसावकलसप्रमान सिवुगि
रिघटमठगुछफलसमरभकुंभमांन २६ यथा विज्ञ किधों
मनोहरमनिहाररुजिसरषेलिंजोवनकलभसोभनदरसहे मोह
नीकेमठकिधोंइंदराकेमंदिरकिइंदीवरइंदमुषीसारभसरसहें
आनंदकेकंदकिधोंअंगहूअनंगहीकेवाठनसकेसोदासवरष
वरसहें आनंदकेकंदकिधोंअंगहूअनंगहीकेवाढनसकेसो
दासवरषवरसहें ऐरीमेरीकान्हजूकीप्यारीतिरकुकिंधोंरु
पअनरूपजातरूपकेकलसहें २८ टीका अनंगकेहि

क वि
प्रि १५२
152

यके अनंदकंदहे तेरे अंगमे हेकिधों मूल जेव नंदके रा मं
जकरपंकजपल्लवनिसिववल्लरीसुपास रत्तनतारिकाकुसुम
सरनषतत्तविकेसवदास २८ कवि पथा केसोदासगोरेगो
रेगोलकोमसलहरिभामिनिकेभुजमूलभाइसेजतारेहें सो
भासुबबरसतमांबनसेपरसनकेचनसेररसतकठिनसुधा
रेहैं वलियावलितवाहदेषरीमेंहरिनाहुमानूमनपोचि
वेकोंपसीजेविचारेहें मेलिनमृनालसुषपकमेंहुराएडुषं
देषोजाइछ्यातिनमेंछेदकेकेडारेहें सुगम कर बन प
प्यारीकरगजराविराजेगजमोतिनकेतिनकीअजोतजोतिके
सोदाससगाईहे वलयावलितकरकंकनकलितमनलाल

152A

कीललितपोंथीपोथनिवनाईहे मनपोनहरितनलकगलक
लिलालस्यामलसुमिलमेरेसामरेकोंभाईहें मानसुरसोम
कलसकेलिआपनीयोअपनेसखाकोसुखपाइपहराईहे ३०
टीका हरा स्यांमलसेंजेसुमिलहेंअसितपाटघुनिजानि
तहांप्रश्नरविससिकलाअरुकिसेतप्रामान ३१ स्यांमप्रीतिके
सेवनेंवर्णनमेंकहुनाहे उ र सवसकेलयामेंअर्थजेनिजमं
डलमांहि ३२ तेऊविधुसहहरिहरकीजेवरभाई असितअ
सितविधाविसुकीसिवसितसमाहितजाइ ३३ प्रश्न रठा र
विमेंकहेजाताइ ससिहरिआदिसदेवता ससिकलिमिनकहे
माय उनसवकीअपनीकही ३४ उ र दो रा लीनसोजु

पुनिकहनहेससिरविनिप्रतिमास वेनितरिवमेंरहताहैजोनिज
कहीप्रकास ३५ मूल धुन गेली गिने हुका पा गोरी
गोरीअंगमुदरीनरानेसेर चिरनअओरग्रतिपनेपतेरचिपचत्री
नेहें रतिजयलेषिवेकीलेषनीसलेषकिधोंमीनरथसारथी
केतोदननवीनेहें किधोंकेसोदासपंचवानजूकेपांचोंबान
सकलभुवनजिनवसकरलीनेहें कंचनकलितमनमुंदरी
ललितमांनपियपरजनमनहाथकरिदीनेहें २६ नो
दनाअग्र कर दीव ने राधाको रूपनिधानकेपानति
आनिसवेछिनकीछविछाई दीहग्र दीहनसूछमथ
लगहीहगगोरिकी दोरिगुराई महिदीमयविंदुचनेतिन

मेंमनमोहनकेमनमोहनीलाई इंदवधूअरविंकेमंदिररं
ग्राकोंमनोंपूजनआई २७ पोननदीहअदीहहेंस्तमपूर
नजानि दौरगुराईजिनहकीगहीगोरिहगमानि २८
वानी दीहअदीहपोननिकोंविसेषनहे गोरीहेकीहगह
शूमेजोकीगुराईगहीहें मूल बाव नंदो रो कंठह
कंठकपोतहुतिकेसवदासप्रमान पीठिकनककीपाठिका
वरननसकलसुजान २९ यथ बित सरनरआकृतिक
वित्तरीतिआरभटीभाति तीसुभारतीकीभारतीमेमोरीको
किधोंकेसोदासकलिगानतासुजानितासंकतासोंवचनवि
चित्रताकिसोसोरीकी वीनावेनपिकसुरसोमाकीत्रेरुषरु

क वि
प्रि १५४
154

चिमनवचक्रमनकिपियचित्तचोरीकी अंबुसाईकीसोभाहेअं
विकाहेंदेषिदेषिअंबुजनयनकंबुग्रीवागोरीगोरीकी ४०
टीका क. जे तीनरेषकंठिकीकहीहेजाकोवरननकिधोंनी
निवानीसेसकृतिआदिवसीआनि किधोंरीतकवित्तकीआ
रभटीआदिगईकिधोंकलिगाननतासोंआनिविधिमोहेआनि
किधोंवीनाआदिसुरंगीनभांतिकेजेहेतिनहीकिसोभासो
रेषरूपग्रहआनि किधोंपीयमनमनवचक्रमचोरवे
कीविधिसोईदेषियतिकंठमेलमीसुजान ४१ मूल ठम
नव नें लेतमोललालकोंअमोलचित्तगोलग्रीव
लोलनेंनदेषिदेषिजातगर्वभोंहोंके स्यामसेतपीतलाल

केतुकंठमालहमरजगतुनाहीनेकहंरहीजुओतिजागिके
केसोदासआसपासवासुवेंरहेंमनोसमेतरागरागिनीनिरा
गरंगरागके हरकेनिवासतेंप्रकाससोमजहकरेंअनेक
भांतकी मनोरहीमयूषलागिके ४२ टीका हरासी
लहोत्तरबिमेंजुससिपुनिसुकंठतपरसंगसोहाकीमानो
किरनलगिआइअंगअंग ४३ भांतिअनेकनकीकिरन
कहीसुवेईजांनि हरहरिब्रह्माअरुननिकीस्यांमस्यादित्र
ममानि ४४ मूल ठव ने केसवकुमरिजेरीराधिका
कुमरिआजसोभितासुभायसेजुजनककी वेनीमेंवना
ईगुहीकाहुआलीभांतभलीकेरनकीकलीननातनकला

ककी पीठिमेंजिनकीप्रतिमरतनविलोकिपतिएरतिनयनजुग
स्मरतिवनिककी हरिमनमथिवेकोंमानोमनमथलिखेकू
येकेरचिरअंकपहिकाकनककी ४५ सुगम चिबु बर्ण
न कज्जलमनरस छीर छबिरदनराहकोजानि फोककों
मसरचिबुककेकोस्यामलबिंदबखानि ४६ यथा बिन्नु सो
भनेसिंगाररसकीसी छीट सोहे फोककोसमरकीसीकहूं
जुगतिन जोरिजोरि राहकोसोरदनरह्योहे चुभिचंद्रमामें
तमीकोसुहागकि धोंडोरोसोतिलजोरि जोरि चतुरबिहारी
जकेंचिबुकेंसो चहटिरह्योकेसोरासचित्तओतलेतचितचोरि
चेरि तनकचिबुकतिलजोरेपरमेरीभटू डारोंवारितनकी

155A

तिलोतमासीकोरिकोरि ४७ टीका हरा विधुमेचुभ्यो
किराहुरदकिधोंजमीकोजान हेसुहागिनियहविसेषनत्रिय
कोउहपहचानि ४८ प्रश्न तिलकोचिजऊपमाश्रवनमिता
चितसितश्रभिराम कह्योविहारीरसकश्रतिचितसिंगारम
यसांम ४९ मूल धर गिनें श्रधरविंवपल्लववरनिश्र
गटप्रावालप्रमानि सुकनादाडिमकेरमनिहीरादसनस
मोनि ५० क त्त श्रधरश्ररुनश्रतिमधरसुधाकेधरको
मलकमलदलदुतिछीनलीनीहें केसवसुवासमेदहास्य
जुतिकोनेकोमविद्रुमकठोरकटुविंवबुधिहीनीहें साणे
मेनुमुरहहरिनाहकैनयनमयनगनेगनिलीवेकहुवियागे

कवि
१५६
156

निदीनाहै ५२ टीका हरा दृगचुंबनमेंदृगसगुनहैअपार
रहिहैजु गनलीवेकहनैनगुरुविद्यादइसचेत ५२ मूल
देस वर्णनं रा स्वछिमसुरेखस्वधीसुवनतीसीमानं
लच्छनवतीसहकीमूरतजेविसेषीये रानीहेरनीकस्विसे
तवसकिधोससिमंडलमेसुरनकीसभाअविरेषीये किधों
पियजुगतअवंडिवेकोयडेनकोकेसवज्ञरककुललेषिये
दीनीहनीकलाविधिातेरमुखचंदकोसुन्यापईअकामवेद
मेदिदृगतिदेषिये ५३ हास लिंग हरा जोतिजुहाईद्यामिनी
पतिसुधाप्रकास महिमामोहमरीचिकारुचिमोहनीसहास

हास ५४ यथा किधोंमुखकमलमेंकमलाकीजोतिहोति

156A

किधोंचारमुषचंद्रचंद्रकाचुराईहे किधोंमगलोचनमरीचका
मरीचकिधोरूपकीरुचिमोंदुराईहे सोरभकीसोभाकिदसनद्य
नदामिनीकिकेसवचातुरचितहीकीचतुराईहे ऐरीमोरीभे
रीतिरीयोरीयोरीहांसीकिधोंमोहनकीमोहनीकिगिराकीगु
राईहे ५५ मुष सेव नं मेदनजीविकासबजननिम
नमोहनीविलास निपटहूपानीकपटकीरतिसषमामुष
वास ५६ यथा वित किधोंभयाजुदिजअंगनेगजको
अगाअरसुरिभितोग्रगरागराहेदेहदुषको किधोंचितचा
तुरीचवेलीचारुफुलिरहीपैखोवासकेसवप्रकासकरसुष
को किधोंपरिमलपैमरूरनावजसनकोकिधोंवरवानी

क वि
प्रि १५८
157

वनमालकेबुधको किधोंपापप्रानपतिहृदयकमलल्योनांको
गंधबंधुकिसुगंधसुबसबको ५७ टीका अनंगकेअंगको
अंगराग अथ चौर लीने ल अरुनोदयराओवमेअं
गरागअनुराग रूपरुचिररतिराजनसुबसबुराग क
न केसोदासरागरागिनीनिकोकिअनुरागकिधोंद्विजमेव
नेहसंधामलोमोरको अरुनरदनवहुवदनमदनकिधों
वहहौमलकेकुलकनचहुंओरकी किधोंमायामृगनको
मननिकोचाकवचोरैलोनचितचालजेरेचितचोरकी लाग
रह्योअनुरागकिधोंनाहहेनैननिकोंकिधोंरुचिरानीमेरेतरुनी
नवोरकी ५८ रस वर्ण रसमाकोमलवरन्नीरेकोविद

अमलअमोल केसवदेवीरसनिकौसरससिंकनदुबोल
९० क॰ त्त्र टेषतहीं आधो पलवा धी जातवा धा सवरा धाजू
कौ वसनाम सरूपकासीतानीहैं अरुछी अरुछी वातनकौजन
नी सी राजत है रसिनिकी देवी कि थोंपचिपहचानीहैं केसे
दास सकल सुवासकी सेजा कि थों सकल सुजान ताकौ सषी
सुषदानीहैं कि थों सुषकै जेमें सकति कोजो सेवेहैं जसवि
ताकौ छवि ताकौ कविता निधानीहैं ९१ सु॰ ग॰ वीनी
लौनें वानी वीना वैनु अलि सुक पिक किंनर गोन सोभन
सुभ सब अंगमय केसवदास बषान ९२ कु॰ त्त्र कोमकीडु
हाई कि सुहाई सषी माधुरी कौ दरा के मंदिर कौ गोई उपजन हैं

सुरनकीसोंदरी किमोदकी सहोदरी कि चातुरी की मातुरो सी कातन
सजतिहैं रागराजधानी अनुरागन की ठकुरानी मोहै रुचि रानी
के सोको कि लाल जातिहैं ऐरी मेरी व्रजरानी तेरी वरबानी कि धों
बानी हंकी बीनी सुख मुख में बजतिहैं ६२ टीका कामकी दु
हाई इह कि माधुरी अैसी कांहूकी नांही कोऊ माधुरी को गर्व मति
कीजो सुरनकी सोंदरी कि मोदकी सहोदरी है कहा मोदकी
नाइका है सत्व माअंगी वांनी रागकी जो रजधानी है कहा
रागजामें वसतु है केसी रजधानी जो जो अनुरागनकी ठ
कुरानी है मूल घक लव नं मुकरवंधुकपोलसम के
सवदास प्रमांन नासिका तिलप्रसनन नीरससमसुकना

158A

सिकासमान ६४ कवि किधोंहरिमनोरथरथकीसपथम
मिमीनरथमनहूंकीमतिनसकत छै किधोंरूपमपतिकीप्रस
नरुचिरनचिमिलीम्रगलोचनमरीचकामरी बहें किधोंम्र
त्तिकुंडलमकरसरकेसोरामचितएतेंचितचकचोंधकेचलतहें
गोरेगोरेगोलअतिअमलअमोलतिरेललितकपोलकिधोंमे
नकेमकरहे ६५ म्रग नाभि वर्णं केसवसवासस्वास
सिद्धनकीग्रहाकिधोंपरमप्रसिद्धिसभसोभतसुवासिका
किधोंमनसिजमनिमीनकीकुवेनीकिधोंकुंदनकीसीवलोम
लोचनविलोहिका मुकतालललितनपुरीलालितमुकंदर:
कीकिधोंसुरसेइजतिकासीकीप्रकासिका त्रिमभुग्रनरूपनो

कवि
प्रि १५९

159

कोऊं गजतोरनि घनां केतोरकौ तरंग कतरनी तेरी नासिका ६६ टी
कोऊं गजतोरनि घनां केतोरकौ तरंग कजरनी तेरी नासिका कहें कान्ह कासखी
कासीकों सुर सेवत हैं याहूं कौ सुर नासिका कहैं कान्ह सखी
हें कासी इह मूल कमु वर्ग के सव आनंद कंद फल सुधा
मुंद मकरंद मन पतंग कों दीप गुनन कमो तीज गवंद क
कै सोहास सकल सुवास को निवास इह किधों आरविंद माहि कुंद
मकरंद कौ किधों चंद मंडल में सोहत अमृत रस किधों गोद
चंद की बेले सुतन्न चंद को गहे रूप गुन कामद दिन दिन हूं नो
किधों सचत है चंद फल आनंद के कंद को नाक नायका न
हूं तेनी कौ नक मोती नाक मोन मन नरगर हयो है नंदन को
टीका नाकनायक रंद्र नाक नाइक मद्धगति नतेंनी की स

सदाविराजेहैं म्रल घलो नव नं लोचनचारचकोर
समचानकुंदसुरंग अंजनजुतअलिमीनसरषंजनकंज
तुरंग ६९ क त्र पियमनहृताकिधोंपेमरथसजाकिधोंम
मरअमृताकिरसवासकेसुरंगहे चितवनचहंओचितचोर
चोरिमुषचंदकेचकोरकिधोंकेसवकुरंगहै वानमदभंजनकिधों
लवेकोंषंजनकिरंजनकुमरकामदेवकेतुरंगहैं सोभासरली
नमीनकुवलयभीननलिननवीनकिधोंनेनवहुरंगहैं ७० ही
का पियकेमनकोंलेआवेहैयातेंहृताहै जिसेमनकोंप्रेमहोइतातें
ईदेषैहै जोप्रेमकोजनओरलेजातहै सबकोईजानेंकिइतेप्रेमआ
या यातेंप्रेमकेरथकोहृतहै सारथीहैं वपकीसुगंधकेभमरहै

कवि
प्रि १५९

159

कोउं गजोइ निधनां के तोर की तरंग करत ली तेरी नासिका ॥ ६६ ॥ टी
का सीको स्वर सेवत है याहू को स्वर नासिका कहै है काप्रकास की
हैं कासी इह स्वल कमु वर्ग के सब आंनंद कंद फल सुधा
बुंद मकरंद मन पतंग को दीप गुनन को मोती जग वंद कै म
के मोहास सकल सुवास को निवास इह कि धों अरविंद माहि बुंद
मकरंद को कि धों चंद मंडल मै सोहत अम्रत सुधर कि धों गोविंद
चंद की येले सुतां चंद को बाढे रूप गुन काम दिन दिन हू नो
कि धो स्वच्छ तन है चंद फल आंनंद के कंद को नाक नायका न
हू नैनी कौ नक मोती नाक मो न मन जरगर ह्यो है नंद नंको
टीका नाक नायक इंद्र नाक नाइक मुझ्याति न नैनी की

159A

...नमामीये मानोवामदेव
...नमामीये

सदाविराजे हैं मन ...
समचानलक...
तुरंग १५ ...

क वि
प्रि १६०
160

मुषचंदके चकोर ह्वै है कुरंग ह्वै है सोभासरमें मीन है किनालिन
हैं अहुनकों कुवलयरस भीने हैं कुवलय मंडलमें रोई रसभी
ने हैं विरोधाभास करि जानीये अथ जन ऐन हरा वियाति
सिंगार सललित मसरे पानक जाल मनरंजन अंजन सबे वरसा
है कविराज यथा कवित्त किधों रसराज रसरीति अमित किधौ
ललित विलास विष विष बलित सुभालके किधों जगजीवनके को राजार
ति नाथ हाथ पवाहन कुमारके सोदास चलचालके ह्वन याल पा
लकि चित चोरिकों जमें देषनें द लाल लाल करे कालके लागि रहे
लोकलाज षंजन नयन किधों पिय मनरंजन कि षंजन हैं बालके ॥
सग अथ कुटी ऐने भृकुटि कुटिल लता धनुष रेषा यथा

अन्य के सोहासहयासममवरिनअवनकरिछूप कवि यथा
किधौ लागी पंकज के अंकपंकलीक किधौं केसवसयंक अंकअंकि
तसुभायके यंत्र है सहगको कि मंत्र है अनुरागको कि मंत्रन
को बीज अधऊरध सुभायको आसन सिंगार को कि काम को
सरासन है सासन लिख्यो है प्रेमपरन प्रभायको रोषरूपवेष
विषपियूषवि सेषमयभामनी की मोहै किधौं मोन हारु भायको
७४ टीका मंत्रबीजऐसो लिख्यो विन अधऊरध अंग ऊरध
रेफसो तासु तर विनमऋज्यों छविसंग ७५ अथ वन हैं ने
राग रवनभाजनमवनसो मनअवनपवित्र केसवसोचन
लाजकेमनके मंत्रीमित्र ७६ कवि यथा रागनके आक

क वि
प्र १६१
161

तिवैरागकेविभागकरमंत्रकेमंडारगृहरूपकेरवनहैं ग्यानकेबि
वरकिधोंतनकतनकतनकनककचोराहरिरसस्रुचवनहै स्रु
तनिकेरूपकिधोंमनकेसुमित्ररूपरूपकिधोंकेसोदासरूपभू
पकेभवनहैं लाजकेनयनकिधोंनयनसचिवकिधोंनयनक
टाछसरलछकस्रवनहैं ७७ टीका रागनिकोग्राकरजुपि
यतिनमेंकहुविराग होइहूरितनहिकरतपियपजुकहूंलवैंस्रुतिभा
ग ७८ कणी बन एीनं हरा मनुमनिमयटेकजुगल
नलछिपरमान तरलतरनिचलचक्रसेकेसवकुरामस
मान ७९ क त्र पहरेंकरनमूलदेखीहेकुमररोकसुनहु
कुमरकान्हसोभासबदामीये जिनकेतनकीजोतिजीतेजोत

161A

वंतसबकेसबअंनंतनगनिकेसेऊरआनीये मानोबामबेव
जूकेवैरकामदेवसांधेसरमाघनानिछूलछिऊनमानीये
उहंदिसउहूमजमकुटीकमांनतांननयनकटाछवानवे
धतनजांनीये ८० षुटि वर्ण हरा चलदलदलसीतीत
रीतनुपताकमनिमीन सरसकरसआकासकेसोमनदीपनवी
न क त्र षुटिलाबचितमनिमोहिनवनिकवनेकनिकलस
रचकाचिररवनहैंतनकतनकजननीतुरीतरलगतिमनहपतो
कपीतपीडतयवनहे कालिंद्रीकेकलकलजातजलकेलकहं
कातिहिहीसराहेमेरेकालीकेदवनहे केसोदससुंदरआव
नहूजसुंदरीकेमानमनभांमतेकेभांवतेमवनहे ८२ माल

क वि
प्रि १६२
162

ऐने हरा कनकपटिकासमकह्योकेसवबलिजनलिलार
सोभसोभाकीसभाअर्धचंद्रकाचारु घा वि केसवअसोकाकि
धौंसुंदरसिंगारलोककनिककेदारकिधौंआनंदकेकंदको सो
भाकोसभाउकिधौंप्रभाकोप्रभाउदेखिमोहेहरिराजसभीनंदन
सनंदको चमकनचारुरुचिगंगाकोपुलिनकिधौंचकचौं
धिचितमनमंदहंअमंदको सेजहेसुहागकीकिभागकीसभ
सुभगभामिनीकोभालकिधौंभागचारचंदको ८४ अल क
ऐने हरा अलिकचिलकसोंवरनीएस्यामलअमलसुपास
अतिचंचलअरुचारुअजितसुछिमकेसवदास ८८ डारडोर
डगडीडगुननमरिपुजमनाजानिजायामायाकामकीकायकु

सलवंान ८९ यथा विज्ञ केसवकसाकि धोंअनंगकीसु
रंगभूमलोचनकुरंगनकीवाचालहटकतहे पियमनपासि
वेकोंपासीसीकसारीकिधोंअपमाकोंमेरीमतिभवभटकतिहे त
रनजानजातीरजोरानाथसाथकिधोंहाथपरीतमकीतरुनिम
टकतिहें ऊनिलोललोचननवलनेहनिधमकीअलिकाकि
अलकअलकलटिकतहे ९० टीक कसाचावुकीनेहनि
कीनिधिजामेंनेहसोहें मूल बव नंदो रा अमलसु
करसोवरनीयेकोमलकमलसमांन अकसंकितमुखवर
नीयेचारुचंदपरमांन ९१ क त ग्रहनमेंकीनोंगेहसु
रतीमेंदीनोंदेहसिवसोंकीयोसनेहजग्पाभूजचारसोहें गये

नैमैंतप्योत्तपकेसोदासबपुमासमासमुतिगासोहै उडगनईसहि
जईसश्रोषरीसभयोजघपजगनईसमुधासोमुधासोहै ॥स्तुति
नेदनंदप्यारीतेरेमुखचंदसमचंदयेनभयोकोटिछंदकरिहा
सोहै सूर केस सब नं मोरचोरमेवारनमजमुनाकोजे
लमेह मोरपत्रसमवरनीयकेसबकेसबनेह क ज को
मलभ्रमलचलचीकनेचिलकचारुचित्तजोएतेचिततचकचौंध
तकेसोदास सुनहुछबीलीराधाछूटेतेंछुवेछबानिका
रेसटकारेहैंसुभावहीसदासुवास सुनकेप्रकासजपहास
निसिवासरकोकीनोहैसुकेसीवपुवासजाकेप्रकास जयेप
प्रनेककेचंदसापमोरपछुतजूजीत्योरोकचंदमुखरखतेरेकेस

163A

पास ५४ पाटी लिने सीसपमांगविधोंऊठीकिधोंग्रनछटाकि
धोंके सोरामछनचेरिवेकीपाटीहैं नसिनमरनालनैननतिन
परवधीकिधोंमरकतमननिमयूखनीकीटाटीहैं तकयासें
टिक वेठी पीठकी चपेटपरीवेठीमनोफनफनकोफनपाटीहैं
पोंछपोंछकरनलपोंछिपोंछिछोटिमाशेपाटीकिधोंकाम
विद्यापहिवेकीपाटीहैं ५५ मांग लिने क त्र जसभ्रुनरा
गेरवसंदूरसिंगारमेंकिसूरसोमकरतमतेंजगपवलमें कि
धोंमिरागंगाजूकीसूरनकीएरीजोतिनिकसचलीहैमिलजम
नाकेजलमें स्यामलसुमिलसुभपाटिनमेंवारमांगिश्रुन
नजलजदलसोंभेपलपलमें मांन्रकेसोरायरत्रेरूपज्या

कवि
प्रि १६४
164

रूपहीकीकसौकेसोदामलीकदसोटीअमलमें ५६ वेनी ऐ
ने हरा ऐसीवेनीवरनीयेकेसवदासवनाय असनिसजमुनोधा
रअहिअलिअवसोसुषपाय यथा चंदनचहुंईचारकुंकुम
लगायपाछेकिधोंनिसिनायनिसिनेहसोडराईहें किधोंवसी
वेदनछिरकछीरसोंपनेसमीपसुधानिधसुधासोंधिलेए
नअंईहें किधोंरसराजरसमिलअनुरागरसकेसोदासहा
सरसधाराधरधाईहें मिलमालतीकीमालालालडोरीगु
हीवेनीपिकवेनीकीत्रिवेनीसीबनाईहे ५८ सीस लव
ने मांगफूलसिरमलसुभवेनीफूलवनाऊ रूपमसपजस
जोतिजनसूरजप्रगटप्रभाऊ ५९ क त्र किधोंस्यांमघन

164A

मेंप्रकासहेप्रभाकरकौकिधोंअधिआरीनिसमधआभाइंदुकी कि
धोंअरगिरिकेसिखरपरवासकीनोजमनाकेजलवीचकांईअरविं
दकी कालीकेकपालपरकैसोकोपदमपांऊपंन्नगकेमाथेकि
धोंमनहेंफनिंदकी तेरेसीससीसफूलएसीसोभादेतआसी
माननीकेपायपरिमरतगोविंदकी १०० वेनी रोमः यथा
वेनीवरनतसकलकविकेसवललितलिलार भागसुहाग
नरेससमरविसालिजउदितउदार क ग्र वेनीयिककेनोकी
त्रिवेनीसीवनाइग्रहीकुंकमकुसमरचिलोचननिपोहीए
केसोदासपेलरहीफूलसीसफूलडुतिफूल्योजनमनमेरो
न्याइहरिमोहीये विंदाजगमतजराउजरो जांकीजोतिजी

नेहें अजीत अपमान आन तोहिये मानो रतन पाऊं देनि पांऊ धरआ
आरो दोऊ सोहत सुहाग सिर भाग भाल सोहिये सिर ॥ अथ वर्न
ने मांग फूल सिरफूल सब बेनी फूल बनाव रूप अरूप जगत जो
नेजन्तु सुरज प्रगट प्रभाव मोतिन की सर सीस पर सोभित है
रहि भांति चारु चंद्रमा की चमू उडुन मराल की पांत ॥ ५०२
अथ गवा वर्ण सहज सुवास सरीर की कांकर्षन विधि जान
अति अदिष्ट गति हरति काढ दृष्ट दैवत मानि यथा कमल व
दन कर चरन नयन कुच कस्तूर कुरंगमद कलहुन वास है
भृकुटी कुटिलक चमे चक्र सुगंध मय कुंद कलिका से दंत चंद्र
न सोहा सहे कुंकम सरीर कुमकुमान सो स्वेद नीर अंबर सोके

सोहास अंबर विलास हैं मन करषन विधि कि धोंड रहे दे वनाम्र
दिसुगगाति हूनीका किस हजे सुवास हैं १०४ वस वर्ण देह वस
न सहै ली सिद्धि सम कायामायाभाऊ सो मास भग सुहाव आलि
लाज साज को आज वर्णन क त्र कि धोंरहके सव सिंगारकी
सिद्धि कि धों भागकी है लीकि सुहाग को सुहाज है जोवनकी जा
या कि धों माया मनमोहिवे की कायाकि धों लाज की कि लाज ही
को आज हैं लाव लाव भांतिन के पिय हीय के अभिलाष पहरें वना
रकि धों सोभाको सुभाउ है सारी जरकसी जगमगात सरीरसव
मसनजराऊंही की जोति कोजरहि १०६ सर्व अंग वर्णन ह
रसि प्रिया विशे चंद को सोभाग माल मकुटी कमां न अैसी

मेंनके सेपेनेंसरनेंनननेविलासहें नासिकासरोजगंधवाहसेसुगंध
वाहुरासोसेंदसनकेसोवीजुरीसोहासुहे भाइरोसीग्रीवाभुजपान
सोउदरअरपंकजसेपाउगतिहंसकीसीजासुहे देषीहेगुपालोए
[illegible] देवतासीमानसोसरीरसबसोषेकीसीवासुहे
वीजुरीकीसोचमककहासीयामें लाजकोभाउअरुअंग
मेंनके यांमेंकामजान्यो कामअरुलाजयोंतेमध्या
रूढजोवनाएरनजोवनतोकह्योकवित्तमें किजवजो
हें तवहीअंगनीकेवनजातहे भावातमनकोइहअ
नहीकहतुसषीनाइकाकीस्तुतिकेरेंजातिहें तहा
वित्तमेंसवनायककेवचनहें किहमारेंएकनायकाे

166A देषीहे जवसुयीनकह्यो देषीहिण्प्पा लहेरूपा लमेंदेषीहें वह
[illegible] कहीनेले [illegible]
[illegible] रहे वेदकोसोभागमा सरहत्योर [illegible] रूपनाहे वें
[illegible] वाचकभागधर्मभालरूपमेय भागकोकोऊ केहें व
[illegible] इहजयमानाहीहें नाहेंभागुकेकहिवेतेंअहींकार
[illegible] भासति सोअहींकारकोभाजमोंलमेंहे यांतें धर्महीहे
[illegible] कमानऐसेंइहधर्म [illegible] कुटीजपमेयकमानऊपमा
[illegible] चक धर्मटेहीइहनही मेंनकेसेमेंनेंसरइहप्रणें
[illegible] न के सर पेने सेनेंननिविलासचारुोमरो ऐसेंसव
[illegible] परसोंपमाजीनीये भेरआरालंकारहेंहेंसषीकेवचनतें

मैंनकेसेपनैंमरनैंनननै विलासहैं नासिकासरोजगंधवाहसेसुगंध
वाहुदासोसेदसनकेसोवीजुरीसोहासहै भाउरोसीग्रीवाभुजपान
सोउदरअरपंकजसेपाउगतिहंसकीसीजासुहै देखीहैगुपालए
कगोपिकामेंदेवतासीसानसोसरीरसवसोधेकीसीवासुहै १०७
वीजुरीकीसीचमककहंसीयामें लाजकोभाजअरुअंगपेनैंसर
मैंनके यामेंकामजान्यो कामअरुलाजयोंतेमध्या प्र आ
रूढजोवनाएरनजोवनतोकह्योकवित्तमें किजवजोवनआवत
हैं तवहीअंगनीकेवनजातहै भावतमनकोउछाहरनमें
नहीकहउसखीनाइकाकीस्तुतिकरैंजातिहैं तहा उर याके
वित्तमेंसवनायककेवचनहैं किहमारैंएकनायकाएसीहैं सोतें

166A

देषीहे नवसषीनिकह्यो देषीहे ग्वालहे कपालमें देषीहे वह
एकगोपिकाहे वासीहूसरीनाही कहेते सोनो औरसगंधरीसीहे
उपमालंकारहे चंद्रकोसोभागभालइहतोपूरणोउपमाहे चंद्र
उपमानसोवाचकभागधर्मभालउपमेय भागकोकोऊकहेंवे
द्रकोभागइहउपमानाहीहें ताहांभागुकेकहिवेतेंअहीकार
कोभाउभासति सोअहीकारकोभाउभालमेंहे यांतेंधर्महीहे
स्पष्टीकमानऐसेइहधर्मलुप्ताभ्रकुटीउपमेयकमानउपमा
नऐसीवाचक धर्मटेहीइहनही मेंनकेसेमेंनेंसरइहपूर्णो
पमा मेंन के सर पेने सेनेंननिविलासचारयोभए ऐसेंसव
ठौरलोप्तापूर्णोपमाजानीये औरउपमालंकारहेंहेसषीकेवचनतें

कवि
प्रि १९

167

मूल ग्रंथ वैत्र मन लीनं विछियाअनोटवाक चुरीजे
राजजरीजेहर छवीली छुद्र घंटका की जालिका मुंदरी उदार
पोंचीकंकन वलयानीके कंठ कंठमाल हार पहिरें गुपालिका
वेनीफूलसीसफूलमांगफूलकर्णफूल त्रुटि लाति लक नकमो
ती वन्योवालिका केसोदास नीलवास जोतिजगिमगि रही देह
धरें देविपति मान्त दीपमालका १०८ अंग तिव नेदेरा
केचनकिंजन केतु की चपलाचंपक चारकमलको मगोरोचना
तियतनदुतिअवतार स या राधाके अंगगगुराई सी ओरगुराई
विरंचवनाइनिसीनी केमनवुद्धि विवेक सुरोक अनेककविचारनो
मेहगईनो वानिकजेसीवनीनवनावजके सवके सहहे गई झीनी

167A

सोनकेसरिकुंदनकेतुकीचंपककेदलदामिनीकीसी ११० सुगम है

पु मर्जि एंनं चंद्रकलाउडदामिनीकनककसलाका देखि

दीपसिखाओवदिलजामासावालालेखि यथा तारासीकान्ह

तेरेअंगनसंगअचंद्रकलानिसिचंद्रकलासी दामिनीसीद्युनस्यां

मससीपसनेतनस्यामतमालतासी सोनेकीसीकसीहूरसि

रीतिंमिलिंऊरहारविहारप्रभासी अधिकीओपदिसीकहिकेसव

कांमकेधामेंदीपसिखासी ११२ टीका रठा अपनेजोहेसंग

सुकहतनरायनरूपहें ताहांतारासीअंगनिजसखियनमेंजो

जोलसें ११३ चंद्रकलारहतीयानिसिमेंचंद्रकलाहिज्योंविरह

आधिज्योंहीदाओअधिसीतिहिंहितमें छ प महिमोहन

मोहनीरूपमहिमारविस्तरी मदनमत्रकिसिद्धिप्रेमकीपद्धि
नपरीजीवनमूरिविचित्रकिधोंजगजीवमित्रकी किधोंचि
तकीहरनीभीनअभिलाषविचित्रकी कहिकेसवपरमानंदकी
आनंदसकतिकिधोंवरनि आधाररूपमवधरनकोरा
धाहजवाधाहरन ११५ गति लीन हरा राजहंसकलहं
ससमअतिगतिमंदविलास मोहांमतिगजराजसीवरनह
केसवदासक नु किधोंगजगमननकोराजुहहेअंकुस
सीचरनविलासनिकोंआरसमसजातिहें किधोराजहंसनको
संकासक केसोदासकिधोंकलहंसनकीलाजलगतिहें व
लितअंगनगनहलतलिननसिंगारवेलिसफलीहावभावफूलफ

168A

ललनिफलतिहें किधोंनंदलालललोचनकीअंबलकितेरीलो
लवलीअंखलोलअतिगतिहे ११७ दरा इहविधवरनहुंसेक
कविअधरलछविअगअंग कहीजथामतिजीवजडकेसव
पायप्रसंग ११८ सु म इति घरि वर्न जम लंकार
अवयेतसवयेतअरुजमकवरिनकरिहेत अवयेत
विनअंतरहिअंतरसोसवयेत ११९ अथ तय आ
दि दल क सजनीसजनीदरनिरखहरिबनचतहरामो
र पियपियचातकरटतचितचितवहपियकीओर १२०
अर्थ हेसजनीसजजोहेनीरजकीताहिदेखि मल हि
ति पद मक मानकरतिसखीकोंनसोहरिरेहरितस्या

कवि
प्रि १६६

169

हि मानभेदकोमन लहेनाहि हिरे बचित चाहि २१ अर्थ मानको
नेसों कराहिहरिते कहा मानकोहरि हरकरि क्योंकिहरिसें
तोहरिहीहैं हरिनहैंभेदनहीजातेंमानहरि मति यथ
जम सोभासोभितअंगननिहयहीसतहयसार वारनवा
रनगुंजरतिविनुदीनेसंसार २२ टीका विनदीनेसंसा
रमेंकछूपैयतनाहि सोभासोभितअंगननिअंगनमेंसभा
नसोभविनदीने देहपदसबठोरलाग्यौन देहरी दीपक
हैनहयहीसेंहयसार औरबरनहूंबारनमेंनगुंजरैयो
जानीये चाउ दत्त कहो रा राधाकेसबकुमरकीबाध
हरहप्रवीन नेकसुनावहुकररूपासोमनवीननवीन

१२३ अर्थ सोभनसोभावानवीननवीन अथ घंत मक
हरिकेहरिकेवलमनहिसनह्वषभानकुमार गावहुकोम
लमतिकहैस्थवकुरमार टीका स्थवकरताकरमारहैगावहुक
रकेतालगायवेके मत्रि रात्रि मक हरा सारससारस
नेनसुनिचंद्रचंद्रमुषदेषि सुतिरमनीरमनीयनरताकेह
रिमुषलेषि २५ अर्थ हेसारससारसनैनी कहासहितास
रसहै सारससेनेनजाकेसोसुनि कहाचंद्रकोहैचंद्रमुषी
तेहदेषि हेरमनीरमनीयनरकहीये अतिसुंदरचंद्रसोहरि
मुषलेषि मल अलिनीअलिनीबसबसंप्रति
तरवरनिपंगा सोमममथमनमथनिहरिवसेराधिकासंग

कवि
प्रि १७०
170

१२६ ग्रथ अलिनीसखीरीसंबोधनपरछिभाषा अलिनी
रजमेंजेसेंवसेहें अरुप्रतिजेसेपछीवसेहै त्योंराधाका सं
गहरवसेहें केसेहैंहरिमनमथकेमनमथनहें हिनी त्रि
तीय दजे कदो रा आपुमनावतप्रानपतिमानिनिमनि
निहार परमसुजानसुजानहरिअपनेचितविचार २७
टीक हेमानिनीमानिनिहारिदेखि वेसुजानचतुरहें
सुजानतें मूल तीय तुर्थ दजे क जिमहरिजोय
कोमनहरसोवामवामहगचाहि मनसावाचाकर्मनाहरि
वनितावनताहि १२८ टीका वामसुंदरवामकुटिलऐसें
नेत्रनिसोंमनहरसोहैवनितानिकेताहिहरिलेह मूल

१७०

170A

उत्त दू मक आजु छबीली छूवि वनी छाडि छलनके संग
मिलै नमानि ज्जरनि कर ज्जर के सव के सव अंग २९ अर्थ हे जर
नि जरनि के [illegible]मि लो ज्जरनि केर हत्त सम्हू हकों नसों मिलाके
सव के सव अंगनि सों मिलों मूल प्रथम यच धंप
जक परमानंद परमानंद हिदे खतिवन उपकंठ रहअव
लाअवला गिहैं मन हहि हरि के कंठ १३० अर्थ परमानंद
सो परमानंद हि हिरि तिनको देखतिहैं यातें रहअवला अवला
गै गी मन कों हरि के हरि के कंठ में मूल प्रथ द्वित च
तु पद मक देख प्रवाल प्रवाल हरि मन म[illegible]म घरसभी
नि खेलन वह संदर गई गिरि संदरी दरीन १३१ टीका

कं॰ १७१ 171

टीका वहप्रकर्षवाल देषि द्दरिजू हेमवालवालकतिमेघ न
कौ देषिकें मन मनधर मभीनी ह्वै कें बेल नगाई गिरि है गिरि
है प्रहारी तिनकी दरीन में गई है हे सुंदरि सेवो यन मूल पदज
मक जूझिगयो संग्राम में सूरज सूरज देषि दिवरमना रमनी
करी मूरति रति सम लेषि ३२ अर्थ संग्राम में जूझिगयो जु सूर
मो सूरज कों देषि के दिवकी रमनी अस्त्री जाय रमनी करी मूल
चत्रपाद जमक नहीं उरवसी उरवसी मदन मदन वस भक्त ॥
सुरतरवर तरवर तजे नंदनंद आसक्त ३३ अर्थ मदन के मद
न के नहीं वस वे भक्त अरु सुरतरुवर के तरवर तजें असे हैं नं
दनंद के जे आसक्त हैं ३ तीअव्यपित सब्यपेत लछन दोहा
अव्यपेत जमक निसदा वरन हू इहविधि जानि करो सव्यपेत विव १७१

लनोंजमकनिकीसुषदानि ३४ प्रथमतृतीयपदजमक माध
वनोसोंमाधवराधिकापावहूकाह्नकुमार पूरिऊमाधवनेमसोंगिरि
जांकोभरतार ३५ टीका लसीयवकरिनोलहोंधवराधिका
जेभ्राहि काह्नकुमारजनेमसिवपूजेमाधवबाहि ३६ अ
र्थ माधववैसाषमे मूल प्रथमचतुपदजमक सीपल्लयव
रमोमजितिवनिन्ननदेषैराम. तादिन तेंउनिसषिनसवतजे
सुयवरधाम ३७ अर्थ सुपंथ्रापुहीवरयामतजे मूलसि
हाविलोकनजमक पापनसतजोकहतहीरामचंदूअवनी
प नीपप्रफुल्लतदेषिज्योंविरहीविरहसमीप ३८ टीका के
सेंपापनसतहेजेसेंविहगनिकोविरहजानहेनीपजहेकदंब

प्रफुल्लितजाकेपाससमीपत्ताईदेखिप्रापनी मूल तीय नृप
ज क। जैसेंहुलसैंचंद्रमाकमलाकरविसाल तैसेंहीसब
साधुसुखकमलाकरउदास स म मृगी चतु दज क प
रमतनतिजोसोभियेपरमेस्वरअरगंध कल्पलताएसेंलसें
कल्पहरुकेसंग १४० प्रथ तती पंच पद मक अं
गदेसमेंसोभियेलक्ष्मीलक्ष्मसरूप अंगनमेंजैसेंलसेंअंगना
निकेरूप १४१ टीका अंगदेसविसुकेताहअमलाताभंरा
तमीलक्ष्मीसरूपसेंयेलक्षिहेंहें अंगनिमेंजैसेंअंगनालसें मूल
पथ हितो तीय दज क दांनदेतजोसोभियेदानेरजनके
हाथ दांनसहितज्यौंराजहींमतगजिनकेमाथ १४२ दांन

रतनदगजादानगजमत्त ४२ वाउ दज क नरलोकहिराषतसदा
नरपतिश्रीरघुनाथ नरनिवारननामजगनरवानरकेनाथ ४३
अर्थ हेनरअर्जुनलोकनिराषतहेंश्रीरघुनाथ सदानपतित
हीहें केवलनरपतिभूमिपतिहीरकारकोअर्थभूमिऊन्हेराजा
हीमतिजानेंनरकनिवारनहें नरवानरकेनाथहें मूल सब
करदुषकरमेहेंसुषकरवरनेजान जमसुनोकविराजअवडुकर
कहोवषानि १४४ यथा तुप ज क मानसरोवरआपनेमान
सचाहि मानसहरिकेमीतकोमानसवरनेंनाहि १४५ टीका क
हतहेंकियेसोंकोमानसमनुष्याहिये केसोहेवहमानसरोवरआ
पनेंमानगर्वकोनबूड्यारहेंसोईसमानसहेमहितमान आदरसों

कों

रसकहियेसुखनिनसहितमोदहै ओरमान सज्जुहैमन अनुमोह
रिकेमीतललिकोहै कहाकिहरिभक्तकों अपनोंमनदेचुके हैं तिन्हें
मानमवरनीये मूल रूप जस वरनीवरनीजाइकोंसुन
धरनीकेईस रामदेवनरदेवमनिदेवदेवजगदीस १४६ अर्थ
वरनीजोवृजललननिकीवरनीकीजेएजाविक्त मूल नृपा ज
क राजसगईसाहिजराजराजमनआन विषमविषधरअरु
रसरीतिषविषमतिजुरआनि १४७ टीका हेराजमनमेंतेमान
ऐसीवातेंसिवजमेहैं औरकोराखनी [illegible] विषम [illegible] रनमेंतोविष
ममतिजाने संगईसके राजराजकुवेरहै [illegible] पछनकोराजाजोजछु
तिआधीन करिवेकठिनहैंतातें राजराजमित्रकरिवेराजाहीमि

अनहीहोत केरिद्विजराजचंद्रमहांसीतस्वरूपअरुविषधरवोअ
रुविषधरसर्पराषिवोओरगंगाकोविषजुहेजलकोप्रवाहवेसनि
मेंराषिवो सववातेजनहीमेंवनिआवे मूल मान छंद प्र
मानमांननाचहीं अमानिमानराचहीं समानमानपावहीं
विमानमानधावहीं १४८ अर्थ मानकेप्रमानमेंहेनाचिवोजि
नकोमानटूटेनहीं अमानेमेंनहीरचतीहें कहांअनादरमें
रचतीनहीं जोआदरदेषेंतोरचें जोतेसववेसमानवरावर
मांनआदरपावतेहें केसीहेविमानकीहदमेंहे धायवोजिन
को ईहांमानसवृषस्थठोरभयो मूल कुमतीहारसंहार
हठहिताहारिनीप्रहारि कहांविसातिविहारवनहिरिमनुहारि

क वि
१७४

174

निहारि १४९ उहांहारिसवक्रप्रहठौरहें हिाहारिनीहृतीको
प्रहारिनीहृतीकेप्रहारदंडदेह मोद छंद जोतंहाथीनकद्ध
कहचालहि जोहोकहारेकवातलहि जोकहदेऊवनीवर्न
मालहि मोकहुजोमिलवेनंदलालहि १५० जेसेंरथेजश्रीक
रवालहि ज्योंअलिनीजलजातसनालहि ज्योंवरबावरथे
विनकालहि ज्योंहृगदेखोईचाहेगुपालहि १५१ टीका जे
सेंरोजेरोनीवसत्कोचाहेहेंजेसेहगामुपालजूकोचाहेहे चहेंस
हूसवठोरलगेपा जेपुरमरारोहेंजयमेंजोतकीवातमेंजदनारहें
जेसोमाबहूकीकोचाहतहेंवारवारस्त्रीमोमाअरुज्योंअलिसकी
नीसंभोधनपद्धिममाबाजेसेंरीतेसेंनी जेसेंभोराजलजातकोस

174A

सनाकहाजम्योजलमेंताकोचाहे अरुज्योवरषाकोंचाहेंकववरषे
बिन्दुवरषाकालहिकोंचाहेंहै ज्योंइगगोपालजूकोदेख्योचाहतु
हें इहतोअर्थ अवजमकहुसद्दारिहें अरुलहिलहिसद्यां
मेहेंतेजमकहे हरा ल हुंअरुनरकोसद्दहुभासेकविनामोंहि
इकसोसोऊजमकगतिअरुपासहुनांहि हरिरविमनिससिनिवान
इहभजिगोपालदयाल ऐअरुप्रसंगपरतिजहांकहेंजमकास
रसाल स या सुंदनुहांकतहेतजदछीदिनहूरकरेसवकेइ
खडूंदन छंदनुजांनीनहींजिनकीगतनामकहाखडेहेंनंदनंद
न फंदनुपंडकेपरजनकीरतिकादिकरेंमहिमोहनिकंदनु
चंदनुचेरीकेअंगचढावतदेवअदेवकहेंजगवंदनु अर्थ

हनुहनुसहजमकानसजानीये मूल पई सुरतरुवरमें रं
भावनी सुरतरंगिनीकरकिंन्नरी सुरतरंगिनीकरकिंन्नरी
टीका सुरतरवरकलहसमयरंभाकदलीकीवनी तामेंरंभा
वनीहें केसीहेवहरंभाअपसरासुरजुहेंखरतरकहीएअति
सयवरकहीये ओरहतोसुरअतिसयवरकहीये ओरहतामेंअ
सरारंभावनीहेंसोमेंहे अरुताठौरवहेसोमेंहे कोनकिन्नरका
लीकेसीहेसोसुरतरंगिनी करसुरतकीरंगनवारीहे करकि
रनजाकी अरुपेरवहकेसीहे किंन्नरीसुरतरंगिनी खरत
कीतरंसीरंभाकेलेकीवनीहे मूल हरा श्रीकंठउरवासकि
लसतसर्वमंगलामा श्रीकंठउरवासुकिलसतसर्वमंगलामा

175A

र ॥ अर्थ ॥ श्रीकंठसिवजिनकेउरवासुकिनागलसेहें केसेहेसर्व
मंगलहें अमारहेमाररहितहें अरुश्रीसोभासोकंठउरउर
मेंवासुकिपुष्पहारलसतहे कोनकेसबमंगलाके सर्वमं
गलाकोभमानीके औरमालकहामालसोऊलसतहें म-
ल. भूषनभूषनकेजसभूषनभूषनिअंगिनकेसबसोहें
ग्यानसपूरनपूरनकेपरिपूरनभावनिपूरितजोहें श्रीप
रमानंदकीपरमापरमानंदकीपरमाकहिकोहें पाकुरसीतउ
सीमतिकोंअवदातरसीतउरसीपतिसोहें १५५ अथ धू
जैअवदातउरसीहें अवदातहेंरसजिमेंनिर्मलरसमयहें के
सेहेंभूषनकेभूषनहें भूषनकोंहरकरेहे अरुभूषनउनकेअं

इंदुबदनुसहजनमकानुसजानीये मूल ८३
भावनी सुरतरंगिनीकरकिंनरी सुरतरंगिनीकरकिंनरी
टीका सुरतरवरकलहहंसमयरंभाकदलीकीवनी तामेंरंभा
वनीहें कैसीहेवहरंभाअपसरासुरजुहेंखरतरकहीएअति
सयवरकहीये औहतोसुरअतिसयवरकहीये औहतामेंअ
सरारंभावनीहेसोमेहे अरुताठौरवहेसोमेहे कोनकिंनरका
नीकेसीहेसोसुरतरंगिनी करसुरतकीरंगनवारीहे करकि
रनजाकी अनेपेरवहकेसीहे किंनरीसुरतरंगिनी खरत
कीतरंसीरंभाकेलेकीवनीहे मूल ८४ श्रीकंठउरवासकि
लसतसर्वमंगलामा श्रीकंठउरवासुकिलसतसर्वमंगलामा

कहीयेमाछ्वार।

नकेसबमगलोके सबेम

हैसोऊ त्वमगहे

नेश्रुगिनकेसबसो है

बनिपरि

नाकहिको

तसोहै

सजिमें

नउन

कवि
प्रि १७६

176

कहा सोहत हैं जससुषनजो मनिमें जोनीको जस है सोई आम
नहू की सुषहे न अंगनिनहीं तें अंगनोके सुषन की सुषइह
पुष्प केस वहें हें असे सोहत है ग्याननजो दृग करप्रवाहक
रि परिपूरन व्यापक तासो पूरनजु है भगवान तिन को जो
है देषत है अरु श्री परमानंद की है जु परमा कहा सोभा तामें
परहें तत्पर है लीन है अरु परमानंद प्रमान के देनहारे जे अ
पने प्रमान को वतायदे हैं तिनकी परमा श्रेष्ठ जु है मा लक्ष्मी
सो उनके मनें को है किह कांम है अरु पातुनकी जु सी सोभा सो
उरसी यदाई वरावर जिनकी मतिको असे सबदान उर
सीता छुउरसी पति कों मोहे है सुल हर रह विषम्रोरे

176A

जानियोउ:खरजमकअनेक वरननचित्रकवितअंलयहुलहि

नविवेक १५८ इति नाज सह राम रचि यांक प्रिया

कायां हज मचं कायां मका कार सांने नाम च

द प्रका १५ अथ चालं र रांने हरा केसवचित्रक

वितमेंवडनपरमविचित्र ताकेवुदकके कनहिवरननहो

सनिमित्र १ अथअरथविनविंदजआनरसहीनअपार वधि

रअंधगनअप्रमनकेगनेयतअगनविचारि २ केसवचित्रक

वित्रमेंइननेदोषमिदेष अक्षरमोटेपानरेववजयऐकेंले

नि ष २ अँरितिमतिगतिऐककरिवहविवेकजत्राचित्र ज्यों

नहोयक्रमभंगायोंवरनोंचित्रकवित्र टीका अथअरथ

कवि
प्रि १८८
177

जेसें कमैको क्रम कहियें रकार रकार मउत्पहे सो अयथ आवे विंडुवि
चार जेसें वरहें वरं आवे जोरो कहीहे मोट पातरे जेसें कुसलवसों
तांको कुसलवसों त्यांको कुसलवसुं जोरहा सों केसों कहीये
नहो कव नं पहतननलागे अधरसों अधरवरं सोमडि
अगारेकववर्णीनजि औरपवर्गीहि छंडि यथा लोकलीकलो
कलाजलीलतसेनंदलाललोचनलालितलोललीलाकेनिकै
तहें सोहनिकोसोचुनसकोचकोहुंलोकहुंकोदेसखपसखी
ताकोहूनेंडुवदेतहें केसोदासकान्हरकनैरहीकीकोरकसें
श्रृंगाररंगेरातेरंग अंतिअंतिसेतहें देवदेवहरिकीहरनताहरि
नैनेंनीदेखोनाहीदेखतदीहियाहारेलेहें ६ मात्रा हित को

१८८

177A

स्वर हु एकैस्वरजहांवरनीयेअद्भुतरूपअवरा कहीयेमाझार।
हितरहमित्रचित्रअभ्राभणै ७ यथा जगजगमगगनभगत।
जनरसवसभवयद्दरकरकरतअचरचर कनकवसनतनअ।
सनअनलवडवटदलवसनसजलथलकर अजरअमरअ।
जवरदवरनथनपरमथरमगनगमनसरनपर अमलकम।
लवरवदनसदनममसरिममसतमदमदनकदनहर ८ दी।
वि जिनकरजगमगमगेओभगवतवसभवभयभरहाथ।
चराचरकेरेंमांनि देमवतपटतनदावानलपानकीयोवटदल
वसेजवुजलमईजानि वरदेतवारेपगओजहांपरयमताहोई
गमनओसदनताहिवरदानि घरजसकेहैजिनहीकेसिकेसम

बहेरं यापमद कोमनासोहरहेवखानि ४ मदनोमईनेवा
थे मूल थोऐ चरा सब वर्ण ऐकआदिदेवणीवहवर
कोसहवनाय अपने अपनेवुधवलसुमुजनसवकविरा
य १. एका रादि चू गोगौगंगोगीअग्राश्रीधीद्रीभा
नु म. विश्वस्याघोहिहानोनासंमंमानु टी क ते थे
मुजसलीनीनकिनवानोविसुत्र इयारमावुद्धिलाजउरसो
भानुविनर्क अर्थआहि म. मपक्षीमध्यानवोमपतिवसुर
गहीयहसवदेनोगनितपुरबकलेमानचाहि मनबहेमा
सवहमानानसुमिहवेकेजानसवहरिरूपअवरनहो
आहि एकंकीवरनकेजेनामतेईदोहामधिप्रेमीजननाहां

178A

इहविस्तरूपसवेश्राहि मूल द्विन हय रमाऊमावा
नीलसाहहरिहरिविधिसंगवाम लमादयासीतासतीकीनीरा
मारंम टीका लमादयादुहूपजसीतासतीसोरामाकरीश्रीरामग
मूलः अदारशाहयथा श्रीधरम्हधरकेसिहाकेसवजगतप्रमान
माधवराघवकंसहाप्रूरनपुरषप्रमान ४ लगमः चतुदारशाहू
वि सीतानाथसेतनाथसमनाथरघुनाथजदुनाथब्रजनाथ
दीनानाथदेवगन देवदेवयलदेवविप्रदेववासदेववासदेव
दीनदेवदेवदेवदीनरति रनबीररघुबीरब्रजबीरवलबीरबीरकी
रजदुबीररामचंद्रचाहमति रामापतिरमापतिरामपतिरायापति
रमपतिरमापतिराजापतिराजपति २५ लगम अ प सा

वहैं यापमदकोमनमासोह रहे वखानि ९ मदनोमई नेपा
ये मूल थपे चरा सव वर्ण ऐकआदि देव एव हवर
नासहवनाय अपने अपने वुधवलसुमगजसवकविरा
य १. ऐका रादि चूा गोगोगंगोगीअआश्रीधीह्रीभा
नु म विश्वस्या द्योहिहानोनासंमंमान्तु ही क नै घे
नुजसगीतकिनवानीविसुत्र ह्मारमावुद्धिलाजउ रसो
भानुविजर्कअर्थआहि म मपक्षीम्हानव्योमपतिचसर
गहीयहमसवदेनो मानिजपुरवकस्यानवाहि मनखनेमा
सवदमातानन्सूमिहवैकेजानसवहरिरूपअवरनहो
जाहि ऐकहीवरनकेजेनामतेरईदोहामधिप्रयोजननाहां

178A

इह विस्वरूप सवे श्राहि मूल द्विज द्वय रमा उमा का
नीलसाह हरिहरि विधि संगवाम उमादया सीता सती कीनी रा
मा राम टीका उमादया दुहू प्रजसीता सती होरा मा करी श्रीराम॥
मूलः श्रवतरणह्यथा श्रीधर भूधर केसि हाके सव जगत प्रमान
माधव राघव केसव वामन पुरष प्रमान २४ स्रगमः चवतरणहू
वि सीतानाथ सेतनाथ रामनाथ रघुनाथ जदुनाथ व्रजनाथ
दीनानाथ देवगन देवदेव यदुदेव विप्रदेव वासुदेव वासुदेव
दीन देव देव देव दीन रति रनवीर रघुवीर व्रजवीर वलवीर वीर की
रजदुवीर रामचंद्र चाहमति रामापति रमापति रामपति रायापति
रसपति रमापति राजापति राजपति २५ स्रगम श्र ष सा

क वि
१७५ प्र
179

राखि हरा या ग्वाबरवंडि शानितुवे भाषावरनवनाऊ
एकएक घटि एकलजिकेशवदास सुभाउ ॥१६॥ ष
वि छप्र हरा चोरी माषन दूध छ्वै छूटत हठि
गोपाल डरो न जल थल भट कि फिरि छवि सोंऊ
चतुर गरत लाल ॥ पैं वी छ अघ बक सकट पूलेंवद
ति मारयौ गज चांडूर धनुष भंजि दिठ दौरि पुनकं
समथे मद मूर ९८ पं वी छ चोरी चंदन हाथ
लेरी रूच ढ गोगत विठल थित घर हिंमसितु
फूले वपु गंधिनमान ९९ ३ विं तर जैसें
तुम समजगरक्यो दियो कालके हाथ जैसें हठि

राम
९७८

179A

हुवकाटियेकरमफंदहदिहनाथ ।। २० ।। द्व सा
र हरिद्विढवलजोविंदविभुमायकसीतानाथ ।।
लोकपिविव्हलसंघधरगरुडध्वजरघुनाथ ।। २१
रा विं धर सुधीजनसुमतिनंदपुनिओरोगेकु
लनाथ ।। माखनचोरीकृतहरठपटेंकोनकेसाथ
२२ विं - त्य र यकेजउतसमुझाइसमनिपट
पुरानपुकार ।। मेरेचितवेचुमिरहेमधुवनमाखन
हार २३ रा न सा र ।। कोजानेंकोकहिगयो
राधासोंहरिवात कीनीमाखनचोरीछलउठ
तबरेभरमात २४ ष्र द ता ।। जतनजमा
योनंदनरफूलतनंदकुमार ।। षंडनकसकतजानहीं

नं ...
१८.
प्रि.
180

कपटकुठोरकुमार २५ स द ह ॥ बालापन
जोरसहरेवडेभए जिमचित्त तिंमकेसोहरिदेह
हूंजोनमिलोअवमित्त ॥ २६ ॥ दोउ हर तुमघर
घरमंडरामअवतिवलिमुकसेंनेदलाल ॥ जोकीमति
तुमसोंलगीकहाकरेंवहबाल ॥ २७ ॥ पं द ह
जोकाहूपैंवहसुनेछुंकतडोलतसोंऊ ॥ तोअववस
ववजरडहेंवाकेअसुमांऊ २८ च ·२· शा ग
हेकाहाकीदिनकरोहकाढकीअसरेन यामेंके
शवकोंनसुखघेरूकरेपिकवेन ॥ २९ त्र द
र कह्योपरायामेंसुन्योंमनदीनोंहरिहाथ ॥
तादिनतैंवनवनफिर्‍योकोजानेंकरहाथ ॥ ३०

राम.
१८.

180A हा- श्या २ काहूंवैरनकेकहेजीजुरिगयो
सनेह तोरेतेंटूटेंनहींकहाकरोंवलिलेह॥
३२ ए द ध चिंचुनिचुनैंअंगारउगलि
जाकोकरजिपजोर सोईजोजारेजियेकेसें
३२ जियैचकोर द ह लैवाकेमनमानक
हिकतकाहूकेजात जाकेहूंजियहेंतोकें
सीकीबात ३३ न ह नैननिनावोनेकेहूं
कमलनेंनकिननाथ वालिनकेमनमोहि
लेकीनेमनमथहाथ ३४ सुगमाति अभि
हार रामकांमसबसबकरेविबुधकांमसबसा

प.वि
१८०
प्रि॰
180

कपटकुठोरकुमार २५ स द ह ॥ बालापन
औरसहरे वडे भए जिमचित्त तिंमके होहरि देह
हूं जोन मिलो अब मित्त ॥ २६ बोउ हर तुंमघर
घरमंडराम अतिवलिभुक सें नेह लाल ॥ जोकीमति
तुमसों लगी कहा करें वह बाल ॥ २७ ॥ पं द ह
जो काहू पैं वह सुने छुंकत डोलत सांऊ ॥ तो अवस
व व्रजरहेहैं वाके अस मांऊ २८ च॰ २॰ शा र
हेका हाकी दिनकरो हकाठकी अरु रेन याभेंके
शवकोंन सुखघेरु करे पिकवेन ॥ २९ त्र द
र कह्यो परायो मैं सुन्यों मन दीनों हरि हाथ ॥
तादिन तें वनवन फिरयो कोजानें कहहाथ ॥ ३०

राम

दो- श्रा २ काहूंवैरनकेकहेजीजुरिसयो
सनेह तोरेतेंटूटेनेहीकहाकरोवलिलेफे,
३२ ए द ध चिंचुनिचुनेंज्ञगार
जाकोकरज्ञियजोर
३२ ज्ञियेचकोर द
ह्रिकतकाहूके
लीकीबात
कमलनें

कवि०
१८१
प्रि०
181

कमलनैंनकेनैंनसेनेंननकीनोकांम कोनकोनसें प्रेमके
मिलेन स्याम सकांम ॥ अर्थ ॥ कोनोंकांम कामसें कामसे दी
ध कांमरामवरवसकरैकैसोसीयाराम ॥३५॥ धिता हुव
अर्थ राधाजूकेसेहैं विबुधनिकेकांमहाधिकें तामें म
सबकांमवसकरे दूर्लीकरे जिन्हेंसो रामकोंकां व रा
मरूपजूहेसियनेंकेसमाराधिकेवसकरे ॥
मूलस द कांमनाहिनेंकांमकेसबमोहन
केकांम वसकीनेंमनसबनिकेकावामांका
वांम ३६ अथनाम पुरुष पं त वनमाली
वनमैंमिलेनलिनवींवनमाल नेंनमिलीमन
मनमिलीवेनानिमिलीनवाल सुगम अर्थ र
लगालगीलोयोलगीलगेलागुलेलाल ॥ गेल
गेलगेपीलगीपालागोगोपाल ३८ लगा

राम
१८१

181 A

लगीकरतहों करलोपतहों हममेंदेखिलगे
रहतहेलागुलेके ॥ मल व श र हरि
हीरारा हीहस्यो हरिरहीहीहारि ॥ हरिह
रिहाहाहारशें हरें हरें हरिरारि ॥ ४ ॥ ग्रथ
हेंहुतरनहरिसोंकहतवचनदीनतादारि ॥
हरिजुचंदहियममजुवहराहहस्योहरिरारि ॥
मल ॥ ए द जोजोगीजोगंगगंजीजेजीजी
जोज ॥ हरे हरे हरिरशेंहाहाहूहूहोहि ॥
टीका क ज जोसखरमजोजुमिताँमेंगी
जुवानइहेंजोजुजलगंगाकौजुताकीगजग

याजाहि ॥ जीमेजयवालीके औजीवनकौजीवबूं
लतामैंवहजोजिहोइकहामिलजाइताहि या
तेंभलेभलेजेहैंसाधुननिमांहिहरिरशेजेजा
जयाहुजेधर्वयहिसिखावाहि ॥ जंजाको
जुजलतांकीकरतप्रसंसाकोऊयाकोइहजे
रथसुजानिहेविवेकजाहि मूल ग्रं ई द
का २ केकीकेकाकीककाकाकोकाका
कोक लोललललोलैललीलालालीला
लोल अर्थ सिषवानीजिहिंकीककाकह
चकाईचकावाजु सुंदरपियसुंदरपियाचलि
लबिलीलाग्राज ४४ मूल ग्रं सं ली द

182 A

का र नोंनीनोंनीनिननोनेंनोनेंनेंन ॥
नानानिननानानिनेननननननेंन ॥
अर्थ भलीभलीलावन्यताभरुनयवधिवरनेंन वहन
नवहमुबजिहिसुहगनलछुनलच्युवडनेंन मूल कै
कीकूकोंकोककोंका कोकू कैकोक कोककूकिकोकीकु
कीकूकेकेकीकोक ४८ अर्थ मोरसुटेसोकोककोक
हिरकूकनकोक कोककहीकोकीसुपोकूकनकेकीको
क मूल हलौ काय ऊनरवरननवाहिरोवहलोप्रि
काहोय अंतरअंतरलापिकाइहजानननसवकोइ यथा
अरुकौंनविकल्पकोउवतीवसनकिंहअंग वलिरचा

वलिराजाकोनेंछरयोसुरपतिकेपरसंग वामन सुगम
अं र्ली का कोंनजातिसीतासतीदई कोनकहातत कोन
ग्रंथवरनीहरीरामायनग्रवदात सुगम अ्रथ हो रव
ने ऊत्तरजोकोंप्रतिहिसोजामेंकेसवदास तासोगूढोत्तरस
हिंवरनतबुद्धिविलास ५२ यथा नबतेंसिखलोंसबदेकेसिं
गारीसिंगारनकेसबऐकरच्यों पहराऐमनोहरहारहीयेंह
रिगातसमहसुगंधसच्यों दरसाइसिरीकरिदर्पनलेक
पिकुंजरज्यों वहुनाचनच्यों सखीपानखवावतहीकहका
रनकोपतियापरनारिरच्यों अर्थ यांमेंऊतरतोइहीपर
नाररच्यो तहां अ्र पांनखवावतहीकोपकेंारच्यो

183A

ऊ र पानपरिनारिकोंकहंभेजेहेंनायकनेसोपान देखतही
सुचिआईयहधुनिकढी मूल मच हासबिलासनिवा
ससुकेसवकेलिविधाननिधानहुनीमें देवरजेठपितास
तसोदरहेसबहीइहवातसुनीमें भाजनभोजनभूषन
भौनभरेजसपावनदेवधुनीमें कोंसवजामिनिरोवा
कामिनिकेतकरेसुमगानगुनीमें गहोजुकंतकरेसुभ
गान इह स्र च नाहनयोनिजनेहनयोपरनारिसोंके
सबकोंहहनजोवै रूपअनूपमभूपरभूपसोंआनंदरूप
नहीगुनगोवै भौनभरीसबसंपतिदंपतिश्रीपतिज्योंसुखसिं
धुमेंसोवे देवसोंदेवरप्रानसोएतसुकोंनदसासुधिनीजि

क वि
प्रि १८४
184

हिरोवै उज्जरनदसासुदती याजेरोवैं ऐसा कोउ ऐकही
उज्जरमेंजहांउज्जरगरुआसेक उज्जरयेकानेकरहवरनत
सहितविवेक ५६ उज्जरऐकसमसमेंव्यसत्रनेकनजान
औरअंगनकेवर्णसोंक्रमहींवर्णवखान यथा पै कहा
नसज्जनवुवतकहासुनिगोपीमोहित कहादासकोनाम
कवित्तमेंकहियतकोहित कोप्यारोजगमांहकहाछिनल
गेंआवत कोजासरकोकरत कहासंसारहभावत कहिक
हिदेखिकोयरकपतआदिअंतहेंकोसरनि रहउज्जरकेसव
दासदियसवेजगतसोभाधरन ४७ दो रा मिलिआदिके
केवर्णसोंकेसवकरउच्चार उज्जरव्यसतसमसतकोसाकरकी

अनुहार ॥ छ ॥ को सुभ अंतर कवन जु वनि जो धन वस कीनौ
विजय सिद्धि संग्राम रांम कहुं कोने दीनौ ॥ केसराज जदुवंस
वसन के संवसपुर ॥ वट सो कहीये कहा नाम जानहु अपने उर
कहि कोंन जननि जगजननि की कमलनैंन सू धम वरुनै
सुनि वेद पुरांनन में कही सनकादिक संकर तरुनि पुछि कै
लको है धरी धीर धीरज धर महित ॥ मारे कि हसुजा वलदेव
जोर जवसो ॥ जा वेक हाजग जगदीस पहि के सो रस कों नेंग
यो रामायन गीत सुभर वसों ॥ जस अंग अवदात जात वनन
तन सों कही ॥ कोंन कुंती माता वात नेह न वसों ॥ वाम ग्राम हु
रकरि देव कांम परिकरि मोहे रांम कोन संग्राम कुसल वसों

क वि
प्रि १८५
185

सु म ल ग ज क म ऊ र एकोएकत्तजिवर्णकोअनुगुरु
गवर्णवखानि उत्तरख्यालगणागणतहिएकसमस्वेहिजांनय
केहेरसकेसेलईलककाहेपीतिपटहोनकेसोदासकोनसोभी
येसभामेंजन भोगनकोभोगवतकोंनगनेंभावावतजीने
कोजतीनुकोंनहेप्रमाकेवरन कोनेंसभाकोनजुवतीश्र
जीतजगगावेकहावुनीकाहेभरेंहेंभुजंगगन काहेमो
हैम्रगकहांकरेंनपीनपडेंइजीतजु वसतकहानवरंगभाय
मन टीका भागवतवेसवकोंनकोनगनत यसकोजु
वतीश्रजीतयराजराजरा म्हल हरा केसवदासमविचा
रकेंभिन्नपदारथआन उत्तरख्यालसमस्तमेंइयोगताजा

185A

गतजाति स या दासतिसोंपरसोंपरमांनकीवातसोंवातक
हाकहीयेनय आपुविषेंनसकोंकहीयेविनुकाहेभरथ
छितपालनकेछय रूपनकोउपदेसकहाकिहिंरूपमले
किहिनीतिनजेभय न्याइकेवोस्योकहाजूमकेसवकेप्र
हिमेदकीयोजनमेजय अर्थ केसवदासविचारिकेजत्र
तत्रऊह्नरलीजियेओरभिन्नअर्थपदकोंकरीये ननम
यनमेंसन्यायनययजनमेनवररूप नयनसवोलेजा
नहनयजहतहसद्अनूप रो छं कैसहकोंमधुह
न्योंप्रेमकिहपलविजप्रभुमन कहाकमलकोंगेहसन
नकिहिमोहेमरगगन कहावसतसुविसिद्धुकविनकोंनि

क वि
प्रि १८५
185

स म स ग न क म ऊ र रोकरोकत्तजिवरणिकोंजुगजु
गवर्णिवर्णि उत्तरव्यस्तगतागतहिरोएकसमस्तहिजोन य
कैहैरसकेसेलईलंककाहेपीतिपटहोनकेसोदासकोंनसोभी
येसभामेंजन मोगनकोमोगवत्तकोनगनेंमावावतजीते
कोजतीनकोंनहेप्रनाकेवरन कोनेंसभाकोनजुवतीश्र
जीतजगगावैकहाउनीकाहेमरैंहैंभुजेंगगन काहेमो
हैमगकहांकरैंतपीजपउंइजीत्यूवसतकहानवरंगमाय
मन टीका भागवतवेसवकोंनकोनगनत यसकोजु
वतीश्रजीतयराजराजरा म्हल हरा केसवदासविचा
रकैंभिन्नपरारपश्रान उत्तरव्यस्तसमस्तमेंइवोगताजा

125A

गतजानि स या दासतीसोप
हाकहीयेनय श्रापुविधेन
छितपालनके
किहिनीतनजे
हिमेरदकीयोज
ननऊनेरलीदि
यनमेंसन्या
नहनये

... मांनकीकानहाकानक
... येयि ...
... हेमरथ
... रूपमदे

... धामकिनिपाज कपनकि
... जहिलैकाहिराज रूल प्रको रव मी

क वि
प्रि १८६
186

गकिहिवरनतें किहिमेरोपितु मातु कह्योकविकेसवस
रवन अर्थ अर्थसुयोमेंउलटिकें पहलेंअक्षरआंन नवे
वररससरर वजुवनननवरससरवनजांन मसल सल म
सल ता त अक्षरअसससमसमैंइवेगताागतजानि ऐ
कहिअर्थसमस्तगतकेसवदासवषांनि सो ठा कंठ
वसतकोंसातकोंककहा वहुविधिकहे कोकहीयेसर
सातकोकामीहितसरातरस सगम स त तीनिती
निसासननिकोदकदकअक्षरजांने सासनअक्षरकहतहे
केसवदासवषांनि छ य चोंकचारुकरिक्रूपटास
चरियाखधिधर महितिमोलकरखगायोलिसिंचह

186A

निचोलवर रहैकुरावदैसरकुरावमनगाजरंकको जो
निमाजसिवधांमधाजधनल्माजरंकको रहकहतमधकर
साहिकेंरहोंसकलरीमानदवि नवऊज्जरकेसवरासदि
चचरीनपान्योजानुकवि गर्ष चरीमहरानचटचरीस
धनजिअरयारा पानिआवअरपानकरियानिनीरचह
धारि १ रहकुरावनहिजांनुअचदैसरनहिनसजांनु
अरुकुरावमेरकमनकहोंनजांनुअजानु वाती रंकके
कहुरावपरेगोगाकोमर्कहीकहेकिनजानहेंअजानुहें
जानिभावनहिकविकछूसवेधांमकिनिधाज कपनविहे
गनिसमनगडदतिजिहिलैकहिराज मूल प्रश्नो रव नी

कवि
१८७
187

तेईआवरप्रस्नके जेईउत्तरजानि इहीविधिप्रस्नोत्तरसदाके
हेंसुबुधिनिधान यथा कोदंडग्राहीसुभटकोकुमाररतिवं
त कोकहीयेसहितेंडयीकोमलमनकोसंत ७१ अर्थ कोहें
दंडग्राहीसुभट अ र कोदंडग्राहीधनुषधारीकोकुमार र
तिवंत अ र कोकुमेंमाररहेरतिवंत कोकहीयेसंमितेंइथी
अ र कोकहीयेमेंइथीहें कोमलमनकोहेसंत अ र को
मलमनकोसंतहोहे मूल ति कालिकाहि एजोअलीके
कलकंठेहिनीक कोकहीएकामीसदाकालीकहिलीक स
धे किसकोकजाकेहियेकालीस्याह [illegible] लीकस्याहकहाहे
लीक अ र कालीस्याहकीहेकीनोहेऐकलीकअसपजसनांई

187A

मूल छप्पै नाथि नाग जथा सूधो अलटो वाचीये तो कहि
अर्थप्रमान सु कहित नगनागनतनाहि क कि के सब दास सुजान स
या या मास मनमोहन सजे वन वीन नवीन बजे सह लोमसमा मा
दलता नवनाव नसार रसाज नवना व नमालरमा मानवहीरहिमो
रदमोदद मोदरमोहिरहीवनमा मालवनीवलिके सवदाहि
सदावसिकेलवनीवलमा अर्थ इक नैन सखी काहूं नाय
कासौं कहत है कै सौं नौ यकामाजु है लल मीना के समान है सो
ह कहिये सोहि वी है जाको अरु सजे है देखि वीनन वीन कों
के सो है वीन जो बजे है सु कहिये मिल्यो सामक प्रमन्ता समक्ष
सो मार ललनाजु है रह कों मललता सो नवनावता सार कहा गोट

नहीवनावन रसअतिकीवनावनीहै तात्पर्यकीमोरव
नावनमेंभुजाकरअैसीसोभालागतिहै सोरसजात्यपन्न
करतिहैं अरुवीनमेंतानसरमिरंजौहै मानवहीरवहा
मन्दवनमेंहीरानगअैसो जुनायकातिहिंदमोदसो
कोंननायकरमोदरनाहिमोहिरहीहैवनमांहि औररह
हनायकाकेसीहैमालवनीहैं वसिमालावनीहैहैपिय
कंठमें काहेतेंमदावसहैंजोके केलिवनीमेंवनमाला
केंकदलीकीवनीमें अतिरुचिरसोरहतिहैं अर्थकितुहू
धीजमकोरिझावतिहैं मूल तिय नाग जलटोसूधो
वायओरेओरेंअर्थ ऐकवैयामेंसकविप्रचारहिसोर

188A

समर्थ यया वैया सेंननमाधवज्योंसरकेसवरेबसुदेस
सुवेससवे नैंनवकीतचिजीतरुनी रुचिचीरसवेनिमिका
लफलें जेनसुनीजसभारभरीघरधीर वरीतिसुकोनक
हे मेनमनीगुरचालुचलेसुभसोवनमेंसरसीवलमें अ
ष ती काहुनायकाकीस्तुतिसखीकरतिहे केसीहेरहसेंन
मिमाधवज्योंसरपाकीसेंनजुहेंतेसेंनेंनहीमाधवको ज्योंती
होहित्योंलगतीहें केसीहेरेखजोकेदसननकोसुदेसनीकीहे अ
रुमलेवेसकोधरेहेसवे अरुनेनोंमें अवकीहेजिन्होंतेंनची
जोमेनतरुनी कहादेषिकेकुही ओररुचिचीसोमोहेंसव
वसुनिमेंजाकेयाजेनमिकहानयकेअरुकालफसे काल

कवि
प्रि १८९
189

फमलीनतालेकेतचीतेंनही सुनिइहजनसमारसोभमरीहें धरधी
रवरी धरिकें धीरअवरीजैसीकों नहींहेमेनमदसोंगुरुचासचले
हे देखिसु मसों नाइकाकहावनमेंजहांसरकीसीवसेहे दूजो
याही वैया नीचे पही मान तासेलवसीरसमेनवसोंम
सेलगोवर्द्धनजहांवसीहें रसमपनवसोंभासोतातहांलेअव
चलरहवातसंदररविचारीहेमनमेंमैंनेहेकनकोसकेकोसको
कनमात्रहेतहांहे अरतिरीतेअवरीवरधीरजोनाइकावि
नधरीहें भरसोभाकहीयेसोभाहे सजनीसुमिंतहुलेफ
लकांमेंनवेसरकीकोंचिरतांईहेनिरतअवोलीनांहीहे
समसह्वाजांकेजीसोचितमेंकीअवनहीनेंनमरतातेन

वैसजिनकीसडवेसम्प्ररनीकीवरेहेंतेअहांतिनकोव
सकरम्यौरसम्प्ररवधरूपीजुहेंसोनजाकोनसा
सारकेचलअहो रहलिह्यानहे मेल दो रा
इंद्रजीतसंगीतलेभएरांमरसलीन हरइगीत
संगीतलेभएकामवसदीन अर्थ इंद्रजीतस
गीतकीलेसोरांमकेरसमेंलीनभये अरहइ
हेगीतजिनकेकहेहरइगयाहे जिनकोस
नकीलेसोयाहीतेंरामकेहाएजेकामकेसेमेंम
रेगोमत्रिका अस्वगति त्रियदी कपा

२ वंधऐकहीदोहामेचार्‍योचित्रहे

गोमूत्रका

इं	द्र	जी	त	सं	गी	त	लें	म	ये	रं	म	र	स	ली	न
हु	द्र	गी	त	सं	गी	त	ले	म	ऐ	रं	म	व	स	ही	न

चरनगुप्तयाहीनामविपरी

इं	जी	सं	ज	म	रा	र	ली
द्र	त	गी	ले	ऐ	म	स	नी
हु	गी	सं	त	म	का	व	ही

190A

अथत्रिविधत्रिपदी

रां	दे	न	दे	ग	प	स	ने	म	धा	=॥=
म	व	र	व	ति	र	ध	न	द	रि	=॥=
वां	दे	गु	दे	ग	पं	कु	र	ह	धा	॥=॥

मूल ॥=॥=॥ द्वितीयत्रिपदी ॥=॥=॥=॥

रांमदेवनरदे
रनमदधारि॥
देवगजिपरकु
रि॥ ८६॥ टीका

राम	वन	देव	तिप	सध	नह	धा
दे	र	ग	र	र	द	रि
वाम	वगु	देव	जिय	कुप	नह	धा

वगतिपरसध
वामदेवगुरू
धरनहदधा
श्रीरांमजूको

वर्ण ॥ रांमदेवके सहेंग = त्रितीयत्रिपदी ॥ = ॥ नरदेवकीगतिहें
परसधरहेंनमदकौ

रांम	नर	गति	सध	मद
देव	देव	पर	रन	धारि
वाम	गुरु	गति	कुप	हद

हराईहें ॥ गुरूहेंहे
केघरनहें ॥ मार्यो

धरेंहेंवामदेवव
गतपहें ॥ कुप्रधी
दाकेघरनेहें ॥

10

191A

रा	जति श्रं	ग	रसवि	र
स	श्रुतिस	र	ससर	स
र	जिभेद	प	गपग	प्र
ति	दुतिव	ट	तिगति	वं
य	ननय	न	मतिदे	व
स	वरन	व	रनस	स
व	रनन	र	चिजेर	वि
र	रुचिली	ने	जेनमे	न
प्र	यटन	वी	नगति	म

१९१

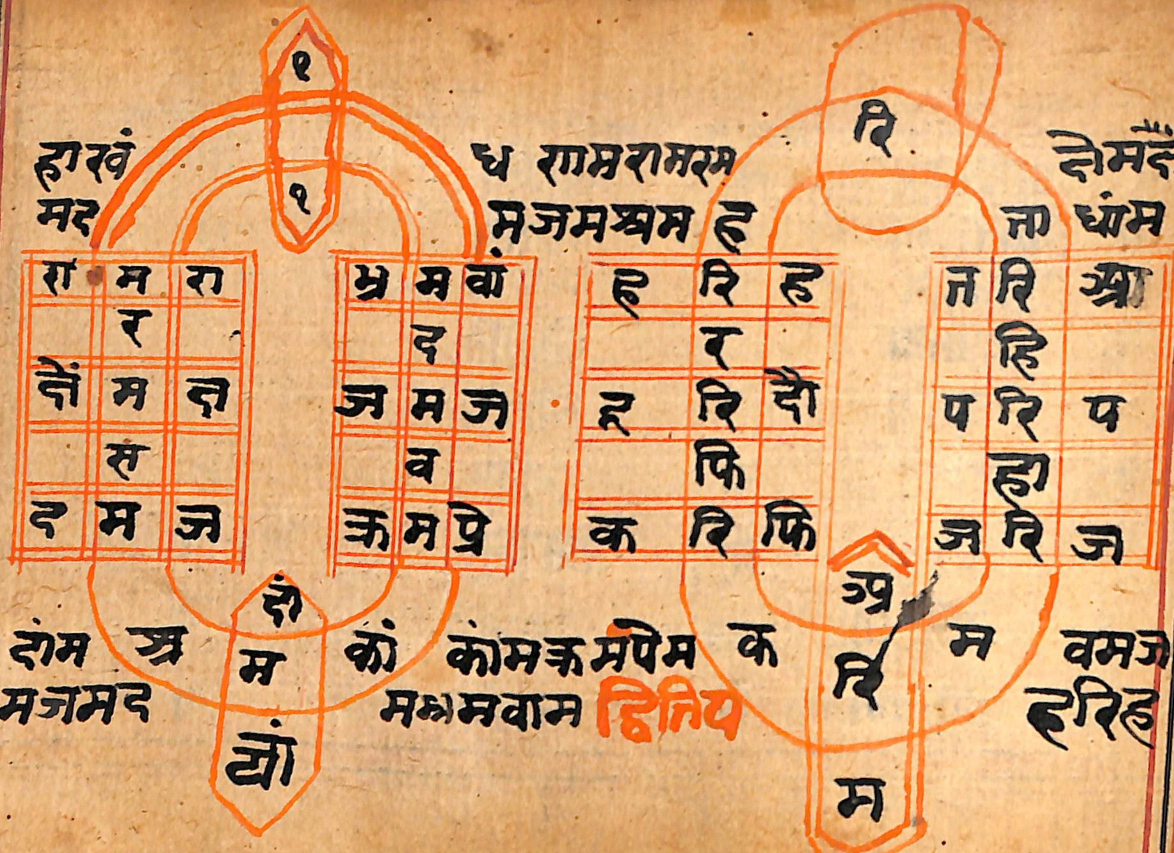
191

191A

...केसवसनेपुरान
...स्नेनतश्र

रा	जति श्र	ग	रसवि	
स	श्रुतिस			
र	तिमेद	र		
ति	द्रुतिव	प	ससर	र
य	नेन[illegible]	ह	गवग	
स	व[illegible]			स
व				

कवि
प्रि १५२
192


१
१
हाखं
मद
ध रामरामरम
मजमम्रम ह
द्वेमसैं
जा धांम
रा म रा
र
वें म ल
स
द म ज
भ्र म वां
द
ज म ज
व
क्र म प्र
ह रि ह
र
ह्र रि दौ
फि
क रि फि
त रि श्रा
हि
प रि प
हा
ज रि ज
दो
म
वों
दोम श्र
कों कामक्रमपेम क
मजमद
मभ्रमवाम
द्वितिय
श्र
रि
म
म वमज
हरिह

192A

रिहरिररिदोरिदृरिपिरिपिरिकरिकरिआरि मरिमरिज
रिजरिहारियरिपरिहरिअरित्तरिनारि

राका राजजरा कारामासभासमासमा राधामीत्तमीधारसा
लहीसुसुसीलही अर्थ राकाजुहेपूरणिमा
सोहे राजवाकोंजराकारहे जरासीडुवद
हें मासमासकीवरावरिहे राधामीतअ
रु तमीजुहेतेऊ राधासोहेयेंनीबहुहीवासु
सीलसी कोंसुसीलसीहेसोभाजांको ॥१॥

रा	का	रा	ज
मा	स	मा	स
रा	धा	मी	त
सी	ल	सी	सु

कवि
प्रि १९३
193

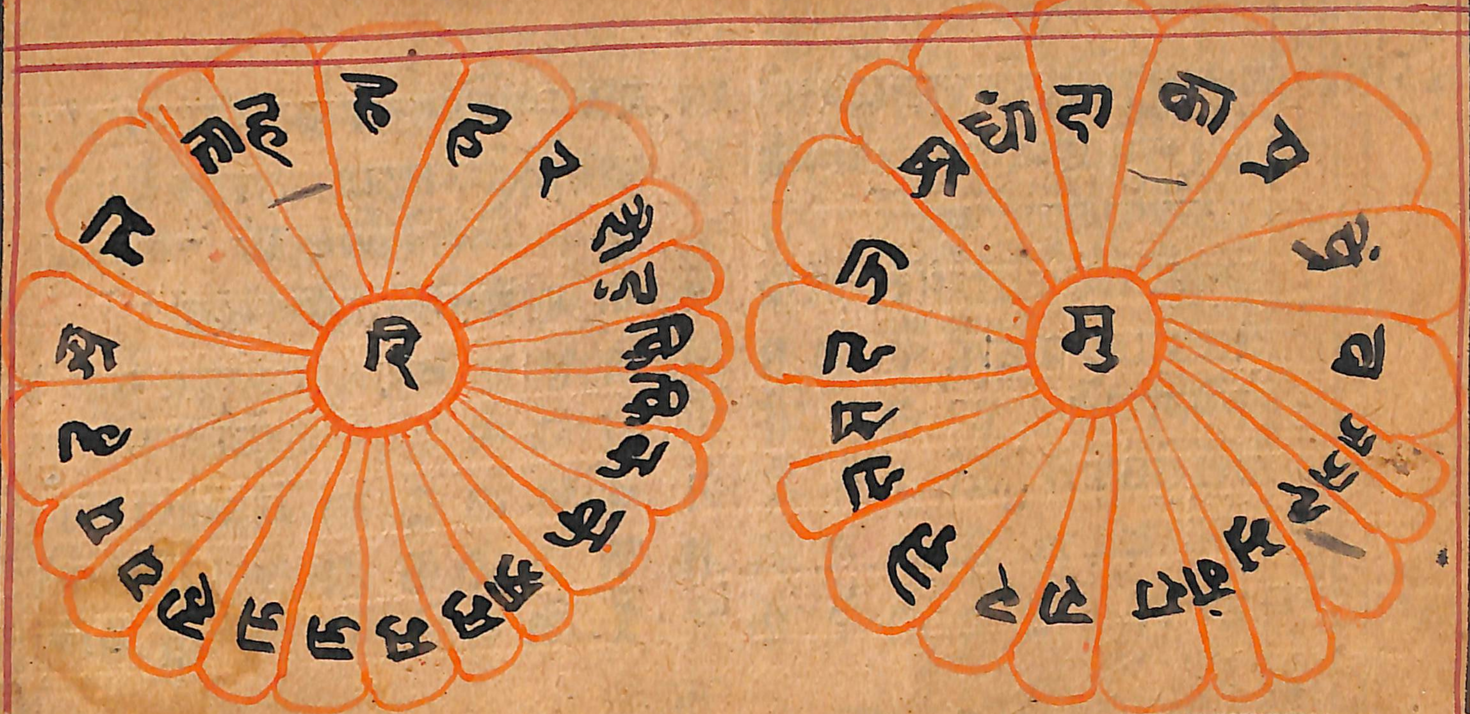


१९२

नरसरवश्रीस दाजनम नसरस रुस्वसकरन
नरकसि वरसुसकलसु बड़ुवहीनजीवनमरन
नरमनवजीन हीनिर द यसर यमतिमांहर
न नरहतमतिमैंजमतकेस वै दासश्रीवरसर
न टीका जेश्रीवरकीसरनहें जैकेसें हें
हैंनरसर्वश्रीसदांहें जिनकेतनमनसहित
रसहें सरनकोंवस करत हैं अरनर

कइंद्रीनकेसगरससुषदुषकरिहीनहें
अरजीवनमरनतेंछूटेहें मरम
कोमलनवीनताहें ॥ जोमेंसदयमत्ति
राषैहैं मत्तताकेहरनवारे हें नहीरह्यो
हेतमाजिनमें तैसेंजागतहें कसवदा
सफहेंहें जेश्रीवरसरनहें तेऐसे है

194A



॥ कवि प्रि १९५ ॥

195

र वंधकोईयाकोछत्रवंभीकहितहैं

यामयरागेसुनोहितचोरसी काममनोहरहेंश्रमया॥ मीतश्र

मीतनकौंदुषदेतदयालक हावतिहीनदया॥ सत्रुकहोंकहा

रूठमेंपावतिदेषोंवेई जिनरेषीकया॥ यामयरागे

सुममीतसवैससवैस तमीमनगेयमया॥ टीका

॥ वंदितानायकाके वचनयामयरागेसुनौ

याकेमयहो यकेरागेहोपगेहोस

वैससोजा गतमीरात्रमेंम

नग येतुमारे

म याके



कहामयाछत्र डि द ई॥ इतिमहारवंध ॥=॥

195A

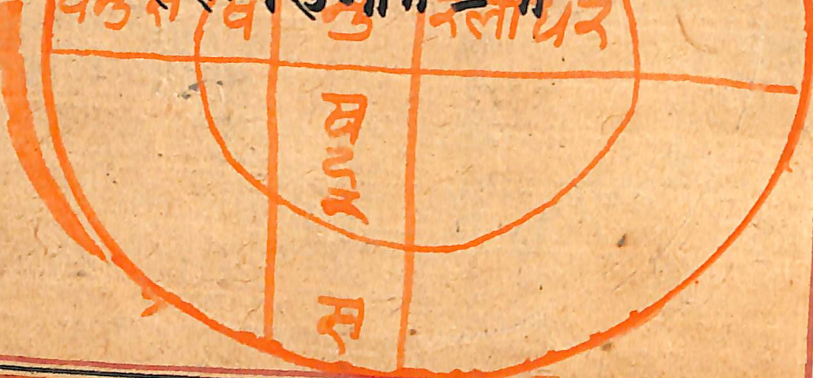


परमधर्महरिहेरहीकेसवसलनेपुरान
मनमनजानेंनारहेजियजसलनेतन्आ
न १ टी परमधर्मेंहरिहीहैहेरित
हियमेंयावातकोमनमें
नारदहीजानेहैं जिय
सांप्रानकेजसकोंनहीस
नत

चक्रबंध



॥ मुरलीयरमुषदरसिमुषसंमुषमुषश्रीरा
म ॥ सुनिसारसनैनीसिषैजहसुषपूरन।
कांम टीका मुरलीयरकोमुषदेषिअरु
मुषकेसंमुषमुषहैं श्रीवलदेवजूकोसौं।
दैषियहसीषसुनी ॥ ॥



196A

अथचित्रविधात्रपदायधा

रा	दे	न	दे	ग	प	स	र	म	धा
म	व	र	व	जि	र	ध	न	द	रि
वा	दे	गु	दे	ग	प	कु	र	ह	धा

मूल रांमदेवनरदेव॥=॥ दाली य अपदी ॥=॥गतिपरसधरनम

वामदे

दधारि॥ वगुरु जिपर

राम	वन	देव	जिय	सध	नह
दे	र	ग	द	र	द
वाम	वगु	देव	जिय	कुध	नह

देवग कुधर [illegible] रि॥ दि॥

नहदध

रांम	नर	गति	सध	मद
देव	देव	पर	रन	धारि
वाम	गुरू	गति	कुध	हद

टीका॥ श्रीरांमजूको रांमदेवकेस

वर्णन॥ हे॥ नरदेवनकीगतिहै परसधहैंनमदकोंधरेंहैं॥ वामदेवव

हराईहै गुरूहहै कुपथीकेधरनहैं मार्यादाकेरनहैं

सवतोभद्रचक्र



197

१५८

मूल मुषकोमंअरेंतनलाजमरेमतिजानिलियेंतवप्रांनदहैंवानिवियैंन
विगनसाजकरेंरतिधनराजहरें गतिमानिग । । ॥
मूल· मुषकोमअरेंतनलाजमरेमतिजानिलियेंतवप्रान
दहे दुषवांमवरें गजसाजकरेंरतिवानिवियेनवमानगहे॥
रूषधामधरेधनराजहरेंगतिमानिवियेकवमानरहेहैंराम
ररेंमनकामसरेंआतिहोनिहियेंसवआनिकहेमुष ८०
पुनः वामवरेंगनसाजकरेंअवकानकीयेपतिप्रानदहेदुष॥
धामधरेधनराजहरेतवमोनवीयेमनदानलदेरूष ८०

काव

198

१९८ वार्ता रामररंतौमनकाजसरे औरअतिहानिहियेहोइसवजोआ
नंदहेसवधर्मविन जगदुषमयहेइहकहतहें कवहूंतोकांम
आरें तनमेंलाजमरिवोहै मनिमेजोप्रकासहोइतोआनंदुषपा
वें वामजोवरेंअहसाजकेपुंजकरे प्रीतिकीवानिसोअहसांनप
करै रूपसोतोराजाधामधरे धनहरेंइहमानतंजियमें कन्यादर
औरसवधरहैयांतेरामररेंहीभलीहै मूल रामदेवचितचाहि धाम
सेवतिनितताहि वामदेवमितदाहि कांमभेवविनपाहि पुनःका
मदेवविनजाहि वामदेवमितदाहि रामदेवचित्तचाहि धामदेवनि
तताहि २ अर्थ रामदेवचितधरकामनाकेभेवदे जामेंश्रेसेवि
नकीरताकरि औरपदसुगमहै ॥१॥

गण	स्वामी	फल	जन्मनुतिथ्यादि	जन्मनक्षत्र	जन्मस्वभाव	कुल	कालदेश	मधुदेश	आश्रम	गलवान	शिखर
मगण	भूमिदेवता	लक्ष्मीप्राप्तिः	२० मंग	रोहिणी	शान्ति	रुद्र	मिश्रवर्ण	जालंधर	आकाशपुरी	शैलाधिपति	कामरूपन
यगण	जलदेवता	पुत्रप्राप्ति	११ शुक्र	ज्येष्ठा	सोम	वैस	कृष्णवर्ण	कौशल	विपुलावती	वंशकेवर्त	अग्नि
रगण	अग्निदेवता	विरोधफल	९ शनि	अश्लेषानी	रवि	लक्ष्मी	रक्तवर्ण	महेन्द्र	मकरंदपुरी	मलयगिरि	कासी
सगण	वायुदेवता	देशाटन	६ बुध	पूर्वाभाद्रपद	वधु	वैस्य	नीलवर्ण	विडंबर	केकेरपुरी	सेतुबंधपर्वत	कोसक
तगण	आकाशदेवता	धननाश	३ राहु	रेवती	सोम	शोभ	धूम्रवर्ण	कुंज	चंद्रावती	कर्णगिरि	जोतमन
जगण	सूर्यदेवता	माधकर	५ सूर्य	श्रवण	शुक्र	हस्त	रक्तवर्ण	प्रबल	विचित्रावती	उदयगिरि	[illegible]
भगण	चंद्रमादेवता	जयप्राप्तिः	१२ इंदु	रेवती	गुरु	देव	श्वेतवर्ण	शुकल	प्रभावती	हिमारगिरि	[illegible]
नगण	स्वर्गदेवता	आयुप्राप्तिः	० गुरु	अनुराधा	बुद्ध	हरश्री	कपिलवर्ण	क्रोध	कांतीनगरी	चंद्रपर्वत	[illegible]
१	२	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

Z 192

कवि
प्रि २००

दोहरा सुवरणजटितपदारथनिभूषनभूषितमानि कविप्रि
याहेकविप्रियाकविसंजीवनजानि ९ पलपऽप्रतिअवलो
किबोसुतिबोगुनिबोचित्त कविप्रियापैरत्तियोकविप्रियाजेो
मित्त ९३ अनलअनिलजलमलिनतेंविकटपलनतेंनित
कविप्रियायाप्रारत्तियोकवियोमित्त ९० केसवसोरहभावसु
भसुवरनमयसुकमार कविप्रियाकेजानिजुहुसोरहिंही
सिंगार ९५ सु म सहजरांमहकृतचंद्रिकासमांन ताके
तेंहीसंसयत्तिमरप्रतिदिनकरतपियांन ९६ इतिश्रीनाज
जरसाहजरांमविरचितायांकविप्रियाटीकायांसहजरांमचं

॥२००॥

१९८